Chapter-3

तृतीय अध्याय	**कहानी साहित्य**
	वस्तु, चरित्र, समस्या, देशकाल तथा समाज-चित्रण,
	भाषा-शैली, उद्देश्य तथा निष्कर्ष ।

कहानी साहित्य

गोविन्द मिश्र की कहानी – यात्रा :

गोविन्द मिश्र जब 1956 में इण्टर कक्षा में पढ़ते थे, तभी इन्होंने लगभग तीन कहानियाँ – "पर मेरे आराध्य न आये", "पूर्णमासी का भोग" और "चन्दनिया अरज करे" लिखी थीं, फिर बी0ए0 की कक्षा में पढ़ते समय छात्रावास से प्रकाशित होने वाली पत्रिका के लिए एक कहानी लिखी गयी । तत्पश्चात् 1959 में एम0ए0 अंग्रेजी साहित्य से किया और दो वर्ष तक (1959–1961) प्राध्यापक रह कर 1961 में ही राजकीय सेवा (भारतीय राजस्व विभाग) में अधिकारी के पद पर नियुक्त हो गये, किन्तु लेखन का सिलसिला जारी रहा और 1963 से कहानी लेखन का कार्य सुचारू रूप से चल पड़ा । सन् 1963 में जब मिश्र जी धनबाद में सेवारत थे तो वहां कुछ गोष्ठियों का सिलसिला शुरू हुआ । तभी 1965 में "माध्यम" पत्रिका में इनकी पहली कहानी "नये पुराने माँ–बाप" छपी । श्री गंगा प्रसाद से हुई वार्ता में गोविन्द मिश्र स्वीकार करते हैं कि कहानी लिखने के लिए कोई न कोई प्रेरक तत्व अवश्य होता है । वे कहते हैं –

"आदमी जो कुछ करता है उसके पीछे कुछ दवाब होते ही हैं । मेरे साथ ही जरूर रहे होंगे जो लिखने के लिए प्रेरक बने । अपने व्यक्तिगत दर्द को किसी बृहत्तर सन्दर्भ में देखने की बैचेनी स्वंय और अपने संसार को महसूसने–समझने की ललक, अतीत को उद्‌घाट्‌त करने की कसक जैसी कई बातें रही होंगी । मिली–जुली । उस समय का तो छोड़िये, आज भी इस बात का ठीक–ठीक उत्तर नहीं दे पाऊँगा कि क्यों लिखता हूँ और शायद मैं ही क्या, अब तक कोई भी लेखक नहीं दे सका है इसका जवाब । मेरा ख्याल है कि हर लेखक आजीवन इस सवाल का जवाब ढूंढ़ने में लगा रहा है जो जवाब दिये जाते हैं

वे अक्सर ईमानदार नहीं होते, या फिर अपनी सही समझ से उपजे हुए ।[1] जहाँ तक प्रकाशित रचनाओं का सवाल है, 65 से अब तक आठ कहानी संग्रह तथा कई अन्य कहानी संकलन प्रकाशित हो चुके हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं :–

1. रगड़ खाती आत्महत्याएं
2. "नये – पुराने माँ–बाप"
3. "अन्तःपुर"
4. "धाँसू"
5. "खुद के खिलाफ"
6. "खाक इतिहास"
7. "पगला बाबा"
8. आसमान कितना नीला

अन्य संकलन

1. मेरी प्रिय कहानियाँ
2. अपाहिज (लम्बी कहानियाँ)
3. स्थितियाँ रेखांकित (साठ साल के बाद की कहानियों का संकलन)
4. प्रतिनिधि कहानियाँ
5. गोविन्द मिश्र की प्रतिनिधि कहानियाँ–शैलेश मटियानी

गोविन्द मिश्र की कहानियों में वस्तु–विवेचन :

कहानी एक ऐसी विद्या है जो मनुष्य के दैनिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करती है । गोविन्द मिश्र भी इसी बात को मानते हैं कि "कहानी तो आप हर जगह और रोज देखते हैं । लेखक भी दूसरे व्यक्तियों की तरह एक तरफ अपना जीवन जीता है और

---

1. लेखक की जमीन – पृ0 49.

दूसरी तरफ वह लिखताभी है उसी दौरान आपको कहीं कोई चीज कौंध जाती है । कोई तकलीफ जो एकाएक आपको सुई की तरह चुभ गई या कोई नया नजरिया जो आपने देख लिया, जो किसी नये मूल्य से या पुराने मूल्य को नये तरीके से पेश करने में आता है, वह आपके साथ लग जाता है ।[1]

इस कथन में यह सार (तत्व) प्रतिबिम्बित हो रहा है कि दैनिक जीवन की घटनाएँ भी कहानी का वस्तु–तत्व बन सकती हैं । लेखक भी तो सर्वप्रथम मनुष्य है किन्तु मनुष्य होने के कारण ही लेखक में संवेदना कुछ अधिक होती है । इसी संवेदना के वशीभूत होकर लेखक लिखने की ओर प्रवृत्त होता है और तदनुसार ही वह वस्तु की प्रयोजना करता है । गोविन्द मिश्र की कहानी–यात्रा में चेतना और वस्तु के द्वन्द्व की टकराहट दृष्टिगत नहीं होती है ।

आदमी की पकड़ में जो कुछ आ जाये, "वस्तु" हो जाना उसकी नियति है फिर वह आत्मा, परमात्मा या परा–अपराचेतना ही क्यों न हो, क्योंकि अस्तित्व, किसी भी रूप में किसी वस्तु का ही हो सकता है । इसलिए मनुष्य के विषय में गुणात्मकता की दृष्टि से देखा जाये, तो वस्तुवाद, दरअसल, अस्तित्ववाद का ही दूसरा पक्ष सिद्ध हो सकता है, क्यों कि अस्तित्व स्वंय एक वस्तु ही है । बाह्य जगत हो या कि मनोजगत, दोनों में से किसी का भी जितना हिस्सा आदमी की मकड़ में आ जाये, वह वस्तु के सिवा कुछ नहीं ।

गोविन्द मिश्र का कथा–लेखन बड़ी संभावनाओं की झलक दे रहा है, इसमें वे कलावाद और वस्तुवाद के खतरे से बचे दिखाई देते हैं । इसमें शायद सबसे बड़ा हिस्सा उनकी संवेदना को उस बनावट का है जिसके बारे में यह कहने में संकोच नहीं, उनमें ही प्रेमचन्द याद आते हैं ।

---

1. लेखक की जमीन – पृ0 84.

1. रगड़ खाती आत्महत्याएं :

मिश्रजीकी कहानियों का यह संग्रह 1978 में प्रथम बार प्रकाशित हुआ था । इस संग्रह में 18 कहानियाँ संकलित हैं । लेखक ने इन्हें अधकचरी कहानियाँ बताया है और उन्हें भी इन कहानियों के लिखने से कोई संतोष प्राप्त तो नहीं हुआ, किन्तु शुरूआती कहानियाँ होने के कारण इनसे लगाव तो रहा ही । दृष्टव्य है लेखक मिश्र जी का कथन "मेरे लेखकीय जीवन के शुरू के हिस्से की कहानियाँ हैं ये ।

अक्सर लेखक भी प्रारम्भिक कहानियाँ खो जाती हैं । लेखक स्वंय आगे चलकर उनसे कतराता है, उन्हें प्रकाश में लाते समय अपनी प्रतिष्ठा पर आँच आने का अंदेशा रहता है । आज यह साफ दिखाई देता है कि जब ये अधकचरी कहानियाँ लिखी गयीं .... ठीक उसी समय हिन्दी में बहुत बेहतर कहानियाँ लिखी जा रही थीं ।

इस संग्रह की मुख्य कहानियाँ हैं – हिल्ते हुए, उपेक्षित, साजिश, हाजरी, एक सड़क दो तस्वीरें, जंग, रोता और ख्वाब देखता, मुन्ना, ठहराव की ईट, माध्यम का सुख, चिलमन और धुँआ, यक्षिणीका पत्र–यक्ष के नाम, कुत्ते, फर्क, मजबूरियों के बुत, चौखटे, खंडहर की प्यास, एक कटी–छंटी अंगड़ाई और रगड़ खाती आत्महत्याएँ –

मिश्र जी ने अपने कहानी – संग्रह का नामकरण उस संकलन की अन्तिम कहानी के आधार पर ही किया है । लेखक ने इस कहानी संग्रह में कोई ऐसा तत्व नहीं रखा है जो मुख्य रूप से पाठक को प्रभावित कर सके । सभी कहानियों में लगभग श्रृंगार पक्ष वह भी संयोग श्रृंगार का अधिक वर्णन हुआ है किन्तु कहानी का अन्त करूणा लिए हुए है । मद्यपान को खुले रूप में उभारा गया है । इस वर्णन से ऐसा लगता है कि मिश्र ने जहाँ सामाजिक व्यवहार पर कटुव्यंग्य करना चाहा है, वहीं वे कहानी कला की उस वस्तु को स्थान नहीं दे सके हैं जो कहानी क लिए आवश्यक है और पाठकों को भी भली–भाँति प्रभावित कर सके । मिश्र जी ने स्वंय कुछ–कुछ ऐसा ही स्वीकार किया है, यथा–

"मेरे लेखकीय जीवन के शुरू के हिस्से की कहानियाँ हैं ये ।" ...... किसी लेखक की शुरू की कहानियाँ उसकी लेखकीय यात्रा का एक मजेदार अध्ययन पेश कर सकती है .... रचना शीलता किन–किन ढूहों, गड्डों, पत्थरों से टकराती हुई कहाँ–कहाँ मुँह मारती हुई कहाँ निकलती है, बिल्कुल एक आवारा धारा की तरह ।

अजीब–सा लगता रहा इन कहानियों से फिर गुजरते हुए । इतना जानता हूँ कि आज कोशिश करके भी ऐसी कहानियाँ नहीं लिखा पाऊँगा । वह रफ्तार कितनी तेज थी – पैशन बलबल करके झरती चली जाती, अल्हड़ता क्राफ्ट की ऐसी तैसी करती हुई कुछ भी लिखती चली जाती .... हर पात्र और स्थितियों में भावनाएँ ही भावनाएँ, नंगी भावनाएं, आदमी के दहाड़ मारकर रोने जैसी ।"[1]

अस्त स्पष्ट हो रहा है कि मद्यपान और श्रृंगारिक्ता की नग्न भावनाएँ ही इन कहानियों में उभर रही हैं ।

"हिल्गे हुए" की वस्तु कुछ अटपटी सी और बे–बुनियाद सी लगती है । पात्रों का नाम कहीं नहीं खुला है सिवा "वह" "यह" "मैं" और "उसकी पत्नी" के । इस कहानी में एक "कर्मचारी" को लेकर उसके कार्य विवरण, प्रारम्भ में आई0ए0एस0 अधिकारी बनने का स्वप्न, पुनः होली का रंग–गुलाल का त्यौहार, फिर एक दिन उसका देर तक भी घर न पहुंचना और किसी सड़क दुर्घटना की आशंका व्यक्त करना और देर रात में घर पहुंचना जैसी घटनाएँ चित्रित हैं ।

"उपेक्षित" कहानी में भी कोई स्पष्ट पात्र नहीं है, अतः यह कहानी भी "यह" "वह" "मैं " और "उसकी पत्नी" के नाम पर चल रही है । कहानी के आरम्भ में ही एक ग्रामीण औरत वियर विह्स्की लेती है और "वह" चाय बनाकर पिलाती है । "मैं" को उसके

---

1. रगड़ खाती आत्म हत्याएँ – गोविन्द मिश्र – भूमिका से ।

प्रति कुछ आकर्षण होता है । वे तीनों एक दिन एक पहाड़ी नदी के डाक बंगले पर घूमने जाते हैं वहाँ मद्यपान होता है । "वह" काफी शराब पी लेता है और बेहोश हो जाता है । "पत्नी" उसकी इस आदत पर कहती है – "हाँ ज्यादा फिकर करना भी ठीक नहीं ..... कौन कहता कि ज्यादा फिकर करने से पति लोग बिगड़ जाते हैं .... हम उसके पति की एकदम उपेक्षाकर सकते थे । यही कहानी का सार है ।

"साजिश" सरला नामकी स्त्री की कहानी है, जिसका पति गीतानाम की किसी अन्य स्त्री से भी प्यार करता है । घटना दुर्गापुर की है । वहां से सरला के पति का स्थानान्तरण माइथन हो जाता है । बच्चा होने पर पति–पत्नी में मतभेद पैदा हो जाते हैं । सरला को अपनी सास के व्यवहार से चिढ़ है । पति की बहन की शादी में शामिल नहीं होती है । बच्ची को ज्योन्डिस (पीलिया) हो गया था और उसी बीमारी में वह मर जाती है तो सरला दुःखी होती है । सरला और उसका पति बच्ची की मृत्यु पर अपनी लापरवाही को अपनी बहुत बड़ी साजिश मानते हैं ।

"हाजिरी" कहानी में कोयले की खान में काम करने वाले लोखा और कीली की कहानी है । दोनों के प्रेम कहानी है । कीली का पिता मर चुका है वह भी खान में नौकरी करती है । सत्रह वर्ष बाद लोखा ने कुछ पढ़ना सीख लिया है और वह अग्रवाल कोलियरी में क्लर्क हो गया है और हाजिरी लगाता है । कीली को खान का मैनेजर बहकाकर ले जाता है उसके गर्भवती होने पर वह उसे तलाक देकर विदेश चला जाता है कीली उसी खाने में काम करने और अपनी हाजिरी लगवाने आती है तो लोखा उसे पहचान कर और उसकी व्यथा–कथा सुनकर दुखी होता है । और लोखा उसे सहारा देना चाहता है ।

"एक सड़क दो तस्वीरे" कहानी में छात्र–जीवन की प्रेम कहानी वर्णित है । वर्मा, मंजू और अन्य छात्रा इसके केन्द्र हैं । वर्मा और मंजू साथ–साथ घूमते और पढ़ते हैं। मंजू वोमेंस हास्टल में रहती है । मंजू की जीवन–शैली स्वतंत्र विचारधारा वाली है । इसी

बीच अन्य छात्रा का परिचय वर्मा से मंजू कराती है । वह नये विचारों की नई नारी पर लेख लिखती और भाषण देती है, छात्र संघ की सचिव (यूनियन की सेक्रेटरी) थी । वह स्त्री स्वतंत्रता की पक्षधर थी । वह एम0ए0 की परीक्षा नहीं दे पाती है । बाईस वर्ष के अन्तराल बाद आज वह वोमेंस हास्टल का चबूतरा झाड़ती हुई अधेड़ हो चली है और वर्मा उसे एक दिन अचानक देखकर सन्न रह जाता है, उसे बातें करता है – "पर मैं देखता रह गया राख हुई एक परी को, थकान की एक मूर्ति को जिसे शाम के अंधेरे ने आकर ढक लिया हो .[1]......

इस प्रकार वर्माजी एक सड़क हैं और वह तथा मंजू दो तस्वीरें हैं, जो इस कहानी की वस्तु प्रस्तुत की गई है ।

"जंग" कहानी में एक बीमार और मंगली कन्या के जीवन की घटना है और "मैं " पात्र उसकी सहायता करता है । वैवाहिक जीवन भी दु:खमय बीतता है ।

"रोता और ख्वाब देखता मुन्ना" कहानी में आज के भारत की बढ़ती जनसंख्या, महंगाई और बढ़ते खर्च का वर्णन है । एक साधारण लिपिक, जिसके ऊपर एक गृहस्थी जिसमें बूँढ़ी माँ, दो छोटे भाई–बहन और पति–पत्नी हैं, का खर्च चलाने में बड़ा कष्ट उठा रहा है । वह क्लर्क उपस्थिति लगाते समय प्रत्येक कर्मचारी से एक रूपया अतिरिक्त लेता है, इसलिए अधिकारी की सूची में वह भ्रष्ट (करप्ट) है इसी कारण उसकी वरिष्ठता (सीनियोरिटी) और प्रोन्नति रूकी हुई है । नलिनी पत्नी है । उस क्लर्क के बड़े–बड़े स्वप्न हैं कि मैं भी एक बड़ा आदमी बन जाऊँ । किन्तु विषम और भंयकर परिस्थितियाँ उसके स्वप्न को भंग कर देती है ।

"ठहराव की ईट" कहानी में विश्वविद्यालयी जीवन के दो युवा छात्र–छात्राओं के गहन परिचय और फिर भविष्य में उनके ठहरे हुए जीवन की घटना है । मि0 वर्मा आगे चलकर पी–एच0डी0 कर लैक्चरर बन जाता है और उसकी सहपाठिन कु0 प्रीति का विवाह

---

1. एक सड़क दो तस्वीरें – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ – 39

हो जाता है और वह प्रीति श्रीवास्तव कहलाती है । एक बार प्रीति श्रीवास्तव लगभग 36 साल की आयु में एम0ए0 अंग्रेजी साहित्य लेकर विश्वविद्यालय में प्रवेश लेना चाहती है, जिसका साक्षात्कार डॉ0 अविनाश वर्मा ले रहे हैं । वहाँ प्रीति और मि0 वर्मा की पुनः भेंट होती है और ज्ञात होता है कि वह अब विधवा हो चुकी है, दो बच्चे भी हैं और किसी नौकरी की इच्छा से एम0ए0 (अंग्रेजी साहित्य से) करना चाहती है ।

"माध्यम का सुख" कहानी में भी किसी पात्र का नाम नहीं खोला गया है, सिर्फ दो हृद्‌यों के प्यारपूर्ण वातावरण से कहानी शुरू होती है । जीवन के प्रारम्भ में दोनों पात्र एक–दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं । नायिका नायक को माँ से मिलने के नाते ही घर बुलाती है । शादी–ब्याह की बात भी चलती है । नायिका का विवाह हो जाता है और उसका पति प्रायः दूर (यात्रा) पर रहता है, वह पति के माध्यम का पूर्ण सुख नहीं भोग पाती है ।

"चिल्मन और धुँआ" में "रश्मि" नाम की स्त्री के दुःख भरे जीवन की कहानी है एक दिन रश्मि का विवाह धूम–धाम से हुआ था और एक दिन वही रश्मि शैला जिमा की पुत्री के विवाह के अवसर पर देखता तो रश्मि – "मैली सी धोती में लिपटा शरीर ...... पिचके गाल, सूखे ओंठ जिन्दगी के बोझ से थकी आँखें और छाती की हड्डियों में फँसती साँसें पर ठुड्डी के बीचों–बीच खिंचा वह तिरछा निशान ...... " और एक नंगा–भूखा बच्चा माँ–माँ कहता हुआ पीछे लिपट गया ।

"यक्षिणी का पत्र–यक्ष के नाम" कहानी में मार्ग से भटकी हुई युवती की संक्षिप्त जीवनी है जो अभिनेत्री बनने के लोभ–लालच में अपना सर्वस्व खो बैठती है । बम्बई की चमक–दमक परमेश्वर बाबू और राकेश का छल उसका सब कुछ लूट लेता है और 35 वर्ष की अवस्था में वह घोर निराशा और ग्लानि महसूस कर रही है । इस प्रकार यह टूटती औरत के जीवन के पतन की कहानी ।

"कुत्ते" कहानी में एक व्यस्त और आर्थिक दृष्टि से तंग गृहस्थी की कहानी है, जिसमें पति–पत्नी के मध्य कुछ तनाव भी दिखाया गया है । विवाह के 10–12 साल बाद की यह घटना है । यथा – "बस, यही तो खराब लगता है मुझे दिन भर तो आफिस में रहते हो और शाम को आये तो मुंह लटका लेते हो ।" [1]

और भी– "वह जानती है कि घर में रूपयों की तंगी है .... ।" [2]

"फर्क" कहानी में अपने–अपने भाग्य का अन्तर दर्शाया गया है । दो सहेलियों अर्थात् मामा और बुआ की लड़कियों बहनों के विवाह की रीति–रिवाजों, शान–शौकत में फर्क दिखाया है । एक का तो विवाह धूमधाम से नगर के लड़के के साथ होता है और दूसरी का विवाह गाँव के लड़के के साथ होता है । एक नगरीय व्यवस्था की शौक–मौज भोग रही है, दूसरी गाँव के ही वातावरण में सूखती जा रही है –

"कितना बड़ा फर्क हो गया है ।"

"मजबूरियों के बुत" कहानी भी प्रमिला और उसके पति के मध्य उत्पन्न हुए तनाव आर्थिक तंगी और प्रमिला को नौकरी के लिए मजबूर होने की घटना चित्रित करती है ।

"चौखटे" एक पढ़–लिखकर बड़ा अफसर बनने का स्वप्न देखने वाले युवक की कहानी है और बेरोजगारी पर व्यंग्न है । यथा – "अच्छे–अच्छे एम0ए0 फिरते हैं बेकारी के घाट का पानी पीते ..... ।" [3]

"खंडहर की प्यास" दो खण्डहर (पति–पत्नी) के प्रेम और स्टैण्डर्ड से रहने की ललक प्रस्तुत करने वाली कहानी है ।

"एक कटी–छटी अंगड़ाई" कहानी आधुनिक गर्म मिजाज और कहने को सुरक्षित स्त्री के ही दो स्वभावों की कहानी है जो रेलयात्रा के समय एक ओर तो दूसरे यात्रियों को

---

1. रगड़ खाती आत्म हत्यायें (कुत्ते) – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 77
2. वही वही – – पृष्ठ 78
3. वही (चौखटे) – गोविन्द मिश्र– पृष्ठ 91–92

डिब्बे में घुसते ही झिड़क देती है – "देखते नहीं, यह लेडीज है ..... बुलाऊँ गार्ड को ..... " और दूसरी ओर एक अन्य स्त्री के व्यवहार से उसकी ओर खिंची चली जाती है – हाथ से खींच कर उसे बिठा लूं और फिर आँखों से ही .... ।[1]

"रगड़ खाती आत्महत्याएँ" इस संग्रह की अन्तिम कहानी है । इसमें माइनिंग कॉलेज के एक लड़के (छात्र) और नलिनी नामकीस्त्री की आत्महत्या की घटनाएँ हैं ।

कहानी का प्रारम्भ जुलूस और प्रदर्शनों से होता है और अस्पतालों तथा डॉक्टरों की लापरवाही से मरीजों की मृत्यु पर व्यंग्य है ।

इस प्रकार इस कहानी – संग्रह में गोविन्द मिश्र ने आज की विषम परिस्थितियों के साथ बढ़ती विलासिता (सैक्स) को भी खुले पन से चित्रित किया है ।

2. <u>नये–पुराने माँ–बाप</u> : (कहानी–संग्रह)

इस कहानी संग्रह में भी 18 कहानियाँ संकलित हैं जो विभिन्न विचारों (मूड़ों) में विभिन्न मानवीय स्थितियों एवं परिस्थितियों को ही चित्रित करती है । इन कहानियों में तत्कालीन समाज के विभिन्न वर्ग आते हैं, आबाल–वृद्ध लोग आते हैं, विभिन्न सम्बन्ध भी सन्दर्भित किए गये हैं । संकलित कहानियाँ हैं –

1. जिहाद,
2. शुरूआत,
3. अव्यवस्थित,
4. दोस्त,
5. बदरंग,
6. कोशिश,
7. घाव,
10. सीधा दूर तक सीधा,
11. अवमूल्यन,
12. दिलचस्पी,
13. गिरफ्त,
14. चुगलखोर,
15. दौड़,
16. ढलान,

---

1. एक कटी छँटी अंगड़ाई (रगड़ खाती आत्म हत्यायें) – पृष्ठ 96

8. ऑकड़े,
9. अजीबी–करण
17. बाँध और
18. नये पुराने माँ–बाप ।

ये कहानियाँ मिश्र जी ने सन् 65 से 73 के मध्य लिखी थीं । इनमें लेखक के अपने समय के ही अनुभव खण्ड हैं – "उस समय के ही अनुभव–खंड .... ज्यादातर अपने ही जीवन के ।"

कहानियों की संक्षिप्त वस्तु–विवेचना यहाँ प्रस्तुत है ।

"जिहाद" इस कहानी में कई दृश्य से बदलते हैं । शुरू में किसी कार्यालय के कर्मचारी का उल्लेख है जो एक टाइप किया कागज अपने दूसरे साथी को दिखाता है । कार्यालयों की लापरवाही का जिक्र है साथ ही अधीन कर्मचारियों की असभ्य भाषा पर खीझ भी है । इसके बाद सिनेमा देखने जाते समय टैक्सी चालक पर गुस्सा, सिनेमा हाल के गेट कीपर पर गुस्सा करने वाले दोस्त की कहानी है । फिर कार्यालयों में मेज–कुर्सी या कागज आदि का अभाव और कमिश्नर जैसे अधिकारियों द्वारा भी कोई ध्यान देने पर पैदा हुई झुंझलाहट का प्रदर्शन दिखाया गया है । रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार पर खुलासा व्यंग्य है, फिर तबादलों का किस्सा पुनः नेशनल स्पोर्ट्स क्लब के डिनर की चर्चा है जिसमें बियर ली जाती हे और यही मि0 वर्मा का जिक्र होने लगता है जो दिल्ली में कार्यरत हैं और कुछ सख्त मिजाज वाला लगता है, किन्तु चारों और की रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार से दुःखी है क्योंकि सभी अधिकारी किसी न किसी माध्यम से रिश्वत लेते ही हैं । इसी खिन्नता के कारण वह त्यागपत्र दे देना चाहता है, क्योंकि आज के गन्दे वातावरण से उसके मन में जिहाद छिड़ा हुआ है ।

"शुरूआत" कहानी में दो भोले–भाले बच्चों की निष्कपट मित्रता है जिनमें एक लड़का और दूसरी लड़की है जो अभी प्यार–ब्यार नहीं जानते और परस्पर मिलते हुए कोई संकोच या झिझक नहीं दिखाते । ऐसा लगता है कि लेखक या अनाम पात्र एक बच्चे को

पढ़ाने कस्बे मे लाता है । बालक साथ–साथ मिलकर खेलते ही हैं । "सीलू" नाम की लड़की भी है । एक दिन शाम को सभी बच्चों को वे फुटबाल खिलाते हैं । बालक को यह खेल मानो पसन्द नहीं है , और न ही वह अंकल–आंटी कहना चाहता है । लगता है लड़का संकोची स्वभाव वाला है । एक दिन वह लड़का और सीलू दोनों फूल तोड़ रहे थे, कि लड़का कहता है – "कल शाम को उसने चाय पर बुलाया है अपने घर, उसका वर्थ–डे है ।"

"अव्यवस्थित" कहानी एक नृत्य संगीत कार्यक्रम (म्यूजिक प्रोग्राम) पर आधारित जिसमें नग्न नृत्य और मद्यपान की बू आती है । कहानी तलवारकट, मिस पिंकी, मिस ईरानी के नाच गाने की गाथा ही गायी गई है ।

"दोस्त" कहानी अच्छी लगती है जिसमें एक सरकारी प्रतिनिधि (अधिकारी) और एक नागरिक की निष्कपट मित्रता की झलक मिलती है । अधिकारी उस नागरिक को एक लाइसेंस देता है और फाइल के सभी कागजों पर हस्ताक्षर कर देता है । एकाएक अधिकारी को लगता है कि उसने जल्दबाजी में बिना कागज देखे और पढ़े ही आदेश कर दिया है और उस फाइल में "टैक्स क्लीरेंस सार्टीफिकेट" नहीं लगा है । उसे पसीना आ जाता है और अपने पी0ए0 से फाइल फिर मंगवा लेता है । अब वह धर्म–संकट (द्विविधा) में पड़ जाता है, किन्तु नागरिक उसी परेशानी भांप कर सार्टीफिकेट देने की बात दुहाराता है कि आफिस में नहीं लगाया होगा, मैंने तो जमा किया था । अन्त में सार्टीफिकेट मिल जाता है और अन्य सबूत भी मिल जाते हैं । दोनों को सन्तोष और शान्ति मिल जाती है ।

"बंदरंग" कहानी वास्तव में बदरंग ही है । इसमें भी देव, शेखू, दौलत और नीना नाम की लड़की के मध्य शराब पीने तथा खुले प्यार के साथ अश्लीलता–विसालिता को उभारा गया है जो साहित्यकार के लिए कुछ अच्छा नहीं कहा जा सकता । यह भी स्पष्ट किया गया है कि नीना जैसी अच्छे घर की लड़कियाँ कितनी करप्ट और सैक्सी हो सकती हैं ।

"कोशिश" कहानी में मि0 चटर्जी और मिस चटर्जी के साथ किसी पात्र या लेखक की हुई मुलाकात उभरी है । वह पुरूष मि0 चटर्जी के यहां आने लगा है ओर मिस चटर्जी की ओर कुछ आकर्षित होता है, किन्तु चटर्जी दम्पत्ति उस मित्र के साथ निष्कपट भाव से मिलते हैं, उसके साथ खाते–पीते हैं, किन्तु वह व्यक्ति मिस चटर्जी के समीप पहुंचने की कोशिश में है ।

"घाव" कहानी का दर्शाया गया है कि खुशामदी (चापलूस) कर्मचारी स्वार्थसिद्धि के लिए किस तरह अपने अधिकारियों को रिझाते हैं, प्रसन्न करते हैं । किन्तु ईमानदार अधिकारी इन चापलूसियों को तरफ देखते भी नहीं हैं । ऐसा ही एक कर्मचारी अपने अफसर के घर कभी लड्डुओं का थाल पहुँचाता है,तो पत्रिकाएं ही दे आता है, कभी आम का मीठा अचार ही छोड़ आता है, अधिकारी पत्नी की प्रसव–अवस्था में दाई का भी बन्दोवस्त करता है और घर पर ऐसे आता जाता है मानो उस परिवार का अभिन्न अंग हो, किन्तु अफसर इस सबसे दूर ही रहता है, दो ही लड्डू लेकर सन्तोष कर लेता है कि वह प्रसाद है । आने–जाने हेतु रिक्शा वगैरह की कहने पर वह पैदल ही चल देता है । इस प्रकार वह कहानी अच्छी है ।

"ऑकड़े" कहानी आज के भ्रष्ट अधिकारियों और ठेकेदारों की मिली भगत से सरकारी सम्पत्ति को हड़प लेने की घटना पर आधारित है जिसमें एक ईमानदार ओवरसियर को रंगे हाथ रिश्वत लेते हुए पकड़वाने के झूठे आरोप में फंसाया गया है । सेवकराम और रजिन्दर सिंह सी0बी0आई0 में सेवारत हैं । प्रारम्भ में 5 नये केस रिश्वतखोर और भ्रष्ट कर्मचारियों को पकड़कर देने का उल्लेख है । सेवकराम और रजिन्छर सिंह दोनों अपने कार्य में निकल पड़ते हैं । रजिन्दर सिंह पी0डब्लू0डी0 के एक छोटे से ठेकेदार के पास जाकर, उससे मिलकर जाल रचता है । ठेकेदार अपने विभाग के एक नवनियुक्त ओवरसियर के पास जाकर उससे बिल्डिंग के निर्माण और सारी सामग्री को ठीक–ठीक सिद्ध(पास) करा लेना चाहता है । ओवरसिंयर निहायत ईमानदार है, वह ठेकेदार के द्वारा कराये गये निर्माण कार्य को (साइट को) एकदम निरस्त (रिजेक्ट) कर देता है । इससे

ठेकेदार को 25,000/– रू0 की हानि के साथ दु:ख भी होता है । वह ओवरसियर से प्रार्थना भी करता है, उसे प्रलोभन भी देता है, किन्तु वह नहीं माना, बल्कि रौक्स टेलर्स के साथ ठेकेदार द्वारा की गई बेईमानी की बात और उठा देता है ।

ठेकेदार ओवरसियर के सामने की रौक्स टेलर्स को रू0 75/– देने का वायदा करता है, किन्तु रजिन्दर सिंह से मिलकर उसे रौक्स टेलर्स के साथ पिचहत्तर रूपये (75/–)की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़वाता है । इससे ओवरसियर गिरफ्तार हो जाता है । खबर अखबारों में भी छप जाती है । इस षडयंत्र को ठेकेदार द्वारा देश का भला करने की संज्ञा दी जाती है ।

"अजीवीकरण" कहानी की कोई निश्चित वस्तु नहीं है । किसी के भागने और दूसरे द्वारा उसे पकड़ने के लिए उसका पीछा करने की बात और पकड़ लेने पर स्थानीय लोगों द्वारा उन्हें घेर लेने की कहानी कही गई है । वास्तव में यह एक अजीवीकरण ही है ।

"सीधा, दूर तक सीधा" कहानी एक असहाय बृद्ध की भेंट के साथ शुरू होती है । वृद्ध कोई अच्छा अधिकारी है, जो रिटायरमेंट के करीब है, ग्यारह बच्चे हैं, बड़ी लड़की विवाहिता है तथा लेक्चरर हो गई है । शशि उसकी दूसरी लड़की है । शशि और लेखक की (शायद) मुलाकात बढ़ती जाती है जो लेखक की (मेरी) पत्नी को खलती है । शशि घर आकर सितार निकाल कर बजाती है । इसके बाद मेरा तबादला उड़ीसा हो गया, वहाँ से शशि के पत्र लिखा बुलाने हेतु, किन्तु तीन माह बाद ही राँची के लिए तबादला हो जाता है, जहाँ शशि रहती है । एक दिन वह वृद्ध मेरे घर आ जाते हैं और जन्म तिथि ठीक (सही) कराने में सहायता माँगते हें । मैने असमर्थता व्यक्त करते हुए उन्हें पुनः सपरिवार आने का निमंत्रण दिया । और वे मेरा संकेत समझकर चल दिये । उनके जाने के बाद शादीका चेहरा मेरी आँखों में घूमता रहा ।

"अवमूल्यन" कहानी में मानों लेखक और उसके मित्र संतू की मित्रता और उसके

पटना जाने की घटना अंकित है । वह पटना में किसी अधिकारी से मिलना चाहता है और लेखक मित्र से मिलता है । दोनों कार में बैठकर जाते हैं ओर आपस में बातें करते जाते हैं । कलकत्ता के एक अन्य मित्र, सड़क दुर्घटना में किसी औरत की मृत्यु और रेस्तरों में जलपान की घटनाएँ भी बीच में वर्णित हैं । बाद में दोनों मित्र ओ0के0 करके एक–दूसरे से विदा लेते हैं । शीर्षक के अनुरूप कहानी तो यह लगती नहीं, भले ही अनुमान लगा लिया जाये कि लेखक को मित्र से ही पाँच रूपये लेकर बेरूखी से लौटना पड़ा, यही अवमूल्यन हो सकता है ।

"दिलचस्पी" कहानी में एक गाँव–घर में शादी–विवाह के अवसर की घटना प्रस्तुत की गई है, जिसमें अनाम व्यक्ति (प्रेमी) अनाम प्रेमिका (बचपन की) को बार–बार देखने–पहचानने की दिलचस्पी दिखाता है । रात का समय है , बिजली चली (गुम हो) जाती है और वह आवाज दिने ... श देकर उसे सावधान करता है, फिर दियासलाई (माचिस) की तीली जलाई जाती है, उसे देखने के लिए ही । किसी के कान में कुछ हो जाने पर तमाम घर की स्त्रियां इकट्ठी हो जाती हैं । उस भीड़ में उसकी प्रेमिका उसके पास आ खड़ी होती है और वह चुपके से उसका चुम्बन लेकर बाहर निकल जाता है । भीड़ रसोईघर की ओर बढ़ती है । यही दिलचस्पी है ।

"गिरफ्त" कहानी में एक निःसन्तान अमीर वृद्ध और उसकी दत्तक पुत्री के साथ हुई भेंटवार्ता प्रस्तुत की गई है । लड़की अमेरिका में शिक्षा प्राप्त अच्छी कार ड्राइवर है । वृद्ध दीनानाथ रिटायर्ड डाक्टर हैं । वह अपनी निःसन्तानता पर दुःखी हैं । हरदोई (उत्तर प्रदेश) लड़की गोद ली गई थी । लेखक शायद (मैं) भी अमेरिका जाने को कहता है और अगले दिन साढ़े पाँच बजे टी–हाउस में मिलने की बात पर दोनों विदा होते हैं । अगले दिन टी–हाउस में पुनः मिलते हैं, लड़की साथ है, वह हरे सलवार–कुर्ता में थी, वह भूगोल (ज्योगरफी) विषय लेकर आनर्स की कक्षा में पढ़ रही है पहले इलाहाबाद में पढ़ी थी, तो "मैं" भी कहता कि मैंने भी वहाँ से एम0ए0 अंग्रेजी में किया है । यहीं

उसकी शादी की चर्चा चल उठती हे तो लड़की हैंडलूम हाउस जाने का बहाना करती है । अमेरिका में अपने मित्रों का परिचय देता है वृद्ध और लड़की की होशियारी की तारीफ करता है,. फिर वे लड़की के पास हैंडलूम हाउस जाते हैं । फिर अमेरिका के वातावरण पर लड़की से बातें होती हैं और लड़की और वृद्ध पिता के साथ अमेरिका जाने पर रू0 18,000/– (अठारह हजार रूपयों) के खर्च को व्यर्थ बताती है । लड़की अमेरिका में शिक्षा पाने पर भी भारतीय संस्कृति को नहीं छोड़ती, तो मुझे कुछ ताज्जुब होता है । इस प्रकार वे नमस्ते कर एक–दूसरे से अलग हो जाते हैं ।

"चुगलखोर" कहानी में एक घरेलू नौकरी की चुगलखोरी की कहानी है । एक फ्लैट में 3 परिवार रहते हैं, जिनमें एक फ्लैट मालिक हैं और दो किरायेदार हैं । नम्बर 31, 32 और 33 । सोहन एक नौकर है जिसे नं0 33 ने रखा है, लेकिन वह तीनों ही का काम करता रहता है । 32 नं0 की मालकिन सोहन से तैंतीस नम्बर केयहां से कुछ. कुर्सियाँ ले जाने को कहते है तो तैंतीस नं0 को बुरा सा लगता है । वह 32 नं0 को नाराजनहीं होने देना चाहता । कभी–कभी वह इधर की उधर कर देता है, तो नं0 32 के साथ मेरठ जाने की बात करता, इस पर वह कहती है – "तुझे ले चलेंगे हम? मुहल्ले पड़ोस में लड़ाई करायेगा आये दिन ।" सोहन की इस हरकत पर 32 नं0 के मालकिन मालिक खिन्न हैं । स्वंय सोहन की सबके मन की भाँप कर शर्मिंदा होता है ।

"दौड़" कहानी की कथावस्तु भी छितरी हुई है । प्रारम्भ में एक बालिका अपने पड़ोस की आँटियों के पास बे–झिझक आती लाती है और वे उसे प्यार से खाने–पीने की हरके चीज देती हैं, बाद में उनका स्वभाव कुछ बदल जाता है । लड़की के माँ–बाप खुद गरीब हैं धका पेल स्त्री के यहाँ काले और गोरे दो आदमी आते हैं । वहीं मार–पीट शुरू हो जाती है । गोरा आदमी धकपेल के पेट में घूंसा मारता है तो नौकर और वह औरत उसकी पिटाई करते हैं । रात में एक एम्बेसडर कार में काला आदमी फिर आता है वह औरत उसमें बैठकर जाना चाहती है, तभी गोरा आदमी उसे घर में खींच ले जाता है और

दरवाजा बन्द कर लेता है । कार वाला आदमी खिड़की में लटक जाता है, तभी एक सिपाही आकर उसे पकड़ लेता है, चौकीदार भी वहां आ जाता हे, उसे थांने ले जाना चाहते हैं कि गोरा आदमी उसे पैसे देकर छुड़ा लेता है । वह औरत उस कार में बैठकर दौड़ जाती है वह लड़की उसकी टाँगों से चिपक जाती है ।

"ढलान" कहानी का आरम्भ एक मुलाकात से होता है । घर में एक सीलिंग फैन है जो इधर-उधर सरकाया जा सकता है, फिर वे कुशल क्षेम पूछते हैं । आदमी रेलवे विभाग के "आपरेशन विभाग" में काम करता है, सिर्फ अपने काम से ही काम रखता है, वह बीमार है, पत्नी उसे गोलियाँ (टेबलेट्स) दे जाती हैं, जिन्हें पानीसे लेता है । फिर ऑफिस जाने की बात चलती है, कैसे जाते हो, कैसे आते हो ? और वे गाड़ी में बैठकर बल देते हैं ।

"बाँध" में सरकारी कार्यालय में नवनियुक्त एक लड़की "उसके" (बहके) घर आती है और "उसके" पास बड़ी देर तक बैठकर बातें करती है । उसकी पत्नी को उस लड़की से चिड़ होती है । वह बार-बार अपना पेट दबाती है और ऑफिस के काम से थकान महसूस करती है, जाने का नाम नहीं लेती । पत्नी बार-बार खाना खाने की टोकती है, लेकिन वह जाना ही नहीं चाहती, मजबूरन वह खाने को खड़ा हो जाता है और वह भी "गुडनाइट" कर चली जाती है । दफ्तर का काम और अकेलापन "बाँध" बनाये खड़ा है उसके जीवन में ।

"नये पुराने माँ-बाप" में एक भोली नायिका की मनादेशा की चित्रित किया गया है । फूलों को तोड़ना, पतंगों को उड़ना उसे बड़ा अच्छा लगता है । बालिका की माँ मर गयी है । लड़की इस विषय में भी सोचती है । उसकी "दीदी" है जो पढ़ती है । किशोर दादा हैं । जो लड़की की देखभाल करते हैं । दीदी और बापू उससे नाराज हैं । जो किशोर दा के आने पर या लड़की के वहां जाने पर उसे डाँटते हैं । कुछ समय बाद नयी

दीदी आती है, उससे बापू और पुरानी दीदी डरते हैं । लड़की को पुरानी दीदी अच्छी लगती है क्योंकि वह उसे प्यार करती है, नयी दीदी प्यार नहीं करती, यही फर्क है नये–पुराने माँ–बाप में । एक तरह से इसमें सौतेली माँ (मौसी) के स्वभाव की कहानी कही गई है ।

3. <u>अन्तःपुर (कहानी–संग्रह)</u> :

गोविन्द मिश्र का यह तृतीय कहानी संग्रह है जिसमें 10 कहानियाँ संग्रहीत हैं । इस संग्रह की लगभग सभी कहानियों में मनःस्थिति का सफल चित्रण किया गया है । दस में सात कहानियों में युग से जुड़ी मानसिकता को विभिन्न परिस्थितियों के माध्यम से टटोला गया है । शुद्ध और सार्थक चित्रण की दृष्टि से "अपरिचय", "पड़ाव" "खण्डित" "गलत नम्बर" और "झपट्टा" कहानियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं । "घेरे" कहानी में लेखक अवकाश प्राप्त कहानियों की मनःस्थिति से दो गुटों की प्रतियोगिता में उलझ जाता है । "अपाहिज" और "चीटियाँ" भी अत्यन्त मार्मिक कहानियाँ हैं जिनमें लेखक निम्न मध्य वर्गीय करूण परिस्थितियों का चित्रण करते हुए नव नाढ्य वर्गों पर व्यंग्य करता है । "अन्तःपुर" कहानी में प्लाट और घटनाएँ तथा "कचकौंध" में गाँव का वातावरण, शुद्ध मनःस्थिति पर हावी हो गया है ।

"अपरिचय" "गलत नम्बर" और "झपट्टा" कहानियाँ युवा या अधेड़ व्यक्तियों की कहानियाँ हैं जो एक गहरा असन्तोष–सा उत्पन्न करती हैं, मानो कोई आवश्यक कोना उद्घाटित होने से रह गया हो । "अपरिचय" में एक ठण्ठी और निर्मम उवासी है । "गलत नम्बर" अन्तरंगता की ललक की अनिवार्यता विनिर्मित पर – एक गंभीर वक्तव्य देती सी जान पड़ती है । हर नम्बर जैसे गलत नम्बर है और अगर कुछ समय के लिए लगे कि वह लगत नहीं है, तो वह "कैजुएल्टि" है पर सच्चाई से परे नहीं । "झपट्टा" का मूड इन दोनों कहानियों के बीच तैरता रहता है ।

"पड़ाव" कहानी में अतिरिक्त सहानुभूति और सहृदयता से बाल मनः स्थिति के

कुछ पक्षों को उजागर किया गया है । "पड़ाव" का आठ–नौ साल का लड़का देर तक पाठक को "हाट" करता है । शान्त और मौन इस बच्चे पर उसके पिता की छाया कुछ विचित्र आततायी ढंग से मंडराती रहती है । अपने पिता के साथ उसे कुछ घंटों के लिए नये परिवार में जाना पड़ता है, उसका उस परिवार के बच्चों के साथ मेल हो जाता है । कुछ घंटों रहने वाला यह सम्बन्ध शीघ्र ही गहराई ग्रहण कर लेता है और आँखों की विविधता भी । इससे भिन्न सम्बन्ध है बच्चे के पिता और परिवार के मुखिया का । एक तीसरे स्तर पर चलता है एक इकतरफा सम्बन्ध–परिवार के मुखिया का नवागन्तुक बच्चे के साथ । इस रहस्यमय बच्चे के प्रति सहानुभूति उन्हें आक्रान्तर सा कर देती है, और "पड़ाव" की समाप्ति पर – "पहली बार अपनी तरफ आते हुए मैंने उसकी आँखों को देखा–करूणा का अथाह सागर था वहाँ जमा हुआ दर्द जो मैंने पहले कहीं नहीं देखा .... आठ साल के बच्चे की आँखों का विस्तार इतना बड़ा हो सकता है, मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी ।" [1]

**　　　**　　　**

"मैंने उसका गाल थपथपाया और जान बूझकर उसके बोली से आँखों को मूद लिया फिर मैं उसकी आँखों में झाँकता, इतनी हिम्मत मुझमें नहीं थी ।" [2]

"अन्तःपुर" गोर्डे को मैं कलकत्ता से ही जानता था । तब दोनों खूब मिलते हैं वह व्यस्त रहता था । अच्छी नौकरी थी । वह शैलजा से प्रेम भी करता था । दोनों के विवाह की तैयारी थी कि वह नौकरी से हटा दिया गया । वह बनारस आकर रहने लगा । वह स्वप्नजीवी–बुद्धिजीवी, क्रान्तिकारी सब कुछ बन रहा था । नेता बनकर दिल्ली तक दौड़ लगाने लगा और कांग्रेस के विभाजन पर समाजवादी कांग्रेस से जा मिला । शिवेन्द्र से मुलाकात होती है । उसके साथ रहते–रहते जो कड़डमडड गोर्डे बन गया था, वह खुलने लगा । शिवेन्द्र के हर काम को करने में उसे आनन्द आता था । चुनाव–प्रचार और सात तारीख के आन्दोलन की तैयारी हो रही थी ।

---

1. सृजन के आयाम – गोविन्द मिश्र (सं. चन्द्रकान्त) – पृ. 247
2. — वही — पृ. 247

काफी हाउस के सामने से सड़क सीधे असेम्बली हाउस की तरफ जाती थी, जहाँ चार बजे गोली चली थी । अमरेश और बिपिन वहाँ पहले से ही उपस्थित थे । वह अस्पताल से लौट रहा था । सोच रहा था ..... "आज मजा आ गया होगा अफसरी का । आन्दोलन, लाठी–चार्ज से शहर अस्त–व्यस्त और अशान्त था ।

शिवेन्द्र ने बताया कि गोर्डे भी आया है तो वह खनखना उठा । शिवेन्द्र ने मेरा हाथ पकड़कर खींच लिया और हम कच्चे रास्ते से आगे बढ़ गए । अन्त:पुर था उसे आधुनिक बंगले का रूप दिया जा रहा था । एक फूल का दृश्य । शिवेन्द्र की उस फूल पर अच्छी पकड़ थी । अन्त:पुर के स्वामी ने प्ररिचय कराया, उनसे शिवेन्द्र ने हाथ मिलाया और फोटो खिंचवाया । काली शेरवानी वाला नेता कुछ कहे जा रहा था और शिवेन्द्र त्रस्त था । शिवेन्द्र की बात सुन सभी के चेहरे पीले पड़ गए और वह एक कुर्सी पर बैठ गए । सामने गोर्डे भी था । उसके चेहरे पर पसीना उछल रहा था । मानो वह वहाँ फंस गया हो। मैं तब बीच के पास खड़ा था । शिवेन्द्र के साथ दो अन्यों के चले जाते ही पर उन्होंने अपना रोष प्रकट किया, मैं यह सब देख रहा था कि एक ने बैठने को विवश किया मैं बेठ गया शेरवानी से हाथ मिलाया, वह मुस्कराकर रह गया । "जंग" पत्रिका के सम्पादन पर चर्चा हुई । थोड़ी देर बाद में बाहर निकल आया और अन्त:पुर के मालिक से विदा ली । गली के बाहर शिवेन्द्र, गोर्डे और तीसरा व्यक्ति मिला । सामाजिक वातारण पर वार्ता हुई । गोली कॉड का दृश्य और शिवेन्द्र मेरी तरफ आता है ।

"घेरे" कहानी भी "पड़ाव" की श्रेणी में आ सकती थी, किन्तु लेखक दो गुटों की प्रतिस्पर्धा में कहीं भटक जाता है ।

"अपाहिज" और "चीटियाँ" वास्तव में नहीं कुछ नकारती हैं और न ही कुछ स्थापित करती हैं । प्रतीत होता है, जैसे तत्कालीन साहित्यिक नारों की गूंज, भूले–भटके ही सही, संवेदनशील से संवेदनशील लेखक की रचना में प्रतिध्वनित हो जाती है । मिश्र जी ने किसी प्रतिबद्धता और सार्थकता के दवाब में मानो ये कहानियाँ लिखी हैं ।

"कचकौंध" कहानी में एक वृद्ध स्कूली अध्यापक के माध्यम से समूची राजनीतिक बिडम्बना, उसकी पेचीदगियाँ व्यक्त की गई हैं । मिश्र जी ने इस कहानी में अध्यापक महोदय की जिन्दगी जिस पहलू और जिस त्रास को दिखाया है, वहाँ भाषा भी काफी सशक्त रूप से प्रयोग की गई है । इस कहानी में शुद्ध ग्रामीण वातावरण का चित्रांकन किया है । यहाँ आज के दिल्ली, लखनऊ जैसे महानगरीय जीवन पद्धति के फलक पर पुरानी पीढ़ी के देहाती जीवन मानदण्डों को मटियामेट होते देखने से उत्पन्न खीझ का मूर्तिमन्त चित्रण प्राप्त होता है । "कचकौंध" आम आदमी की जिन्दगी का मार्मिक और विश्वसनीय दस्तावेज है । आज की जिंदगी के त्याग पहलुओं को व्यक्ति से जोड़कर यथार्थ को एक वृद्ध अध्यापक के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है ।

"अन्तःपुर" प्रस्तुत कहानी संग्रह की अन्तिम कहानी है । इस कहानी में लेखक एक राजनीतिक मसीहा का पार्ट ले लेता है । यद्यपि वह इसमें विशेष सफल नहीं हो पाता, फिर भी कहानी सशक्त कही जा सकती है, क्योंकि वह मात्र मानसिकता की कथा नहीं है, अपितु तथा कथित राजनीतिक सैद्धान्तिक पक्षों की लड़ाई और तटस्थ मानसिक चित्रण दो अलग–अलग चीजें हैं ।

"कचकौंध" की कथावस्तु राम आसरे हाट से लौट रहा है, बरसात के दिन हैं, इन दिनों में देहात में जीवन बड़ा दूभर हो जाता है । सहायक अध्यापक वेतन लेने के अलावा सह उपजिला विद्यालय निरीक्षक (एस0डी0आई0) की खुशामद ही करते हैं । क्रमशः वे सेवा–निवृत्त होकर सभी के बालकों की देखरेख में मन लगाते हैं । दिल्ली जाने से पूर्व वे एक प्रार्थना पत्र मुखिया जी को दे जाते हैं ।

दिल्ली पहुंचने पर सभी बच्चे उनके चरण–स्पर्श स्वागत करते हैं । वे भी बच्चों में मिल जाते हैं । मार्ग में रेलगाड़ी की यात्रा का वर्णन । दिल्ली के विस्तार के साथ सुन्दर इमारतों और निजामुद्दीन के पास की झुग्गी–झोंपड़ियों का वर्णन । स्कूली लड़कों की जबरदस्ती, डाक्टरों की कीमती नुस्खे और भौजपुरी समाज का सम्मेलन । लड़के

अपने–अपने कार्यालय जाते हैं तो बहुएं बच्चों के साथ कमरों में बंद हो जाती हैं । कार्यालयों से आने पर वे भी बहुओं के साथ बन्द उनसे यह सब देखा नहीं जाता है । वे गॉव लौट आते हैं तो यहां भी सब परिवर्तित । प्रधान के यहां से सेवा निवृत्ति का संन्देश मिलता है, तो फिर वे कलक्टर वगैरह से मिलते हैं, लखनऊ जाकर मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री से मिलने का असफल प्रयास करते हैं । रामदीन एम0एल0ए0 से भेंट होती है । पर सब बेकार । वे लौटकर आते हैं तो इलाहाबाद से निदेशक महोदय का आदेश मिलता है कि एक साल का एक्सटेंशन उन्हें मिल गया है, वेखुश । और पंडितजी अन्त में सेवा निवृत्त पर पेंशन लेकर कार्यालय से बाहर निकलते हैं ।

"अपाहिज" मालिक साहब से मिलने कोई सज्जन आते हैं । सतीश भी मालिक साहब के साथ । तीनों एक कमरे में बैठकर बात करते हैं । सतीश कुछ प्रश्न कुशल क्षेम के बारे में पूछता है । आपरेशन का मामला है । लगता है आगन्तुक विदेशी है जो भारतीय विचारों से सहमत नहीं है । सिगरेट और विह्स्की पीते हैं । भंरत, नेपालऔर अमेरिका के वातावरण पर वार्ता/सन–इन–लाकी नौकरी का प्रस्ताव । सतीश का एक प्रश्न । एक रेस्तरों में खाना चलता है । खाना खत्मकर मालिक साहब रिसेप्शन की तरफ फोन करने चले गए तो सतीश और "वह" भी उठ खड़ा होते हैं । फिर कृषि–विभाग के किसी आई0ए0एस0 अधिकारी से भेंट होती है कि वह भारतीयता को गाली देता हुआ अमेरिका की प्रंशसा करता है । मलिक साहब को बुरा लगता है । दोनों में कुछ मतभेद हो जाता है ।

अन्त में एक फ्लैट के बरामदे की चारपाई पर कोई चद्दर ओढ़े सो रहा है तो उसे "वह" लात मारकर गिरा देता है, कि एक कराहट सुनाई दी मार डाला । एक दयनीय आकृति । तहलका मच गया । नेता जी ने उसे खाट से गिराया था, यह सुन "वह" उलटे कमरे में चले गए ।

4. "धांसू" – (कहानी संग्रह) :

इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ गोविन्द मिश्र के लेखन में एक नए दौर की

द्योतक हैं । इस संग्रह में भी 9 कहानियाँ संकलित हैं । जिनमें से सम्भवतः "पैंतालीस अंश का कोण" और "झूला" मनुष्य की मनःस्थिति अर्थात् मानसिकता से जुड़ी हुई है । अधिकतर "झूला" कहानी ही पूर्णरूप से उपर्युक्त इष्ट के साथ न्याय करती है, इस कथा में मानवीय सम्बन्धों में हो रहे उत्तरोत्तर अवमूल्यन का चित्रण "अन्तःपुर" जैसी मार्मिक तटस्थता से किया गया है । "धांसू" संग्रह की दूसरी कहानियों में मानवीय सम्बन्धों से अधिक व्यक्ति और स्थितियों के सम्बन्ध में उभरकर आते हैं । यह सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष के न होकर हमारे समाज में जहाँ–तहाँ फैले सम्बन्ध अधिक हैं । इन सम्बन्धों की जो टकराहट स्थितियों में होती है, उनसे समाज में व्याप्त विकृतियाँ बार–बार उभरकर आती हैं जो विशेषकर बेईमानी और भ्रष्टाचार तथा इनसे त्रस्त आदमी की विवशता उभारते हैं – यहाँ तक कि विशुद्ध राजनीति के क्षेत्र में काम कर रहे एक अपेक्षाकृत ईमानदार आदमी की बेबसी भी। यह एक ऐसी बेबसी है जो कभी–कभी नाटकीय किन्तु प्रभाव हीन प्रतिशोध में परिणति के अलावा किसी दूसरी राहत के परे हैं ।

"धाँसू" में मार्मिक तटस्थता का स्थान लेता दिखता है – निर्मम व्यंग्य । मानवीय अन्तस् की पीड़ा और व्यवस्था में दबे उसके नाना स्रोतों को उद्‌घाटित करने के प्रयत्न में एक अनिश्चितता का एहसास निहित सा था । इस विषयगत अनिवार्य अनिश्चतता से हटकर गोविन्द मिश्र अब अपने जटिल यथार्थ को कहीं अधिक स्पष्टता से देख पा रहे हैं । उनकी ऐसी मान्यता लगती हे कि "हमारे दैनिक जीवन पर कहर ढाने वाले "मूल शक्ति है राजनीति, जो अपने आपमें एक संस्था है, जीवन–प्रणाली है, जिसके अपने नियम हैं और जो समाज को मरोड़ते समय उस रूप में नहीं आती जिसमें वह धंधे के रूप में होती है । "बहुधंधीय" इसी दिशा में एक प्रयास है । परन्तु इसकी संभावनाएँ पूरी तरह से निखरकर आती है । "धाँसू" में । यह कहानी भारतीय जीवन के हर क्षेत्र में उपस्थित उन बिचौलियों को लेकर लिखी गयी हैं जो सत्ता और सामाजिक अंन्याय अनाचार और उत्पीड़न के बीच व्यवस्थात्मक स्थायित्व को पोषण करते हैं । विषय के अनुसार "धाँसू" कहानी हमारी राजनीति में हुए तथाकथित क्रान्तिकारी परिवर्तन का भी पर्दाफाश करती है और

आपातकाल के तुरन्त बाद प्रकाशित यह कहानी उस समय का मोहभंजक चित्र उपस्थित करती है । देखिये .... तेजी से एक घेरा नये मंत्रियों के चारों तरफ लपेट कस रहा था, जिससे कि वह तबका भूल जायें, जहाँ से वे आये थे, फूलमालाओं से सिर ही नहीं उठा सके, सभी उठायें भी तो सिर्फ उन्हें ही देखें जिनसे वे घिरे थे ..... जनता से समपर्क बनाए रखने के नाम पर उन्हीं के आयोजनों में जा–जाकर संतुष्ट रहें, उन्हीं के घर भरने में व्यस्त रहें जो उनकी तारीफ गाते थे ..... ।"[1]

"सिलसिला" और "जनतंत्र" कहानियों में मानव की विवश मंत्रणा का दहला देने वाला चित्र उपस्थित हुआ है । "जनतंत्र" किसी दौर–विशेष की कहानी नहीं है बल्कि यह एक ऐसी कहानी है जिस तक चरम प्रेरणा के किसी क्षण में कोई लेखक कभी–कभी ही उठ पाता है पर प्रेरणा उसकी वही है जिसे अलग लगती दुनियाँओं की एक सामान्य मानवीय यंत्रणा नियति कहते डर लगता है, परिणामतः यहाँ एक विशिष्ट सामाजिक ऐतिहासिक सन्दर्भ में व्यक्त आम आदमी के दर्द को साहित्य की आश्वास्तता प्राप्त हो गयी है । "जनतंत्र" उस अद्वैत की कहानी है जो व्यक्ति के अन्तम् और व्यवस्था के द्वैत से उत्पन्न होता है ।

"मैं ओर वे" कहानी में अपरिवर्णित अद्वैत साफ–साफ पहचाना जा सकता है । यह अद्वैत ही वह जो देश और काल के परिवेश में यंत्रणा भोगता है ।

इस प्रकार इस कहानी संकलन में संकलित कहानियाँ हैं । "जनतंत्र", "बहुधंधीय", "झूला", "स्वरलहरी", "प्रत्यवरोध", "गोबरगनेस", "सिलसिला", "पैंतालीस अंश का कोण" और "धाँसू" ।

"जनतंत्र" इस संग्रह की पहली कहानी है जिसमें एक वृद्ध अध्यापक (मास्टर साहब) के माध्यम से सामाजिक – व्यवस्था को उभारा गया है । अध्यापक–बन्धु पर

---

1. धाँसू - ले. गोविन्द मिश्र - पृ. 123

अनर्गल आरोप, चोरी करने के लगते हैं, उन्हें सजा देने के प्रयत्न किए जाते हैं, लेकिन मास्टर साहब को सब सहर्ष स्वीकार है, क्योंकि शिक्षा सुपरिण्टेडेंन्ट के यहाँ उसका कार्य व्यवहार अच्छा है, रिजल्ट हमेशा 100% रहता है । उनके यहां एक मामा रहते हैं, वहन रहती है, परन्तु मामा उनकी पत्नी की देखभाल करते हैं और मास्टर साहब पर व्यंग्य कसा जाता है, किन्तु आज के जनतंत्र सब कुछ चलता है क्योंकि समाजवाद में तो हर चीज समाज की है, सरकार सबको एक मकान देगी, मैं भी जानता हूँ । इस प्रकार यहां विवश–यंत्रणा का भी दर्द भरा चित्रण देखने को मिलता है ।

"बहुधंधीय" कहानी में पद्‌मश्री कुलकराज आचार्यजी के बहु–धन्धों का जिक्र है पुरानी कोठी, किन्तु आधुनिक सज्जायुक्त है, मैं रोहितजी एक लड़के श्री को कहीं नौकारी लगवाने के लिए आचार्य जी के पास आते हैं और वे हाँकर उस लड़के को अपने पास रख लेते हैं, हड़ताल की चर्चा चलती है और आचार्य जी प्रधानमंत्री जेसे मंत्रियों से परिचय, मेलजोल होने की बात कहते हैं । कुछ ही देर बाद सरदार अमरीक सिंह आ जाते हैं, उनमें बातें होती हैं फिर फोन पर इससे–उससे बातें होती हैं । तभी वे एयरपोर्ठ जाकर किसी को विदा देना चाहते हैं तो किसी मंत्री का स्वागत करना चाहते हैं । फिर मयूर–भवन जाकर और साउथ एक्टेंशन जाकर मंत्रियों से मिलते हैं । कृष्णचन्द नायक अधिकारी से बात होती हैं तो कृष्णचंद विदेश घूमने की सिफारिश कराना चाहते हैं और रंगनाथन के घर फोन करते हैं, किन्तु रंगनाथन घर नहीं थे । इतना सब होते हुए भी श्री को कहीं नौकरी नहीं मिल पायी और आचार्य जी बहुधंधीय कारनामें उजागर होते हैं ।

"झूला" इस कहानी में आज के बदलते परिवेश में मानवीय मूल्यों के उत्तरोत्तर अवमूल्यन और बदलती मानसिकता का उभारा गया है ।कहानी में पति और उसकी पत्नी है, पत्नी कुछ आलसी लगती है, लोगों की बात–चीत के बीच डोलती रहती है आगे–पीछे जैसे ..... पालने में पड़ी हो और झूल झूलकर नींद को बुला रही हो ।" घंर में ईश्वर का

दिया सब कुछ धन–दौलत, चार बच्चे, बड़ी लड़की की शादी हो गयी थी, दोनों लड़के पढ़ने में अच्छे, वे विदेश में पढ़ने गये थे । लड़के अपनी मन–पंसद लड़की से शादी करना चाहते थे । लड़कियाँ दिखायी जा रहीं थी । लड़के के एक लड़की के लिए प्रस्ताव अपनी बड़ी बहन के समक्ष रखा और माँ से कह डाला – "तुम किस दुनियाँ में रहती हो माँ । ब्याह तो मेरा होना है, जब तक साथ न रहा जाये क्या पता चलता है । और उसकी माँ एक झूले से में झूल गयी । [1]

"स्वर लहरी" यह रेलयात्रा के दौरान भी एक स्वर लहरी में डूबी भुक्खड बुढ़िया की घटना है, जो रेल के डिब्बे में भी आ–आ–आ का राग अलापती है और लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचती है । उस बुढ़िया से झपट होती है, भाऊ जी की, यात्रा कर रहे हैं जो नाश्ता करते हैं, कुल्ला–आचवन करते हैं कि पैर फिसलकर उनका लोटा गिर जाता है, वे बुढ़िया पर नाराज हो जाते हैं, तभी कोई यात्री समझाकर उन्हें शान्त कर देता है ।

"प्रत्यवरोध" कहानी में हरिद्वार के कुम्भ मेले का वर्णन है, जिसमें बड़े–बड़े अखाड़ों वाले महात्माओं के गंगा स्नान कर लेने पर ही घाट अन्य यात्रियों के स्नान के लिए खुलते हैं । कुम्भ का मेला देखने तीन अन्य यात्री आये हैं जो यह सब तमाशा देखते हैं कि पुलिस वालों ने घाट तक जाने का रास्ता रोक दिया है, क्योंकि महात्माओं की सवारियाँ आ रही हैं । ज्यों–त्यों स्नान करके वे तीनों ठसाठस भरी बस से वापस लौटते हैं तो वह बस रास्ते में ए0आर0टी0ओ0 द्वारा पकड़ ली जाती है, किन्तु बस मालिक एक सेठ दूसरे रास्ते से बस को दिल्ली भेज देता है ।

कहानी में मेले का इन्तजाम, पुलिस की व्यवस्था और बस ड्राइवरों व कण्डक्टरों की मनमानी का खुलासा वर्णन किया है ।

"गोबरगनेस" – इस कहानी में एक ईमानदार आदमी की विवशता वर्णित है जो हर क्षेत्र में पनपती राजनीति का शिकार है किन्तु राजनीतिक दृष्टि से आदमी कर्तव्यनिष्ठ

---

1. धाँसू (झूला) – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 48

भी है । एक पार्टी का अध्यक्ष फोन करता है और चुनाव के समय पैसे (चन्दा) इकट्ठे कर पार्टी को चुनाव में जिताने के लिए प्रयत्नशील है । कोषाध्यक्ष अपनी पार्टी के आब्जर्बर (पर्यवेक्षक) को नब्बे लाख रूपये देता है, किन्तु वह इतनी बड़ी धनराशि की सुरक्षा और लाने ले जाने में असमर्थता व्यक्त करता है । पार्टी अध्यक्ष की अच्छी धाक है । चुनाव होते हैं, पार्टी जीतती है और विपक्षी पार्टी की करारी हार होती है । चुनाव में कोई श्रीमतीजी "प" खड़ी होती हैं, दूसरी पार्टी से, परन्तु हार जाती हैं और अब इस पार्टी में शामिलहो जाना चाहती हैं, तो कुछ पार्टी नेता कुछ एतराज सा करते हैं, क्योंकि राजनीति में भी हर चीज का वक्त होता है और मैं गोबरगनेस ही निकला । क्यों कि मुझे कोई पद या सीट नहीं मिली ।

"सिलसिला" "यात्रा के दौरान प्राकृतिक दृश्यों को देखने का सिलसिला चलता है जो उसका अन्तिम चरण है । नदी और विशाल बाँध का दृश्य है । पतली सड़क पर आदमियों की पंक्तियां चल रही हैं । सील में नाव के पास एक मृत व्यक्ति की लाश देखकर चौंकती हैं, अनेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं । आने–जाने वाले आते–जाते हैं, पर उसको समीप से देखने की हिम्मत किसी में नहीं फब्बारों का रंगीनी दृश्य प्रस्तुत कर कहानी समाप्त हो जाती है ।

"पैंतालीस अंश का कोण" बरसात के दिन हैं । वह एक बैंच पर बैठा है ओर एक विदेशी भी बगल की बैंच पर बैठकर पाइप भरता है । विदेशी की गर्दन पैतालीश अंश के कोण पर झुकी हुई है और घूर–घूरकर उसकी तरह देख रहा है । वह उसकी टूटी टाँग के बारे में पूछता है और वह कहानी बताता है कि बचपन में एक दुर्घटना (एक्सीडेंट) में टाँग टूट गयी थी । दोनों में सांकेतिक भाषा में वार्ता भी होती है । क्रिसमस का त्यौहार मनाये जाने हेतु सजावट चल रही है एक लड़की बाजार से सामान खरीदकर आती है, चली जाती है, एक बूढ़ा आदमी कबूतरों को चुगाता है और कबूतर एक–एक कर उड़ जाते हैं। वह चिल्लाता रह जाता है ।

"धौंसू" यह गोविन्द मिश्र की 24 पृष्ठीय लम्बी कहानी है । "वह" काफी परिश्रमी, प्रयत्नशील और लगनशीन है । "वह" दिल्ली की राजनीति में दौड़–दौड़ कर भाग लेने लगा है । मंत्रियों से मित्रता हो गयी है । राजधानी की सजावट देखकर "वह चौंधिया गया । एक समारोह (सम्मेलन) की तैयारी चल रही है । समारोह का आयोजन दो सत्रों की बैठकों में होता था । एक वरिष्ठ मंत्री उद्घाट्न करते हैं, जो स्थूलकाय हैं, वे माल्यार्पण कर सत्र का उद्घाट्न करते हुए सभा को सम्बोधित भी करते हैं । प्रथम सत्र कुछ ज्यादा समय तक चलता है । "वह" भी मंच पर आसीन हैं, प्रजातंत्र की दुहाई देता है । अब वह अपनी जैसी संस्थाओं के संघ का अध्यक्ष बन गया है, चुनाव बोर्डों में भी भाग लेगा। मंत्रियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करेगा ।

द्वितीय सत्र में कई मंत्री भाग लेने आते हैं । "वह" बैठक में आधा घंटा पहले ही पहुंच गया था । प्रधानमंत्री को भी आना था, उनसे एक पुस्तक का विमोचन कराने की योजना बनायी जाती है । प्रधानमंत्री के आते ही सब उनके सम्मान में खड़े हो जाते हैं कार्यक्रम चलने लगता है "वह" प्रधानमंत्री के पास जाकर अपना प्रस्ताव पढ़ने लगता है एवं उनका स्वागत करता है मक्खन भरी चापलूसी से ।

अब "वह" बड़ा धौंसू बन पाया था । व्यस्त रहने लगा । अब तो मंत्री से मिलने के लिए भी उसके पास समय नहीं था । मित्र मंत्री इस अपेक्षा से क्षुब्ध होने लगे थे, किन्तु "वह" ने हरिद्वार के किसी प्रसिद्ध बाबा का शिष्य बनकर उनका आर्शीवाद ले लिया था । वह "वह" कुछ ज्यादा ही "प्रभू" हो गया था, न बाबा की चिन्ता न मित्र–मंत्री की परवाह । लेकिन जब चुनाव आया तो "वह" अपने पूर्ण धरातल पर उतर आया और बाबा की शरण में गया तथा मित्र–मंत्री की सहायता लेनी पड़ी । किन्तु फिर भी वह मंच दूसरों के कब्जे में हो गया था । अपनी चालाकी चतुराई और लगनशीलता से वह अब भी पूर्ववत् अपने स्थान ठोस स्थान पर खड़ा था, धौंसू जो बन गया था ।

5. "खुद के खिलाफ" (कहानी संग्रह) :

"खुद के खिलाफ" गोविन्द मिश्र का नवीन कहानी संग्रह है जिसका प्रथम संस्करण 1981 में प्रकाशित हुआ था । कहानीकार के गोविन्द मिश्र के पास एक समृद्ध अनुभव-जगत है, जिसका चित्रण वे जीवन-मूल्यों में करते हैं, जिससे कहानी का घटनाक्रम, स्थितियाँ गौण पड़ जाती हैं और कहानीकार जीवन-मूल्यों की सार्थक तलाश की कोशिश करता है । यही कारण है कि "खुद के खिलाफ" संग्रह की अधिकांश कहानियाँ जीवन-मूल्यों के टूटने के दर्द से सदाबोर हैं । इस कहानियों में "खुद के खिलाफ" की विमला, "शापग्रस्त" का आदमी और रीता, "निरस्त" का बूढ़ा बाप, "गिद्ध" की लड़की, "हमदर्दी" का घायल नौजवान, "कहानी नहीं" का गाइड और "जंग" की मां-बेटी सभी पात्र मूल्यों के टूटने की व्यथा से पीड़ित हैं । इसके साथ ही ये कहानियाँ भ्रष्ट व्यवस्था का भी पर्दाफाश करती चलती हैं ।

"खुद के खिलाफ" कथा-संग्रह में 11 (ग्यारह) कहानियाँ संग्रहीत हैं, में है - "खुद के खिलाफ", "शापग्रस्त", "निरस्त", "गिद्ध", "हमदर्दी", "प्रभामंडल", "किस कीम पर", "कहानी नहीं ...... ", "ज्वालामुखी", "अलग अलग समय" और "जंग" ।

"खुद के खिलाफ" :

इस संग्रह की सशक्त कथा है जिसमें विमला प्रेम की असफलता में किस हद तक नीचे गिरती है कि वह वेश्यावृत्ति अपनाने को मजबूर हो जाती है, वह भी पतिदेव की इच्छा से । लेखक ने उन परिस्थितियों को भी उभारा है जिनके कारण विमला अपने वर्तमान नाब दान तक पहुंचती है । यहाँ लेखक "विवाह" और "प्रेम" के परम्परागत नैतिक मूल्यों को मानो खुलकर चुनौती दे रहा है ।

विमला विवाहित स्त्री है जो अपने पति व बच्चों के साथ दिल्ली के एक मकान में रहती है । वहीं अनाम व्यक्ति किन्तु परिचित से मुलाकात होती है । वह व्यक्ति उसी

मकान में किरायेदार के रूप में रहता है, किन्तु धीरे-धीरे पारिवारिक सदस्य सा बन जाता है एक दिन उस घर में कुछ मेहमान आये हुए थे । विमला की बहन सरला है जो रात को दिनभर की थकान के कारण उस किरायेदार के पास ही सो जाती है, इस पर वह उस मकान को छोड़ देता है । एक दिन विमला का पति उसे वहां बुलाने पहुंच जाता है । बेमन से वह उसके साथ आता है । विमला का पति बीमार रहता है, नौकरी भी कच्ची है, खर्च के लिए हाथ तंग था और वह दोस्तों या अन्य लोगों से रूपये ले-लेकर विमला से अनैतिक कार्य करता था, इस प्रकार काफी धन इकट्ठा भी कर लिया था और फरीदाबाद में एक प्लाट लेकर "नट-बोल्ट" की फैक्टरी लगाने की योजना बनाली थी । ऐसा ही कुछ इस व्यक्ति के साथ घटता है, किन्तु वह विमला के साथ कुछ नहीं करता । इस प्रकार यह हमारी समाज-व्यवस्था पर एक प्रश्न चिन्ह है ।

"शापग्रस्त" :

कहानी का नायक लंदन में अपनी पत्नी और पुत्र को खोकर टूट गया है । वह सोचता था कि उसकी पत्नी को प्रेम (मुहब्बत) चाहिए, पर "वह लंदन के बाजार चाहती थी" भारतीय परिवार, नारी जब पश्चिम के मुक्त समाज के जीवन-मूल्यों से टकराते हैं तो अधिकांशतः उनकी वही दशा होती है जो रीता और उसके बच्चों की होती है । इग्लैंड में भारतीयों को "काला आदमी" कहकर अब भी अपमानित किया जाता है । रीता और बच्चों के साथ रहते हुए इस आदमी को लंदन में 10 साल हो चुके थे, किन्तु एक साल में ही उस परिवार की दशा बदल चुकी थी । पति-पत्नी में प्यार के स्थान पर अब कुछ घृणा हो चली थी । रीता और उसका पति विह्स्की पीते हैं, सिगरेट पीते हैं, रीता एक दिन एक टब में स्नान कर रही थी, पति ने विह्सकी के लिए पैसे मांगे । कुछ दिनों बाद रीता, मिंद और बेबी अलग हो जाते हैं । रीता कहीं अन्यत्र दो व्यक्तियों के साथ मिलती-जुलती है और पति की दशा शापग्रस्त जैसी हो जाती है ।

निरस्त :

इस कहानी का कथ्य कथाकार की प्रिय भूमि है जिसमें कहानी का पिता अपने समस्त जीवन मूल्यों को बदला हुआ देखकर परेशान है । यह कहानी वृद्धावस्था पर लिखी गयी है । झटपट शादी तय हुई, लेकिन जरूरत में कुंडली को मिलाया नहीं गया, डाकिया ग्यारह रूपये का मनीआर्डर (धनादेश) और लगन का पार्सल लेकर आता है । विवाह हुआ, पर समय आते ही घर का सामान भी बिक गया, पति–पत्नी में वही परम्परागत मनमुटाव । बर्तनों का सन्दूक बिक गया । डॉ0 राम लाल के यहां रहने की व्यवस्था की गई, पर वहां सब बदला–बदला । वृद्धावस्था में लगे लांछन पर मानसिक तनाव और उस वृद्ध की जिन्दगी मानो निरस्त सी हो गई ।

गिद्ध :

सामने के पुराने वृक्ष पर गिद्ध बैठे देख उसे अपने बीते दिनों की याद आती है । बीजी और बाऊ जी कौशिक के व्यवहार पर क्षुब्ध हैं । दोनों में भी कहा सुनी हो जाती है । वे एक लड़की की शादी को लेकर परेशान हैं । नौकरी भी नहीं लगी है, इसके लिए एक मंत्री के मित्र नत्थी सिंह के पास जाते हैं । नत्थी सिंह फोन से बात कर बताता है कि मंत्री के पी0ए0 को कह दिया है कि हम आ रहे हैं । मंत्री नहीं मिले, प्रार्थनापत्र नत्थी सिंह ने ही ले लिया । आश्वासन मिलता है कि काम हो जाएगा । एक दिन वह लड़की मंत्री जी के यहां फोन करती है तो उनकी धर्मपत्नी से बात करती है, पर ऊटपटांग और निराश वह लौट जाती है ।

हमदर्दी :

सड़क के एक किनारे असहाय भिखारी पड़ा हुआ है । अनेक राहगीर उसकी सहायता को दोड़ते हैं और उससे उस का हाल जानना चाहते हैं । वह अपनी बे–रोजगारी

और आज की भ्रष्ट अफसरशाही पर रोता हे, उसे कोसता है । लोग बाग उसकी दुर्दशा पर हमदर्दी दिखाते हैं ।

प्रभामंडल :

एक प्रसिद्ध, विद्वान और सिद्धमहात्मा थे, जिनका लोगों में बड़ा सम्मान था, आर्शीवाद प्राप्त करते थे वे लोग । सुशीला नाम्नी लड़की अपनी हथेली पर पान की गिलोरी को लेती है, जो एक रंग–बिरंगी सी वस्तु है । महात्मा घर–बार छोड़ कर विरक्त हुए थे, क्योंकि उनके चाचा वगैरह ने सब कुछ हड़प लिया था । अब वे गरीब बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए आश्रम में विद्यालय चलाते हैं । उनके यहां पब्लिक स्कूलों जैसी सभी सुविधाएँ थी । उनके चरण जल से अनेक रोगियों के रोग ठीक हो गए थे, इसलिए भक्तों की उन पर अपार श्रद्धा थी । एक प्रार्थना भवन (प्रेयर हॉल) में राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बाबाजी की आरती हो रही है, उनका प्रभामंडल बिखरा है, पर वे ड्राइंगरूम में अकेले और गुमसुम खड़े हैं ।

किस कीमत पर :

एक साधारण परिवार की लड़की पढ़ लिखकर नौकरी करने लगी है, किन्तु अविवाहित है । उसका परिचय श्याम नामक पुरूष से होता है । जो उसे नयी प्रेरणा शक्ति देता है । दो–तीन वर्ष तक श्याम के साथ उसका घूमना–फिरना छिपा रहा, परन्तु अब सभी जान गए थे और कहते–सुनते थे कि दोनों विवाह क्यों नहीं कर लेते । उसके छोटे भाई–बहनों का विवाह हो जाता है, पर वह खूबसूरत और नौकरी पर रहते हुए भी अविवाहित क्यों हैं ? कितनी ही बार कहने पर श्याम उससे शादी नहीं करता है, न ही अपना प्यार छोड़ पाता । वह विवश है । वह अब उससे तटस्थ रहने की कोशिश करने लगी और रोहित के घर आने–जाने लगी, वहां से वह किताबें लाकर पढ़ने, पढ़कर लौटाने

और उन पर बातचीत भी करने लगी । रोहित का दायरा श्याम से बड़ा लगा उसे । रोहित को उस पर दया आ रही थी और वह उदास थी ।

कहानी नहीं :

सात–आठ देश–विदेश के आगन्तुकों का मांडू में स्वागत करते निकलते हैं वे और मांडू को स्विटजरलैंड से भी खूबसूरत बताते हैं बरसात के मौसम में । कभी यहां पुरातत्व विभाग के साधारण कर्मचारी थे, पर अब सेवा निवृत्त होकर यहां दर्शक बन गए हैं । वे अभिनेता और अभिनेत्रियों की फोटो दिखाते–दिखाते रानी रूपमती की पैंटिंग दिखाते हैं जो कला और कलाप्रेमी का रिश्ता दर्शा रही है । रानी रूपमती और सिपाही बाजबहादुर का घोड़े पर सवार चित्र भी था जो साम्प्रदायिकता का विरोधी था ।

वहीं आलमशाह का मकबरा भी था । जिसकी दीवारों पर आधी हिन्दू शैली और आधी मुस्लिम । वहाँ बनी मस्जिद को वे दिल्ली की जामा मस्जिद से भी बड़ी मानते हैं । बताते हैं पहले यहां संस्कृत विश्वविद्यालय था और कालान्तर में यहां कब्रें बन गयीं ।

मांडू देखने मात्र का स्थल नहीं, प्यार करने का स्थल है । रानी रूपमती और बाजबहादुर के आवास भवन । वे मांडू पर इतिहास लिखना चाहते हैं और उसे राष्ट्रीय ख्याति का स्मारक बनवाने की कोशिश में हैं ।

ज्वालामुखी :

सावित्री एक ऐसी असहाय नारी का अंग है जो पति नामधारी पुरूषों के अत्याचार और उत्पीड़न को सहती है । सावित्री 13 वर्ष तक जिस घर में बालक की तरह पली और बड़ी हुई, वहीं अब वह ग्रहिणी बन गई थी । महाराज उसे कष्ट देते हैं । वह मैट्रिक कर नौकरी करना चाहती है तो महाराज बाधा डालते हैं, पर बलदेव काका सहायता

देते हैं । वह नौकरी करने जाती है तो एक दिन महाराज उसे घर के आंगन में मार लगाते हैं । उसका पुत्र मुन्ना है जो इस उत्पीड़न से क्षुब्ध होता है । सावित्री के अन्दर-बाहर ज्वालामुखी धधक रहा है ।

अलग-अलग समय :

यह कोई विशेष कहानी न होकर प्रेम की गाथा है जो अलग-अलग समय पर अलग-अलग रूप से उभरी हैं ।

जंग :

रमा अपने पिता की इकलौती सन्तान पुत्री थी । पिता मर चुके थे, माँ वृद्धा थी । गांव में घर, खेत, कुंआ और मंन्दिर सब कुछ था । रमा अच्छी पढ़ लिखकर "ए ग्रेड" की नौकरी में है । सरकारी आवास के बाहर लॉन में बैठी हैं कि वृद्धा माँ आ जाती है । रामा का एक नौकर है रामू । वे मां की देख-रेख करते हैं, अच्छा खाने-पीने को देते हैं, परन्तु उनका जी फिर भी मचलता रहता है । रमा ने पड़ोस के बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूल-सा खोल रखा है, तो बूढ़ी मां उन बालकों को डांटती-फटकारती और गाली देती है तो पड़ौसन उससे लड़ने आ जाती हैं, रमा को दुःख पहुंचता है । खाने-पीने के नाम पर वह गुप्ता जी नाम के किसी अधिकारी से चुगली कर देती हैं जिससे रमा को शर्मिंदा होना पड़ता है । एक दिन वह बुढ़िया रामू और उसकी पत्नी से भी लड़ बैठती है कि रामू नौकरी छोड़कर चला जाता है । रमा बहुत ही खिन्न और दुःखी है ।

आखिर माँ-बेटी में अनबन हो जाती हे और बुढ़िया गांव आ जाती है, वहां का मकान, कुंआ और मन्दिर बेच देती है । यह खबर पाकर रमा की मानसिक शक्ति समाप्त होकर तनाव बढ़ जाता है । एक बार वह गौतम नौकर के साथ घर थी कि रात को चोर घर में घुस आए । गौतम को डराया-धमकाया और मारपीट कर बुढ़िया को भी बांध कर

डाल दिया । सुबह पड़ौसियें ने देखा तो रमा को फोन किया । वह आयी, सारी घटना की जानकारी प्राप्त की तो बहुत ही दु:खी हुई । फिर वह वृद्धा–मां को साथ ले गयी, पर अब भी वह मां जंग (युद्ध) में लड़ते–लड़ते घायल हुए सिपाही की तरह शान्त और तृप्त दिखाई दे रही थी ।

6. **खाक इतिहास :**

यह गोविन्द मिश्र का छठा कहानी संग्रह है । कुल दस कहानियों का यह संकलन न केवल तथ्य की दृष्टि से विविधता–भरा है अपितु शिल्प की ताजगी और प्रौढ़ता से परिपूर्णता की ओर संकेत भी है । इस में संकलित कहानियाँ हैं – सन्ध्यानाद, आल्हखंड, मुझे घर ले चलो, सडांध, आने वाली सुबह, आवाज खुलती हुई, फांस, उल्कापात, वरणांजलि और खाक इतिहास ।

सन्ध्यानाद :

यह इस संकलन की विशिष्ट कहानी है जो पीढ़ियों के अपने अन्तर्द्वन्द्व और पति–पत्नी के मध्य ढलती हुई उम्र के साथ सोच में भी बढ़ते जा रहे अन्तर को सूक्ष्म मनोविश्लेषण के आधार पर स्पष्ट करती है । सेवा निवृत्त के बाद भी पति अपनी पत्नी के साथ रहना (सोना) चाहता है, परन्तु वृद्धा पत्नी लड़कों और बहुओं के सामने इसे उचित न मान पति से अलग रहती है । उसके छतरपुर चली जाने पर पति तार कर उसे बुला लेता है और उसके साथ वही व्यवहार, मार–पीट । पत्नी के अलग रहने पर वृद्ध पति स्वंय को अकेला महसूर कर तरह–तरह के ढोंग रचता है ।

आल्हखंड :

इस कहानी के पढ़ने से ऐसा लगता है कि कथाकार ने अंडमान निकोबार द्वीपों

की यात्रा की है, जहां उत्तर प्रदेश के कुछ स्वतंत्रता सेनानियों से भेंट होती हैं जिन्हें अंग्रेजों ने काला पानी की सजा दी थी और अब वहीं बस गए हैं । उनमें एक है मुसई सिंह जो कैदियों का सरदार हो गया है । उसे रानी लक्ष्मीबाई की गाथा और आल्हा गाना आता है । कथाकार ने अंग्रेजों और जापानियों के स्वभाव में अन्तर बताते हुए अंग्रेजों को श्रेष्ठ ही माना है ।

मुझे घर ले चलो :

इस कहानी में "गनेसी" नाम के अस्थायी रूप से नियुक्त कर्मचारी की नौकरी छूटने की घटना है जो कर्मचारी एकता का प्रदर्शन कर हड़ताल करने का शिकार बनता है गनेसी एक प्राइवेट कम्पनी में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के पद पर लगता है और लिफ्ट पर काम करता है । उसकी पत्नी है श्यामली और बच्चे हैं । अचानक कर्मचारी यूनियन हड़ताल कर देती है । गनेशी को अनचाहे भी बलपूर्वक हड़ताल में शामिल कर लिया जाता है । कम्पनी मालिक सेठ लोग इससे नाराज हो जाते हैं और तीन कर्मचारियों को बर्खास्त कर देते हैं । हड़ताल समाप्त होने पर वह कम्पनी मालिकों से प्रार्थना करता है, उनके समाने गिड़गिड़ाता है, फिर भी कुछ नहीं हो पाता और वह चिन्ताग्रस्त होकर बीमार पड़ जाता है, उसे अस्पताल में भर्ती कर दिया जाता है, परन्तु उसे वहीं धुन सवार है । श्यामली अस्पताल में खाना लेकर जाती है, तब भी उसकी वही दशा है और उसे मिलने नहीं दिया जाता, वह उदास है, अंत में "मुझे घर ले चलो" कहता हुआ गनेशी प्राणत्याग देता है ।

सड़ांध :

यह कहानी आत्म संघर्ष के रूझान पर टिकी है । पत्नी को अपने पति की नौकरी (कमाई) से असन्तोष है, वह घर में समस्त आधुनिक सुविधाएं देखना चाहती है । चौक में रामलीला हो रही है जो रात भर चलती है और एक ही रात में पूर्ण होकर राम को सिंहासन मिल जाता है और भीड़ चली जाती है । पत्नी को अपने पति पर विश्वास तो

है पर कार्यालय की अन्य नौकर लड़की पर कुछ सन्देह है, इसीलिए वह स्वंय भी नौकरी करने की बात कहती है । उसे रिश्वत लेना भी पसन्द नहीं पर अपनी ईमानदारी जिन्दगी पर आत्मविश्वास है ।

आने वाली सुबह :

आलम का घर में आना पंडित उमाशंकर को अच्छा नहीं लगता है । वह रमेश का मित्र है, इसलिए आता जाता है । खाने की मेज पर एक साथ दोनों मित्रों को बैठा देख पंडित जी सोच में डूब जाते हैं एवं पत्नी को डांटते हैं । वे प्रतियोगी परीक्षाओं का भय दिखाकर रमेश को आलम से दूर रहने का सुझाव देते हैं, परन्तु रमेश "अच्छा है, क्लासफैलो है, डिस्कस करता है" कहकर पिता की बात काट देता है । आलम के आने–जाने में कोई कमी नहीं आई, परन्तु उमाशंकर जी को दोनों के मध्य तनाव होने की प्रतीक्षा है । एक बार दशहरा अवकाश में पंडितानी मैके चली गयीं और पंडित ने महाराजिन रखली, फिर भी दोनों की मित्रता में कोई कमी नहीं आई । अचानक एक दिन पंडितजी को ज्वर चढ़ आता है और आलम उनकी देखभाल करता है, माथे पर पट्टियां भिगा–भिगा कर रखता है और आलम का सेवा भाव उन्हें प्रभावित करता है । रमेश और आलम की यह मित्रता साम्प्रदायिकता पर करारी चोट है ।

आवाज–खुलती हुई :

इस कहानी में बालमनोविज्ञान की सूक्ष्म पकड़ से कथाकार की गहरी अन्तदृष्टि का परिचय मिलता है । एक बालक को अपनी स्वतंत्रता के मूल्य पर कुछ भी नहीं चाहिए। छठी कक्षा में पढ़ने वाला बालक साईकिल से स्कूल जाना चाहता है । दिल्ली के चिड़िया घर को भी जीजी के साथ देखने जाता है । फिर फोन आता है और राजापुर में भैया रेडियो की दुकान खोल लेते हैं तो बालक भी रेडियो बनाने सीखने की बात करता है और भाई के साथ पढ़ने की भी ।

फांस :

कहानी हृद्‌य परिवर्तन की घटना, ग्रामीणजनों की निश्छलता, सहजप्रेम के भावों का प्रदर्शन करती है । कहानी में दो नवयुवक, जो गाँव से भागकर नौकरी की तलाश में शहरी दंदफन्दी भरे विचारों को लेकर रामपुरा गाँव के एक घर में चोरी के विचार से घुस आते हैं । पल्टू की माँ से परिचय के दौरान उससे उसके गाँव का नाम जान लेते हैं और स्वंय को भी उसी गाँव का रहने वाला बताते हैं । इस प्रकार पल्टू की माँ, उनसे भाई का रिश्ता जोड़कर प्रसन्नता जाहिर करती और निष्कपट भाव से उन्हें पल्टू का मामा बना लेती है । बहन की ओर से भाई का भोजन स्वागत होता है पश्चात् दूसरा युवक इस सहज भाव से अलग अपने चोरी का उद्‌देश्य पूरा करने के लिए घर की एक कोठरी में घुस जाता है परन्तु अपने साथी और पल्टू की मां का का निष्कपट वार्तालाप से वह दहल जाता है और चोरी का विचार त्याग देता है और पल्टू की मां के इन शब्दों ने "कुछ चाउनै हतो का ...... हमायें देत को होय तो बताव सुनौ है कि शहर में कमऊँ पूरोई नई परत .... ।"[1] ने उनके रहे सहे विचारों को भी त्यागने पर मजबूर कर दिया और अन्त में वे चलते समय भाई बहिन के पवित्र रिश्ते को मान देते हुए पल्टू की मिठाई के लिए पाँच रूपये का नोट देने पर मजबूर हो जाते हैं और पल्टू के पूछने पर मामा अब कब आओगे सुनकर पानी–पानी हो जाते हैं ।

कहानी में सहज स्नेह द्वारा बुरी मानसिकता को भी सहज स्नेह बंधन में बाँधने का प्रयास किया गया है ।

उल्कापात :

यह कहानी नारी के सम्मान को प्रकट करती है । घर में दादा–दादी और माँ–बाप के अतिरिक्त दो बालिकाएं, जो पढ़ती हैं । बालिकाओं की माँ अपने गाँव चली गई

---

1. फ़ाँस – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 74

और नौकरी करने लगीं । लड़कियाँ को मां की चिन्ता होती है । मां ने पत्र में लिखा है कि वह दीपावली की छुट्टी में आयेंगी, पर नहीं आयी । पिताजी किसी अन्य स्त्री से सम्बन्ध रखने लगे हैं, जिसका पता एक लड़की को घुमाने ले जाने पर चलता है । माँ दिवाली की छुट्टी में भी नहीं आयी तो यह भेद खुलता है कि पति के अपमान और सास–श्वसुर के खरे स्वभाव के कारण वह नहीं आना चाहती । यदि पति राजी हो भी जाता है तो दादा–दादी उसे रोक देते हैं । गत्तो और उसकी बहन कक्षा में फेल हो जाती हैं तो उन्हें फटकार मिलती है और दोनों बालिकाएं चुपचाप रोते–रोते भूखों ही सो जाती हैं । इस प्रकार उन मासूम बच्चियों पर माँ के अभाव में एक उल्का पात–सा होता है ।

वरणांजलि :

यह कहानी संतति–बिछोह के निमितकोसे बताती है आदमी की संवेदना का वृत्त कितनी दूर तक जाता है । उसमें की बच्चू सिंह टमाटरन, गनेशन–माधवन की झाँकियाँ, हमें लेखक के पुत्र की नहीं, अपने बच्चों की आकृतियूं–स्मृतियाँ में ले जाती हैं । ऐसा लगता है – कथाकार एक चित्र को देखकर किसी घटना की स्मृति में खो जाता है । लेखक का 10 वर्षीय बालक तैरते–तैरते डूब जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है, तो लेखक को असहय दु:ख होता है । वह अचेत बालक को थपथपाता हुआ उसकी बहन और माँ की दुर्दशा पर खिन्न है । जल तो तुम मुझे देते, पर असमय में यह कैसा विधि का विधान कि पिता ही पुत्र को जल देने पर विवश । अचानक एक रात वह स्वप्न में बालक को देखता है और जागने पर आँखें नम हैं ।

इस कहानी मे संसार की असारता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।

खाक इतिहास :

यह एक प्रेम गाथा के अतिरिक्त लुडविख और मारिया के जीवन की स्मृति–गाथा है । लुडविख चैकोस्लवाकिया के युद्ध में शहीद हो जाता है । मारिया यात्रा के समय उस स्थान पर पहुंच कर उसी की याद में खो जाती है, वह लुडविख की पत्नी थी । टाम से जाते समय मारिया खिड़की के सहारे बैठी वहां की प्राकृति छटा को निहारती है सैलिस्को की चोरी । मारिया अब परम्परानुसार दूसरी शादी करने को तैयार नहीं है, क्योंकि वह लुडविख की इंसानियत, बुद्धिमानी और साहस से प्रभावित थी । वह हंगरी और आस्ट्रिया जाकर मुझे भी वहां ले जाना चाहता था, पर मैं नहीं पहुंच सकी । वह उसकी स्मृति में खो जाती है और होटल लौटते समय उस स्थान पर रूककर, जहां शादी का प्रस्ताव मिला था, कुछ पंक्तियाँ गुनगुनाती है । थोड़ी देर बाद मारिया भी अपने साथियों से बिछुड़ जाती है और उसका जीवन "खाक इतिहास" बन जाता है ।

7. **पगला बाबा :**

इस संग्रह में भी कुल 10 कहानियाँ संग्रहीत हैं जिनमें "एक बंद उलझी", "पगला बाबा", "अर्धवृत्त", "प्रतिमोह", "मायकल लोबो", "सुनंदी की खोली", "आदेश", "गुरूजी", "सिर्फ इतनी रोशनी" और "अर्ध–ओझल" ।

"एक बूंद उलझी" :

यह कहानी मध्यम वर्ग के एक ऐसे इंस्पेक्टर की कहानी है जो आनन्द को ही जीने की सार्थकता मानता रहा है तथा धन ही सर्वस्व है । फलतः वह अनेक लोगों से धंन ऐंठता है और शराब पीना, अच्छी वस्तुओं को क्रय करना तथा बच्चों को अच्छा परिधान पहनाना उसका स्वभाव बन गया हे । इसी कारण वह अपनी पत्नी (मेनका) को भी श्रेष्ठ और अंग्रेजी महिला बनाना चाहता है और उसे क्लब आदि में भेजने लगता है । स्वतन्त्रता

प्राप्त पत्नी अन्य व्यक्ति से स्नेह करने लगती है जिससे पति–पत्नी के मध्य सन्देह पैदा हो जाता है, यहां तक कि वह छिपकर सन्देह की पुष्टिकर लेता है । दोनों के मध्य मतभेद पैदा हो जाता है और पत्नी बच्चों को लेकर अलग जाकर रहने लगती है । इससे इंस्पेक्टर के जीवन मेंरिक्तता आ जाती है । वह पत्नी और बच्चों को लौट आने के लिए पत्र लिखता है, भूल के लिए क्षमा मांगता है, परन्तु कठोर हृद्‌य पत्नी एक नहीं सुनती । वह बीमार पड़कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर देता है और एक बूंद उसकी आँखों में आकर उलझ जाती है ।

पगला बाबा :

"काशी में मृत्यु होने से स्वर्ग प्राप्त होता है" इस हिन्दू वादी मत को प्रगट करने वाली यह कहानी विशुद्ध एवं निरपेक्ष लोक सेवा के श्रेष्ठ मानव–धर्म को आत्म–समर्थन प्रदान करती है । इसी उद्‌देश्य से एक ग्रामीण वृद्ध अपने दादा भैया के साथ काशी पहुंचा था कि वहां के मणिकर्णिका घाट पर मृत्यु होगी तो स्वर्ग मिलेगा । किन्तु शीघ्र ही उसे यह विश्वास अविश्वसनीय लगने लगा और वह अनाथों, निराश्रितों के शव दाह–कार्य को स्वंय ही करने लगा तथा "पागला बाबा" के नाम से जाना जाने लगा ।

अर्धवृत्त :

इस कहानी का परिवेश पारिवारिक होते हुए भी एक नया अनुभव देता है । आनंद और सुखी दाम्पत्य जीवन में परस्त्री के आगमन पर बौखलाहट, क्रोध, आक्रोश और सौत (सपत्नी) को मार–पीटकर अपमानित करने की इच्छा से प्रेरित एक विवाहिता स्त्री का यथार्थ और सूक्ष्म चित्रण इस कहानी में किया गया है । "रति" नामकी स्त्री हस्पताल में भर्ती है और रोहित उसका लड़का है । पति ने दूसरी पत्नी रख ली है जो रति से ईर्ष्या करती है । पति भी उसके बन्धन में है ।

प्रतिमोह :

इस कहानी में बम्बई महानगरी की झोपड़ पट्टी के जीवन की वस्तु स्थिति को चित्रित किया गया है । बम्बई में बाहर से आने वालों की भीड़, निवास का अभाव, बढ़ती झोपड़पट्टियों, अधिकारियों द्वारा उन्हें उखाड़ना, गरीब कबाड़ियों द्वारा उनका पूर्ननिर्माण जैसी नित्यप्रति की बातें हैं । एक निर्धन कबाड़ी देहात से आये उस अपरिचित बे-मकान बालक को जिस का छोटा-सा बक्सा रख लेने में भी वह नाराज हुआ था, अपनी छोटी और तंग जगह झोंपड़ी में आश्रय देता है । परिस्थितिजन खीझ के बावजूद मानव हृद्‌य से निःसृत प्रतिमोह के दर्शन पाठकों को इस कहानी में होते हैं ।

मायकल लोबो :

यह एक वकील की कहानी है जिसमें स्वभाव और आचरण विषयक परिवर्तन के सोपान स्पष्टः दृष्टिगोचर होते हैं । लोबो की शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा व्यर्थ गयी, किन्तु एक रात अपनी पुत्री के मुंह से निकल पड़ा "पापा, मैं कब तक आपको इस तरह उठाती रहूंगी ?" और इस मर्म वाक्य से उसकी आँखें खुल जाती हैं वह शराब छोड़ देता है। फलतः वही वकील लोबो सप्ताह में एक बार चर्च के समीप पहुंचकर शराब-पीड़ितों की बात सुनकर घृणित और अपमानित जीवन के कष्टों को दूर करने के प्रयास में संलग्न हो जाता है ।

सुनन्दो की खोली :

बम्बई नगरिया में "चाल" की अपनी विशिष्टता है । "चाल" वह इमारत है जिसकी कई मंजिलें होती हैं और हर मंजिल पर कई कमरे होते हैं । एक-एक कमरे में एक-एक परिवार रहता है । ऐसे कमरे को "खोली" कहते हैं । बम्बई में "खोली" का होना गौरव की बात है । कितनी ही भरी जवानियाँ खोली के कुंठापूर्ण वातावरण से ग्रस्त

और पराश्रित हो तिल–तिल घुटकर मिट जाती हैं । "सुनन्दो की खोली" पर उनका कब्जा था । उसमें छह प्राणी रहते थे । सुनन्दों चार भाई थे । उसकी खोली सबसे ऊपरी मंजिल पर और कोने वाली थी । भाईयों में एक चित्रकार भी था । वह चित्रों की प्रदर्शनी लगाने की सोचता है, पर अन्य भाई सहमत नहीं होते । खोली सहित ओयरा हाउस के 5 लाख रूपये मिल रहे हैं, पर वे बेचना नहीं चाहते । किरण के भविष्य के साथ कहानी समाप्त हो जाती है ।

"आदेश" :

यह कार्यालय के एक लिपिक की कहानी है जो अपने स्थानान्तरण को एक वर्ष तक विचित्र ढंग से स्थगित करा लेता है । लिपिक स्थानान्तरण के आदेश से बेचैन होकर उसे स्थगित कराने के लिए अनेक उपाय करता है । लिपिक हल्द्वानी में पिछले छः वर्षो से कार्यरत है और इलाहाबाद को स्थानान्तरण हो गया है । अधिकारी "रणजीत" कठोर है, वह अपना आदेश वापस नहीं ले सकता, पर वह बाबू "रिगार्ड्स पे" के बहाने उसकी खुशामद करता है ।

वह बाबू अपनी बात को सीधे रूप से स्पष्ट न कर बहकी–बहकी बातें करता है ।

गुरू जी :

इसमें भी बम्बई महानगर में नौकरी की खोज में मानव प्रवाह से उत्पन्न स्थिति को चित्रांकित किया गया है । एक युवक नौकरी की खोज घूमता हुआ कष्ट पूर्ण संघर्ष झेलता है और असफलता में भी आशा के सूत्र में आगे बढ़ता हुआ भगवान की कृपा मान गुरू के प्रति अडिग आस्था रखता है । युवक गांव से शहर आया है, गांव में उसकी पत्नी और दो बच्चे भाई के पास रहते हैं । गुरू जी कार्तिकेय और रामेश्वर जी से मिलकर नौकरी पाने की सलाह देते हैं ।

सिर्फ इतनी रोशनी :

कहानी में सौतेले पिता के स्नेह को उजागर किया गया है । एक तलाकशुदा स्त्री, जो ब्राह्मणी थी उसक पुत्री को एक मुसलमान पिता अपनाता है । उसे अनुपम एवं अद्‌भुत स्नेह देता है उसमें धर्म, जाति, सगा सौतेला की सीमा रेखा को समाप्त कर देने की क्षमता है । "कुकी" पुत्री को वह असीम स्नेह देता है कूकी को खून की गम्भीर बीमारी हो जाती है, बच्ची की जिद पर वे उसके असली पिता से उसे देखने का अनुरोध भी करने जाते हैं जो कि ठुकरा देते हैं । बीमारी से बच्ची चल बसती हे जो बच्ची उनके सुनसान जीवन में रोशनी भर गयी थी, बुझ गयी थी । कुछ इन्सान सिर्फ आत्मीयता और स्नेह लुटाना जानते हैं जो अन्त में कूकी की माँ को अपनी बच्ची मान लेने पर विवश होने पर झलकता है । उनके शब्द – "सुनो सबेरा क्या होता है ? जब सब कुछ अंधेरे में छिपा हो और सिर्फ इतनी रोशनी कि अंधेरा दिखाई दे ...... बस । पूरी रोशनी .... फिर तो दिन हो जाता है ।" सहसा उन्हें लगता है कि वे कूकी हो गयी है .... वही नजरें जिससे उस बच्ची ने उस आदमी के भीतर का आलोक बहुत पहले देख लिया था ।

अर्थ ओझल :

यह कहानी उस प्राध्यापक से सम्बन्ध रखती है जो परिवार को दुर्लक्षित कर अपने तेज विद्यार्थियों को बौद्धिक प्रगति के लिए अहर्निश अध्यापन करता रहता है, किन्तु सामाजिक और पारिवारिक सन्देह के फलस्वरूप वह योग्य मूल्यांकन के अभाव में भंयकर उपेक्षा का शिकार होकर काल का ग्रास बन जाता है । पं0 दीनदयाल का पुत्र प्रोफेसर साहब से मिलता है । फतेहपुर इंटर कॉलेज में पं0 दीनदयाल पढ़ाया करते थे । वे कभी भी ट्यूशन नहीं करते थे । प्रोफेसर साहब पंडित जी का काफी प्रशंसा करते हैं । वे अंग्रेजी के विद्वान थे, नम्र स्वभाव वाले भी थे । इनकी नित्य की दिनचर्या का वर्णन करते हैं । प्रोफेसर साहब पंडित जी की प्रशंसा करते–करते भाव विभोर हो उठते हैं और उनकी दी हुई शिक्षा को आज याद करते हैं ।

इस प्रकार "पागल बाबा" कहानी संकलन की प्रत्येक कहानी किसी न किसी मूल्यात्मक आदर्श की ओर संकेत करती हैं । अतः सभी कहानियाँ सुपाठ्य, भाषा–शिल्प और कथ्य की दृष्टि से अलग पहचान बनाती है ।

8. **आसमान कितना नीला :**

मिश्र जी की यह कहानी संग्रह 1992 में मेरे शोधकार्य के दौरान ही प्रकाशित हो चुका है इसलिए इस संग्रह को भी मैं अपने शोधकार्य में शामिल करना अपना कर्तव्य समझती हूँ । गोविन्द मिश्र के इस आठवें कथा संकलन की कहानियों का कथ्य सहज और उद्देश्योंन्मुख कहा जायेगा किन्तु इन कहानियों में नवीनता के नाम पर कोई चौंकाने वाला शिल्प नहीं है ।

सामाजिक प्रश्नों से जुड़ा कोई लेखक सामाजिक परिवेश में गहराई तक स्तर–स्तर फेली कुत्साओं, अंतविरोधीओं–ह्रासात्मक प्रवृत्तियों से आँखें नहीं बचा सकता । मिश्र की इन कहानियों में अनेक उलझन भरे प्रश्न उभरते हैं जिन्हें लेखक ने सकारात्मक दिशा देने का प्रयास किया है । पहली कहानी "आसमान कितना नीला" एक खण्डित राग की कहानी है जिसमें विभुक्षाग्रस्त महत्वाकांक्षिनी नायिका सारी रागपूर्ण स्थितियों को दर्प दंश से काट फैंकती हैं । यह कहानी एक सवाल उठाती है । क्या नई नई चीजों के आगे हार्दिकता स्नेह और मूल्यवत्ता को पीछे नहीं छूट जाना होगा ?

"कालखण्ड" कहानी स्वतन्त्रता आन्दोलन के कठिन दिनों का आंकलन हैं "निष्कासित" एक सत्यनिष्ठ, ईमानदार उच्चाधिकारी का अपने अधीनस्थ एक भ्रष्ट कर्मचारी के प्रति किये गये कठोर फ़ैसले का आत्मा लोचन है "राम सजीवन की माँ" कस्वाई जिन्दगी में गौण प्रश्नों पर भड़कती कलह–द्वेषादि प्रवृत्तियाँ पर पारस्परिकता की अजेयता स्थापित करती है । "धुंधलका" कथ्य के पुरानेपन के बावजूद अंधी आध्यात्मिकता, पाखण्ड और

निर्जीव कर्मकाण्ड पर एक टिप्पणी है । खुली जीवन चर्या जो सर्वत्र व्याप्त ईश्वर को अपने भावों में उतरे उसकी जगह रूकमणी कैद है मात्र दिन चर्या में अगर वह बाहर की ओर बहती तो कैसे खेती लहलहाती । छवि एक दंश पूर्ण कटाक्ष है कुलीन एवं भद्र परिवारों की युवतियों के विवाह प्रस्ताव नकार कर हरिजन युवती से विवाह रचाकर समाज कल्याण के परम आकांक्षी तपन सिन्हा की पोल तब खुलती है जब वह उस वर्ग में भी उच्च वर्ग की नफासत संस्कार और सौन्दर्य की तलाश करता है ।

"यो ही खत्म" :

एक लम्बी कहानी है । जिसमें पत्नी के प्रति पति एवं रूढ़िग्रस्त समाज के अकथ असह्य अन्याय–अतिचारों के लम्बे–लम्बे विवरण हैं कुचली प्रताड़ित औरत बहुविध क्रूरताओं से इतनी जड़ और निःसंग हो चुकी है कि उसे अपने पति की मृत्यु हल्के से भी नहीं छू पाती ।

"अवरूद्ध" :

आजादी की दुखदायी परिणति की कहानी है । इस संग्रह की सर्वाधिक सम्पन्न कहानी "आकरा माला" है में लेखक को चेतना पक्षधरता और अभिव्यक्ति की मुखरता अपनी संवेदना में बेजोड़ है, एक गंवई दम्पत्ति की उस त्रासदी का बयान खूब निखरकर सामने आया है, जो महानगर की सुरसामुखी बुभुक्षाओं और प्रलोभनों में फंसकर न केवल अपनी अस्मिता और पहचान खो बैठता है बल्कि अपनी जीवन शैली भी खो बैठता है ।

इन कहानियों में गहरी करूणा, संवेदना, की सघनता तथा व्यापक मानवीय सोच की, अंतर्दृष्टि लक्षित होती है, भाषा की भी एक अपनी अलग तरह की संस्कारशीलता निर्मित हुई है, मगर वे भाषा के स्तर पर अभी जैनेन्द्रिय विन्यास से मुक्त नहीं हो पाये हैं । इसका महज एक उदाहरण पृ0 116 के एक ही पैरा में – "दौड़ आयी, पैनी हो आया" "चेहरा सूख आया" इसके ज्वलत साक्ष्य हैं ।

गोविन्द मिश्र की कथा संग्रह हिन्दी कथा साहित्य में अभिव्यक्ति के मानदण्ड स्थापित करने में पीछे नहीं है, क्योंकि वह अपने समय का एक सशक्त दस्तावेजी बयान है।

लम्बी कहानियों का संग्रह :

अपाहिज :

यह गोविन्द मिश्र की लम्बी–लम्बी छः कहानियों का संग्रह है जिसमें "जिहाद" नये–पुराने माँ–बाप कहानी संग्रह से, "कचकौंध", "अपाहिज" और "अन्तःपुर" कहानियाँ "अन्तःपुर" कहानी–संग्रह से और "प्रत्यावरोध" तथा "धाँसू" कहानी संग्रह में ली गई है । इन कहानियों की कथावस्तु यथास्थान प्रस्तुत कर दी गई है ।

प्रतिनिधि कहानियाँ :

इस संकलन मं गोविन्द मिश्र ने 12 प्रतिनिधि कहानियों को संकलित किया हे, ये कहानियाँ हैं – कचकौंध, जनतंत्र, आल्हखांड, शुरूआत, जिहाद, सुनन्दों की खोली, फाँस, खाक इतिहास, मुझे घर ले चलो, वरणांजलि, पगला बाबा, और मायकल लोबो । इन कहानियें का वस्तु विवेचन यथा स्थान कहानी संग्रहों में प्रस्तुत कर दिया गया है ।

अर्थ ओझल :

इस संकलन में 21 प्रतिनिधि कहानियाँ संकलित हैं जो विभिन्न पूर्ववर्णित संग्रहों में आ चुकी हैं, वहीं इनकी कथावस्तु प्रस्तुत की जा चुकी है । ये कहानियाँ हैं – कचकौंध, जनतन्त्र, शुरूआत, जिहाद, झला, खुद के खिलाफ, विष्कासित, अर्द्धवृत्त, राम सजीवन की माँ, धाँसू, शापग्रस्त, सिर्फ इतनी रोशनी, आल्हखण्ड, सुनन्दो की खोली, फॉस, खाक इतिहास, मुझे घर ले चलो, वरणांजलि, पगला बाबा, मायकल लोबो, और अर्थ ओझल । ये कहानियाँ मिश्र जी की प्रिय और प्रसिद्ध कहानियाँ हैं जो साहित्यिक दृष्टि से भी अर्थपूर्ण हैं ।

स्थितियाँ रेखांकित :

इस पुस्तक में गोविन्द मिश्र ने अनेक कहानीकारों की 11 कहानियों और 5 समीक्षकों की समीक्षाएं एवं कहानियों का सम्पादन किया है । साहित्यिक दृष्टि से ये कहानियाँ लम्बी और महत्वपूर्ण हैं और साठ साल के बाद की कहानियों का संग्रह है ।

कहानियाँ में चरित्र चित्रण :

"गोविन्द मिश्र की कहानियों में उर्ध्वगामी चेतना" समीक्षा में मिश्र जी की कहानियों की समीक्षा करते हुए डाॅ0 माधुरी छेड़ा ने संकेत दिया है कि गोविन्द मिश्र साहित्यकों सामाजिक परिवर्तन के शस्त्र के रूप में स्वीकार नहीं कर पाते, अपितु संकट के समय में व्यक्ति को सहारा दे पाने के रूप में वे साहित्य का लक्ष्य स्वीकार करते हैं । वे कहते हैं – "मुझे लगता है, साहित्य का असली स्वर तात्कालिकता का नहीं, शाश्वतता का है और तुरन्त समाज परिवर्तन आदि के प्रलोभन में पड़कर साहित्य को अपनी वह विशिष्टता नहीं खोनी चाहिए ।[1]

लेखक की नैतिकता को वे ठेठ उस ऋषि – परम्परा तक ले जाना चाहते हैं, जहाँ वे राजाओं को समझाया करते थे । यदि लेखक इस भूमि तक पहुंच जाता हे तो वहां एक और उसकी नैतिकता रचनाओं में शक्ति बनकर उभरती है, वहीं दूसरी ओर उसका जीवन समाज और प्रकृति की सम्पत्ति बन जाता है । भौतिक सम्पन्नता और सभ्यता नाम की यात्रा में व्यक्ति आज ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ अपने "होने" का सत्य भी उसे भर नहीं पाता । इस संदिग्धता को पाटने के लिए औसत व्यक्ति उपभोक्ता संस्कृति की उन चीजों की तरफ ताकता है जिसकी नींव सुदृढ़ नहीं है । इसीलिए शीघ्र ही उसका समस्त आल–जाल व्यर्थ हो उठता है । ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ वह गोरवान्वित महसूस कर

---

1. मुझे घर ले चलो (कहानी संग्रह) – लेखन से समाज परिवर्तन – गोविनद मिश्र – पृ0 187.

सके । धर्म, राष्ट्र समाज इनसे सम्बन्धित संकल्पनाएँ, सारे मिथ, अपनी गरिमा एवं वजन खो चुके हैं । सभ्यता की लम्बी यात्रा में जैसे मनुष्य के सभी मुख्य अंग घिस चुके हैं । फलतः वह दिखावा व भौतिकता में खोया रहता है ।

यदि गोविन्द मिश्र की कहानियों के आधार पर समग्र चरित्र का विश्लेषण किया जाये तो सभी पात्र तीन श्रेणियों में रखे जा सकते हैं – उत्तम, मध्यम और अधम ।

"दोस्त" कहानी के पात्र अधिकारी और लाइसेंस धारक, "घाव" कहानी का अधिकारी, "ऑकड़े" कहानी का ओवरसियर "जतनंत्र" के मास्टर साहब, "गोबरगनेस" का आदमी, "प्रभामंडल" का सिद्ध पुरूष, "जंग" कहानी की अधिकारी स्त्री, "आल्हखंड" का स्वतंत्रता सेनानी मुसई सिंह, "मुझे घर ले चलो" का गनेशी, "पगला बाबा" का पगला बाबा जेसे पात्र "उत्तम" श्रेणी के कहे जा सकते हैं ।

"मध्यम" श्रेणी के पात्र तो बहुत से हैं, किन्तु ऐसे भी काफी पात्र हैं जो "अधम" श्रेणी में रखे जा सकते हैं जिनका चरित्र निन्दनीय कहा जाता है जैसे – "साजिश" कहानी में सरला का पति, "हाजिरी" कहानी में, मैनेजर, "यक्षिणी का पत्र–यक्ष के नाम" प्रोड्यूसर परमेश्वर बाबू, तथा युवती, "अव्यवस्थित और "बदरंग" कहानी के पात्र, "घाव" कहानी के चापलूस और स्वार्थी कर्मचारी, "ऑकड़े" के ठेकेदार और राजेन्दर सिंह, "प्रत्यवरोध" का बस–मालिक "खुद के खिलाफ" की विमला और उसका पति, "पगला बाबा" कहानी संग्रह के कुछ पात्र ।

उत्तम चरित्र :

"दोस्त" कहानी के पात्र सरकारी अफसर और लाइसेंस धारक नागरिक का चरित्र प्रभावित करने वाला है । सरकारी अधिकारी का विचार है कि आखिर लाइसेंस तो देना ही था किसी–न–किसी को । जब उसे ही देना है तो उसका आगे क्यों नुकसान हो ? और वह

उसे लाइसेंस पर बिना किसी लोभ-लालच के हस्ताक्षर कर देता है । जब उसे अपनी जल्दबाजी या भूल का अनुभव होता है तो वह पश्चात्ताप सा करता हुआ फाइल किसी बहाने से वापस ले लेता है, किन्तु लाइसेंस धारक नागरिक उससे भी ज्यादा ईमानदार है जो क्लीयरेंस सार्टीफिकेट की प्रति उसको प्रस्तुत करता है । वह कहता भी है – "वह वाकई शरीफ आदमी है, लाइसेंस उस जैसे आदमी को ही मिलना चाहिए । दोनों के श्रेष्ठ चरित्र को उजागर यह अनुच्छेद करता है –

"सार्टीफिकेट वाकई उसने ले लिया था, दिया भी था .... इसके सबूत दफ्तर में मिल गये । उसका चेहरा फिर चमक उठा – "वाह यह कैसे हो सकता है" .... उसने हंसते हुए फाइल इसकी तरफ कर दी, इसने भी तब तक उसका आर्डर मेज पर ही उसकी तरफ सरका दिया ।"[1]

"घाव" कहानी का अधिकारी उस कस्बे का एक बड़ा अधिकारी था । वह निर्लोभी और खुशामद व चापलूसी से दूर रहता था । शायद इसीलिए दीवाली पर वह अपने खुशामदी अधीनस्थ से लड्डुओं के थाल के उपहार में से प्रसाद स्वरूप दो ही लड्डू लेता है ।

वह साहित्य प्रेमी भी है । रिक्शा में जाने की बजाय वह पैदल ही चलना पसन्द करता है । ताकि कोई उसे अपना मानकर गलत काम कराने की कोशिश न करे ।

"आँकड़े" कहानी का ओवरसियर बहुत ही कर्तव्य निष्ठ, ईमानदार और निर्लोभी है । वह ठेकेदार द्वारा बनवाई तीन चौथाई बिल्डिंग निरस्त कर दी थी और सामग्री भी घटिया श्रेणी की बता दी थी । ठेकेदार के ही शब्दों में – कड़ा है, ईमानदार भी कहते हैं । .... महकमें में धाक है । जो इसने लिख दिया तो समझिए ऊपर तक

---

1. नये पुराने माँ-बाप (दोस्त) गोविन्द मिश्र पृ0 – 38

साहबों ने ऑख मूंदकर पास कर दिया ।" ओवरसियर वस्तु विशेषज्ञ और समय–पारखी हैं । वह बेईमानी एवं खुशामद से चिढ़ता है, तभी तो रौक्स टेलर्स के पैसे न देने पर ठेकेदार को उलाहना दे बेठता है और इसी का दुष्परिणाम वह "75 रूपये" की रिश्वत के मिथ्या आरोप में जेल जाकर भुगतता है ।

"जनतंत्र" कहानी के मास्टर साहब का चरित्र भी अच्छा है । एवं शिक्षा अधिकारी के शब्दों में – "यार, लोग तुम्हें पागल कहते हैं पर तुम्हारे स्कूल का रिजल्ट हमेशा 98 प्रतिशत रहता है ।"[1] वह निर्भीक व्यक्तित्व वाला, परिश्रमी अध्यापक है । उसकी पहुंच बड़े–बड़े मंत्रियों और नेताओं तक है, अतः प्रभावशाली व्यक्ति है ।

"गोबरगनेस" कहानी का पार्टी का उत्तरदायी और कर्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ता ने नब्बे (90) लाख रूपये के विषय में तरह–तरह की ईमानदारी दिखाता है । कभी दूसरे क्षेत्र में ले जाने की, कभी सुरक्षा की, कभी व्यय दर्शाने की । वह सीधा–साधा व्यक्ति भी है ।

"प्रभामंडल" कहानी का सिद्धपुरूष प्रसिद्ध साधू बाबा है । उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली और शरीर हुष्ट–पुष्ट था । वे कभी ध्यान मग्न, कभी कीर्तन में भाव–विभोर और कभी हंसी की मुद्रा में भक्तजनों को आर्शीवाद देते थे । उनके चरण स्पर्श किए जल से रोग भी दूर हो जाते थे । वह सच्चे मानव–सेवी और देशभक्त भी थी – "वह काम जिसके लिए ईश्वर ने मुझे जमीन पर भेजा था – ऐसे धर्म की स्थापना जो लोगों को अलग करने की बजाय उन्हें एकता के सूत्र में बांधे – अपने देश के भी काम आए ....।"[2] उन्होंने जहाँ भी रहे वहां मन्दिर बनवाया । अतः वह सिद्ध पुरूष धर्मात्मा थे । वे असहायों, निराश्रितों और असमर्थो की सेवा भी किया करते थे तथा स्वदेश प्रेमी थे, इसीलिए गरीब बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए पब्लिक स्कूलों के समानान्तर स्कूलों की स्थापना कर

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ (जनतंत्र) गोविन्द मिश्र पृ0 123.
2. खुद के खिलाफ (प्रभामंडल) गोविन्द मिश्र पृ0 – 65

शिक्षार्थियों को सभी सुविधाएं उपलब्ध करायीं । बाबा जी पर भक्तों की अपार श्रद्धा थी वे राष्ट्रीय ख्याति के महापुरूष भी थे । "जंग" कहानी की रमा जो अच्छी और उच्च अधिकारिणी है, अत्यन्त सहनशील, लज्जाशीला, कर्तव्यनिष्ठ और परम्परा वादिनी भी है । वह माँ के अभद्र व्यवहार से खिन्न हैं । जब माँ पैतृक मकान, कुंआ को बेच देती है तो उसे दु:ख होता है । रमा के चरित्र की एक झलक – "रमा कितने प्रभावशाली ढंग से सोचती और बोलती है क्या कोई आदमी कर पायेगा ।"

"आल्हखंड" कहानी का देशभक्त और स्वतंत्रता सैनानी मुसई सिंह उत्तम श्रेणी का का पात्र है । वह परम देशभक्त, नम्र, हँसमुख और मधुरभाषी चरित्र है । देखिये – "चाल–ढाल में फोली की सी अकड़ .... लेकिन मुस्काराहट में छलक–छलक पड़ती नम्रता और जब–तब उभर आता व्यंग्य का बहुत बारीक पुट ।[1] वृद्ध मुसई सिंह का व्यक्तित्व अब भी प्रभावपूर्ण था । देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के कारण उन्हें कालेपानी का सजा मिली है जहाँ वह अन्य कैदी साथियों के मुखिया हैं ।

मुझे घर ले चलो कहानी का गनेसी अच्छा चरित्र है । वह कर्तव्यनिष्ठ् लिफ्टमैंन है । छोटा सा परिवार है । पत्नी भी परिश्रम कर रोजी कमाती है, किन्तु वह सीधा सादा और कर्तव्यपरायण व्यक्ति यूनियन बाजी का शिकार होकर नश्ट हो जाता है । विनम्रता का तो वह केन्द्र है । गनेसी तीसरी और पाँचवी वाला वाली लिफ्ट पर था । मलिक लोग इसी से आते–जाते थे । गनेसी को बाहर जाने के ख्याल से ही डर लगा रहा था । चिपका रहा। जो लेने आये उनसे मिन्नतें की ...."

"पगलाबाबा" कहानी का पगला बाबा नि:स्वार्थ मानव खेवी है । काशी में जाकर वे सब धर्मों के सभी जातियों के हो गये ।..... उस शाम जैसे उन्हें अपना धर्म मिल गया ।....... वे पगला बाबा हो गये । कहां के थे, क्या नाम था, कौन जाति.... धर्म..... सब पगला में डूब गया ।"[2]

---

1. पगला बाबा – गोविन्द मिश्र, पृ0 15.
2. खाक इतिहास (आल्हखंड) गो0मि0 पृ0 23.

"आसमान कितना नीला" कहानी संग्रह के लगभग सभी पात्र उत्तम श्रेणी में रखे जा सकते हैं । सुधीर, श्वेता, मुक्ति सिंह, राम सजीवन की माँ, एक्साइज कलक्टर, रामेश्वर राय, बप्पा, हंसा सभी पात्र अच्छे चरित्रवान् हैं ।

सुधीर सुयोग्य, बुद्धिमान और दिलचस्प व्यक्ति था उसकी जानकारी व्यापक थी, गोल्ड मेडलिस्ट होने की वजह से कम्पनी ने नौकर रख लिया । वह श्वेता का प्रेमी भी है क्योंकि श्वेता भी सुयोग्य डाक्टरी पास थी, टॉप किया था । आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से निमंत्रण मिला था, बजीफा के साथ ।

मुक्ति सिंह परम्परावादी मनुष्य थे जो जातिवाद को महत्व देते थे । परम देशभक्त भी था । लम्बा चौड़ा शरीर और प्रभावशाली व्यक्तित्व था ।

रामेश्वर राय कर्तव्य निष्ठ ईमानदार और सख्त अधिकारी थे । रिश्वतखोरी से सख्त नफरत थी, इसी कारण मोहन कुमार को सेवा से पृथक कर देते हैं किन्तु उसके वृद्ध पिता और गृहस्थ की दीन दशा देखकर द्रवित हो उठते हैं तथा उसके पुत्र और पुत्री को अपना मान लेते हैं एवं पत्नी का एक लाख रूपये का चैक देते हैं । बप्पा पार्वती मौसी के पिता हैं राम सजीवन की माँ साधारण नारी है । हंसा भी सीधी-सादी, भोली-भाली, ईमानदार और कर्तव्य-परायण ग्रामीण नारी है । इस प्रकार गोविन्द मिश्र ने अपनी कहानियों में कुछ उत्तम श्रेणी के अच्छे पात्रों व चरित्रों की भी सृष्टि की है ।

मध्यम श्रेणी के चरित्र :

"जिहाद" कहानी का पात्र "वह" और "मैं" चरित्र मध्यम श्रेणी के चरित्र ही कहे जायेंगे । "वह" ऐसा व्यक्तित्व है जो असाधारण नहीं था । वह क्षण में रूष्ट और क्षणभर में तुष्ट होने वाला था । इसीलिए गलत कार्य से "वह" को चिढ़ थी और वह तुरन्त नाराज हो जाता था । वह वियर-सिगरेट भी पीता है ।

"कोशिश" कहानी के मि0 चटर्जी, मिस0 चटर्जी और मैं भी मध्यम श्रेणी के पात्र हैं जो सामान्य व्यवहार करते हैं । बैठते–उठते और मिलते–जुलते हैं तथा साधारण श्रेणी का जीवन जीते हैं ।

"घाव" कहानी का अधीनस्थ कर्मचारी भी आजकल के खुशामदी और चापलूस व्यक्तियों में से है । वह अपने बड़े अधिकारी को येन–केन–प्रकारेण खुश रखना चाहता है ।

"सीधा ..... दूर तक सीधा" कहानी में "शशि" लड़की और उसके पिता का चरित्र भी आधुनिक भौतिकतावाद से परिपूर्ण है । "मैं" की नौकरी है जो स्थानान्तरण पर इधर–उधर जाता है । "शशि" अविवाहित है और पिता उसकी शादी "मैं" के साथ करना चाहता है, वह वृद्ध है ।

"अवमूल्यन" कहानी के दोनों पात्र "मैं" और संतू इसी श्रेणी के कहे जा सकते हैं । दोनों मित्र हैं, परस्पर सहयोगी हैं ।

"गिरफ्त" कहानी का दीनानाथ एक रिटायर्ड डाक्टर है, जो उत्तर प्रदेश के हरदोई का लगता है । अब वह वृद्ध है ।

"चुगलखोर" कहानी की रमांजीजी, सोहन नौकर वगैरह भी इसी श्रेणी में आते हैं । सभी का वही नारी–सुलभ आचरण और व्यवहार देखने को मिलता है । परस्पर ईर्ष्या द्वेष तथा स्वार्थ भरी भावना ।

"नये पुराने माँ–बाप" के किशोर दा और दीदी का बर्ताव भी अच्छा है, वे बच्चे–बच्चियों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं ।

"बहुधंधीय कहानी के आचार्य पद्मश्री पुलकराज जी का चरित्र मध्यम श्रेणी में ही रखा जाने योग्य है । यद्यपि उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली है, पूजा–अर्चना भी करते हैं, मिलनसार व्यवहार भी है, तथापि राजनीतिक क्षेत्र में आने के बाद उनका चरित्र मध्यम कोटि

के व्यक्तियों जैसा हो जाता है । वे एक निर्धन लड़के की नौकरी में सहायतार्थ प्रयास करते हैं । व्यसनों से भी दूर रहते हैं ।

"झूला कहानी के पुरूष और स्त्री (पति–पत्नी) दोनों ही पात्र इसी श्रेणी के हैं । सामान्य व्यवहार, सोच–विचार सभी कुछ उसमें देखा जा सकता है । पुत्र–पुत्री बहु सब हैं ।

"स्वरलहरी" के भाऊ जी "प्रत्यवरोध" के तीन तीर्थयात्री, "गोबरगनेश" पार्टी अध्यक्ष इसी श्रेणी के पात्र हैं । "धासू" कहानी का नायक "नेता" अवसरवादी है । यह हर तरह से हर अवसर पर अपनी धाक जमाए रखता है । चुनाव में, सत्तापक्ष में अथवा विपक्ष में हो, यह धाँसू ही बना रहता है ।

"कचकौध" कहानी के सहायक अध्यापक परिश्रमी हैं, समाज–सेवी हैं और स्वतंत्र व्यक्तित्व वाले हैं । परिवार भी है, बच्चे दिल्ली में सेवारत हैं । वेग्रामीण और नगरीय जीवन में अन्तर पाते हैं और दोनों वातावरणों से क्षुब्ध है । आजकल के मंत्रियों, अधिकारियों, कर्मचारियों की लापरवाही पर वे दुःखी होते हैं ।

"अपाहिज" में मालिक साहब, सतीश और एक अन्य मित्र जो अमेरिका का प्रशंसक है, साधारण श्रेणी के पात्र हैं । आधुनिक समयानुसार बीमार–विह्स्की पानी फ्लैट् फोन आदि की सुविधा फिर परस्पर नाराज होना, ईर्ष्याभाव सब वर्तमान स्वभाव है ।

"अन्तःपुर" का गोर्डे भलामानस था । अच्छी–खासी नौकरी थी । परिश्रमी भी था, शैलजा का प्रेमी भी था । लेकिन दुर्भाग्य से वह नौकरी से हटा दिया गया । अब वह स्वप्न जीवी, बुद्धि जीवी, क्रान्तिकारी बन गया था । शिवेन्द्र दूसरा पात्र है जो गोर्डे का मित्र है । वह प्रभावशाली और धाक वाला है, कोई उसके खिलाफ बोल नहीं सकता । वह भी आन्दोलनकारी है । नेतावर्ग में उसका सम्मान है । अन्तःपुर का मालिक जो उसे बराबरी पर बैठाता है ।

"खुद के खिलाफ" का "मैं" अच्छा पात्र है जो विमला को चाहता है, परन्तु विमला के पथभ्रष्ट हो जाने पर वह अपने पथ से विचलित नहीं होता है । मद्यपान धूम्रपान का आदी जरूर है । "शापग्रस्त" कहानी की रीता और उसका पति ऐसे ही पात्र/चरित्र है । "गिद्ध" कहानी के बीजी और बाऊ जी लड़की के हितैषी हैं संरक्षक हैं और उसके चौकीदार भी हैं । दोनों सामान्य गृहस्थों जैसी अनबन–झगड़ा और फिर बोलचाल । वे उस लड़की को बेटे के समान ही समझते हैं । बाऊ जी सीधे–साधे व्यक्ति हैं इसीलिए आज के नेताओं की बातों पर विश्वास कर लेते हैं । किस कीमत पर .... कहानी के श्याम और वह (स्त्री पात्र) सामान्य प्रेमी–प्रेमिका हैं । पढ़े–लिखें हैं, सुन्दर भी हैं और अच्छी–सी नौकरी भी है, पर प्रेमी–प्रेमिका ही बनकर रह जाते हैं ।

"ज्वालामुखी" की सावित्री बेचारी निर्धन घर की बालिका थी जो उसी गाँव की बहू बन जाती है । जीवन में दुःख–दर्द । करबा चौथ जैसे व्रत करती है और उदरपूर्ति हेतु मैट्रिक कर नौकरी तलाशती है । अनेक तरह से अपमान और पीड़ा सहती है ।

"हाजिरी" कहानी का लोखा मजदूर परिश्रमी और कीली का प्रेमी है । दोनों एक खदान में मजदूरी करते हैं ।

"सन्ध्यानाद" का सेवानिवृत्त वृद्ध और उसकी वृद्ध पत्नी पात्र हैं । वृद्ध का चरित्र अच्छा नहीं कहा जा सकता, जबकि वृद्धा एक लज्जाशील पत्नी और माँ है । वह लोक लज्जा का ख्याल कर पुत्र और बहुओं के साथ रहना चाहती है ।

"आने वाली सुबह" में पंडित उमाशंकर और उसका पुत्र रमेश के अतिरिक्त आलम रमेश का मित्र है । आलम और रमेश जातिवादी परम्परा से मुक्त अभिन्न मित्र हैं लेकिन पंडित जी परम्परा वादी हैं, उन्हें यह पसन्द नहीं, लेकिन अन्त में उनकी हार ही होती है जब वह देखते हैं कि आलम उनकी बीमारी की दशा में उनकी सेवा–शुश्रुषा करता है ।

"फांस" कहानी की पल्टू की माँ भोली–भाली ग्रामीण महिला है । वह स्वंय हाट–बाजार जाती है और पल्टू की देखभाल करती है । दो लुटेरे उसे लूटने को आते हैं, लेकिन अपने विशुद्ध और निष्कपट व्यवहार से उनका हृद्‌य भी बदल देती है ।

"उल्कापात" कहानी के चरित्र (पति–पत्नी) वैसे ही हैं जो आज सामान्य गृहस्थों में देखे जा सकते हैं । पति–पत्नी में मतभेद हो जाता है तो पत्नी अन्यत्र जाकर नौकरी करने लगती है । पति अन्यत्र अनुरक्त है । उनके दो पुत्रियाँ हैं । दादा–दादी का व्यवहार भी सामान्य ही है ।

वरणांजलि" का नायक अपने पुत्र की आकस्मिक अकाल मृत्यु से दुःखी है । वह कुशल तैराक है । प्रकृति प्रेमी है और सुशिक्षित भी है । वह पुत्र की अकाल मृत्यु पर अनेक प्रकार से मन की व्यथा को व्यक्त करता है । वह इतना चिन्तामग्न है कि स्वप्न में पुत्र को ही देखता है ।

"खाक इतिहास" का पुरूष पात्र है लुडविख जो स्वदेश प्रेमी और फौजी है तथं मारिया (नारी पात्र) का प्रेमी ही नहीं पति भी है । वह युद्ध में मारा जाता है तो मारिया उसे ही देखती – ढूँढ़ती फिरती है । मारिया सच्ची प्रेमिका है, पतिभक्त है, उसे पति के बलिदान पर गर्व है ।

"एक बूँद उलझी" का इंस्पेक्टर आधुनिक है जो लोभी और लालची है, उसे बाह्‌याडम्बर पसन्द हैं । वह मेनका को भी आधुनिक स्वतंत्र नारी बनाना चाहता है । परिणामतः दोनों के मध्य् खाई गहरी हो जाती है और दोनों दू–दूर "मायकल लोबो" व्यवसाय से वकील है अतः सुशिक्षित है किन्तु उसमें मद्यपान की बुरी आदत है । एक पुत्री है जो उसके पीने से दुःखी है । पुत्री के टोकने के उसका हृद्‌य बदल जाता है और वह शराब पीना छोड़ देता है । दृढ़ प्रतिज्ञ बनकर चर्च जाता है तथा लोगों की सेवा करने लगता है । वह चुस्त और आकर्षक व्यक्तित्व वाला भी था ।

"सुनंदों को खोली" में सुनन्दो को अपनी खोली से लगाव है । वह परिश्रमी है । उसका भाई कुशल चित्रकार है । वह चिड़िया भी पालता है ।

"आदेश" कहानी में एक खुशामदी, चालक और चतुर लिपिक तथा एक सख्त अधिकारी रणजीत सिंह का चरित्र है । लिपिक नाना तरह से धोखा देकर अपना तबादला रूकवाना चाहता है, परन्तु रणजीत सिंह अधिकारी अपने आदेश से टस–से–मस नहीं होते ।

"गुरूजी" कहानी में गुरूभक्त नौकर है जो सब कुछ भगवान की कृपा मान उसके ही भरोसे रहता है । युवक आत्म–विश्वासी और तेजस्वी है । हर क्षण तत्परता देखा जा सकती है । प्रयत्नशील और संद्यर्षशील भी है ।

"सिर्फ इतनी रोशनी" के कूकी के नये पिता का पुत्री के प्रति स्नेह प्रकट हुआ है। अच्छा स्वस्थ शरीर है । उनकी दूसरी पत्नी है जो महत्वाकांक्षिणी और तिकड़िमी है । "कूकी" को कुत्ते पालने का शौक है, वह दूसरों की सहायता भी करती है किन्तु स्वंय रोगग्रस्त हो जाती है ।

"अर्थ ओझल" का प्राध्यापक पं0 दीनदयाल मेघवी छात्रों की बौद्धिक उन्नतिके लिए प्रयत्शील रहते हैं । वे कुशल प्रवक्ता भी हैं । कुछ योग्य मूल्यांकन के अभाव में भयंकर उपेक्षा के शिकार हो जाते हैं ।

"निष्कासित" कहानी का पात्र मोहन कुमार है जो चापलूसी और खुशामद में विश्वास रखता है जिसका परिणाम यह निकलता है कि रिश्वत देने के कारण अफसर नाराज हो जाता है और मोहन कुमार बर्खास्त बाद में मृत्यु ।

"राम सजीवन की माँ" में जटाशंकर का प्रथम दृष्टया चरित्र कुछ अंश अशोभनीय लगता है । वह लड़ाकू और जिद्दी है । दोनों भाई घर को लेकर झगड़ते भी हैं,

"सुनंदों को खोली" में सुनन्दो को अपनी खोली से लगाव है । वह परिश्रमी है । उसका भाई कुशल चित्रकार है । वह चिड़िया भी पालता है ।

"आदेश" कहानी में एक खुशामदी, चालक और चतुर लिपिक तथा एक सख्त अधिकारी रणजीत सिंह का चरित्र है । लिपिक नाना तरह से धोखा देकर अपना तबादला रूकवाना चाहता है, परन्तु रणजीत सिंह अधिकारी अपने आदेश से टस–से–मस नहीं होते ।

"गुरूजी" कहानी में गुरूभक्त नौकर है जो सब कुछ भगवान की कृपा मान उसके ही भरोसे रहता है । युवक आत्म–विश्वासी और तेजस्वी है । हर क्षण तत्परता देखा जा सकती है । प्रयत्नशील और संघर्षशील भी है ।

"सिर्फ इतनी रोशनी" के कूकी के नये पिता का पुत्री के प्रति स्नेह प्रकट हुआ है। अच्छा स्वस्थ शरीर है । उनकी दूसरी पत्नी है जो महत्वाकांक्षिणी और तिकड़िमी है । "कूकी" को कुत्ते पालने का शौक है, वह दूसरों की सहायता भी करती है किन्तु स्वंय रोगग्रस्त हो जाती है ।

"अर्थ ओझल" का प्राध्यापक पं0 दीनदयाल मेधवी छात्रों की बौद्धिक उन्नतिके लिए प्रयत्शील रहते हैं । वे कुशल प्रवक्ता भी हैं । कुछ योग्य मूल्यांकन के अभाव में भयंकर उपेक्षा के शिकार हो जाते हैं ।

"निष्कासित" कहानी का पात्र मोहन कुमार है जो चापलूसी और खुशामद में विश्वास रखता है जिसका परिणाम यह निकलता है कि रिश्वत देने के कारण अफसर नाराज हो जाता है और मोहन कुमार बर्खास्त बाद में मृत्यु ।

"राम सजीवन की माँ" में जटाशंकर का प्रथम दृष्टया चरित्र कुछ अंश अशोभनीय लगता है । वह लड़ाकू और जिद्दी है । दोनों भाई घर को लेकर झगड़ते भी हैं,

किन्तु शान्ती भतीजी के विवाह के अवसर पर उनका हृद्य स्वतः ही बदल जाता है, वे बारात की सेवा में भाग लेने लगते हैं और शान्ती की विदा के अवसर पर वे भी फूट–फूट कर रोने लगते हैं ।

"धुंधलका" कहानी की रूक्मिणी साधारण स्त्री है जो भतीजों आलोक बगैरह के लिए मजाक का पात्र है । वह पूजा पाठ भी करती हैं, वह स्वच्छता को महत्व देती हैं । राहुल उसका भाई है और उसकी भाभी भी हैं । रूक्मिणी कुछ सख्त मिजाज वाली भी है । उन्हें गंदगी पसन्द नहीं है ।

"छवि" के तपन सिन्हा और राधा" यों ही खत्म की पार्वती मौसी और दुबेजी, "अवरूद्ध" के छक्की पांडे "इन्द्रलोक" की उर्वशी उसके पिता और "आक्रामाला" के सेठ बगैरह ऐसे ही पात्र हैं । जो मध्यम श्रेणी में रखे जाने और माने जाने योग्य हैं ।

अधम चरित्र :

गोविन्द मिश्र की कहानियों में कुछ अधम और निन्दनीय चरित्र वाले पात्रों की सृष्टि भी दृष्टिगत होती है । इन पात्रों का चरित्र एवं आचरण मानवीय दृष्टिकोण, सामाजिक आदर्शवाद और सांस्कृतिक दृष्टि से नीतिविरोधी कहा जा सकता है । असीमित रूप से मद्यपान, नग्न नृत्य, शारीरिक पतन, धोखाधड़ी और अंधी कामलिप्सा इस दृष्टि के बीच और कुत्सित कर्म हैं जो चरित्र के पतन के संकेत हैं । मिश्र जी के प्रथम दो–तीन कहानी–संग्रहों में ऐसे पात्रों की अधिकता दृष्टिगोचर होती है । कुछ उदाहरण प्रस्तुत है ।

"उपेक्षित" कहानी के तीनों पात्र "वह" "वह की पत्नी" और "मैं" व्हिस्की–बीयर पीते ही देखे जाते हैं । पत्नी की दृष्टि में पति का कोई महत्व नहीं–अरे पति–अति को मारो गोली, बोर हो गयी मैं तो यहाँ रहते–रहते और "बूढ़े एकदम गिद्ध होते हैं । ये वाकय नारी–स्वतंत्रता की ओर संकेत करते हैं । मद्यपान का दमन करते देखो "उसके उस तरह

पी डालने कै करने से मुझे इस तरह ग्लानि हो रही थी । .... ये चरित्र साहित्यिक दृष्टि से भी अच्छे नहीं कहे जा सकते ।

"साजिश" कहानी में सरला का विवाह–प्रंसग कुछ ऐसा ही लगता है, वह सास केप्रति उदासीन हैं । "हाजिरी" कहानी का खदान का मैनेजर मजदूरिन कीली को बहला फुसलाकर भगा ले जाता है, उसके साथ शादी रचता है, फिर गर्भवती होने पर तलाक देकर विदेश चला गया फिर उसे बेच देने का उपक्रम भी करता है । "यक्षिणी का पत्र–यक्ष के नाम "मैं" प्रोड्यूसर परमेश्वर बाबू, अभिनेता राकेश और अभिनेत्री बनने की अभिलाषिणी नायिका तीनों का चरित्र निन्दनीय है । परमेश्वर बाबू नायिका को रंगीन स्वप्नों में मोहित कर उसके साथ खिलवाड़ करते हैं, वह भी स्वप्नों का राजकुमार के हाथ अपना सम्मान बेच देती है । राकेश भी उसके साथ छल करता है । कुछ उद्धरण" .... कुछ शराब गिलास में डालकर एक स्पेशल कोका–कोला के बहाने मुझे पिला डाली ।" और – "उस रात कुछ ऐसा लगता रहा कि वह राजकुमार आया भी और उसके कुछ–कुछ वैसा ही किया जैसा मैं चाहती थी ।" राकेश के प्रति – "वह और मैं एक दूसरे में डूब गये शादी के प्रस्ताव पर राकेश बोला – पर प्यार–बम्बई में प्यार–व्यार के लिए किसी को वक्त नहीं है, न किसी का दिमाग ही फालतू है, बस शरीर की भूख तुम मुझसे मिटाओ और मैं तुमसे ..... ।

"एक कटी–छटी अंगड़ाई" की महिला यात्री का व्यवहार–देखते नहीं, यह लेडीज है, अन्धे हो ..... बुलाऊं गार्ड को ...... वाक्यं हर यात्री को वेदना पहुंचाता है । "अव्यवस्थित" कहानी के सभी पात्र तलवार कठ, मिस पिंकी, चन्दू, मिस ईरानी किसी भी दृष्टि से अच्छे नहीं है । देखिए – चीज अच्छी थी, वह जो सामने बैठी है वह भी उम्दा है ..... मजा तो एकान्त का है । इस भीड़–भड़क्के में नहीं ..... कभी कमरा बुक कराओ और पिंकी को बुलाओ ...... क्या लेती होगी ?"[1] मिस ईरानी एक नर्तकी है, उसका नग्न नृत्य करना या अश्लील हरकतें करना अधम चरित्र का घोतक है ......

---

1. नये पुराने माँ बाप – पृष्ठ 29

ईरानी ने अपनी ब्रेसियर को पीछे से खोल दिया और अपने स्तनों पर ब्रेसियर का अगला हिस्सा रगड़ने लगी, कुछ गोलाई से ।" [1]

"बदरंग" के पात्र शेखू देव, दौलत, कूड़ी (नीना) सब ही निम्न कोटि के हैं । सभी शराब के पियक्कड़ और ऐय्याश हैं । यथा – "लड़की ने फिर अपनी गर्दन खींची और छोड़ी । शेखू का एक हाथ उसकी गर्दन के पीछे पहुंच गया था, दूसरा छातियों की तरफ बढ़ने लगा ।" [2]

"आँकड़े" कहानी का ठेकेदार और रजिन्दर सिंह बड़े ही मुनाफाखोर गलत कार्य करने वाले और षड्यन्त्र रचने में चतुर हैं ।

"दौड़" कहानी का "धकापेल" औरत और "क़ाला आदमी" का आचरण भी निंदनीय है । रूपये लेकर पुलिस वाले द्वारा छोड़ देना अच्छा कार्य नहीं है ।

"प्रत्यवरोध" कहानी के बस ड्राइवर और कन्डक्टर (चालक–परिचालक) का व्यवहार भी समाज एवं मानवता के अनुरूप नहीं है । बस में ठसाठस सवारी भरना, ज्यादा किराया वसूलना, ए0आ0टी0ओ0 को भी धोखा देना सब नियम विरूद्ध कार्य है ।

"अपाहिज" कहानी के अन्त में एक निर्दयी नेता का व्यवहार दर्दनाक है जो एक असहाय मरीज को लात मारकर चारपाई से गिरा देता है ।

"खूद के खिलाफ" की विमला और उसका पति अधम चरित्र ही कहे जायेंगे । प्रेम में असफलता मिलने के बाद विमला शरीर बेचकर धन अर्जित करती है जिसमें उसका पति ग्राहक बनाकर लाता है । दोनों ही शराब पीते हैं । कुछ वाक्य ..... अब वह बाहर बैठकर पीता रहता था और मैं अन्दर नये मेहमानों के साथ सोती । उसके दोस्त उन्हें पैसे दे जाते थे । कोई पच्चीस, कोई पचास भी । उनमें बड़े–बड़े अफसर भी थे ....

---

1. नये पुराने माँ बाप – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 32
2. वही – गाविन्द मिश्र – पृष्ठ 41

सम्पर्क बन भी गए थे, कोई दस–पन्द्रह अफसरों से अब भी हैं । ....
"कितना कमा लेती हो ?

"पीने खाने के खर्च निकालकर साठ सत्तर तो हो ही जाते हैं दिन में ...... कभी ज्यादा, कभी कुछ नहीं इन पर है, कितने पकड़पाते हैं ।

"एक दिन में कितनों को निपटा सकती हो ?
कितने भी ...... "[1]

गिद्ध" कहानी के नत्थू सिंह का चरित्र हैवानियत से भरा है जो नौकरी की अर्जी देने आई लड़की के साथ बलात्कार कर बैठता है ।

"............ वहीं पीछे से वह उस पर झपट पड़ा ...... "

* * * *

"चलो एक दूसरे को जान भी लें । आदमी–औरत एक दूसरे को इसी तरह सही–सही पहचान सकते हैं ।

"वह बढ़ता चला गया .... कुत्ता । उस स्थिति में ले गया, जहाँ सुख–दु:ख कुछ नहीं था सिर्फ निष्क्रियता बची थी .... मुँदती आँखें .... ।[2]

"सन्ध्यानाद" का अवकाश प्राप्त वृद्ध इस अवस्था में भी वृद्धा पत्नी के साथ सोने की इच्छा रखता है यह समाज के न्याय के विपरीत है, भले ही वे पति–पत्नी हैं, वृद्धावस्था का भी कुल तकाजा है ।

"एक बूँद उलझी" का इन्स्पेक्टर लोभी–लालची; रिश्वतखोर और महत्वकांक्षी के साथ–साथ बाहरी दिखावा को पसन्द करता है ।

---

1. खुद के खिलाफ – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 16
2. गिद्ध – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 52

"निष्कासित" कहानी को मोहन कुमार भी अच्छा चरित्र नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह लापरवाह और रिश्वत ले देकर ही अपना काम चलाना चाहता है । फलतः उसे त्यागपत्र देकर नौकरी से हाथ धोना पड़ता है ।

इस प्रकार गोविन्द मिश्र ने तीनों ही उत्तम–मध्यम–अधम–चरित्र वाले पात्रों की दृष्टि की है ।

समस्या :

गोविन्द मिश्र की कहानियाँ किसी न किसी समस्या का उजागर करती हैं । इनकी कहानियों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक यहां तक कि शारीरिक वासनाजन्य समस्या को भी स्थान मिल गया है । डॉ0 माधुरी छेड़ा ने लिखा है कि – "गोविन्द मिश्र की कथा–चेतना प्रारम्भ में तत्कालीन स्थितियों के प्रति अपने समकालीन कथाकारों के समान ही विद्रोह नकार की मुद्रा और यथा स्थितियों के चित्रण में उद्‌घाटित हुई है, पर उनके अंतिम दो कथा–संकलनों–"खाक इतिहास" और "पगला बाबा" की कहानियाँ तर्क और विचार–प्रेरित भूमिकाओं का अतिक्रमण करती हुई विद्रोह व नकार की सतही हीं भूमिका से ऊपर उठती हुई, व्यक्तित्व का विघटन करने वाली शक्तियों के विरूद्ध मानवीय ऊर्जा की स्थापना करती हुई, ऊर्ध्वगामी चेतना के संवेदनात्मक बिम्ब में अपना रूपाकारग्रहण करती हैं । ये कहानियाँ भारतीय दर्शन व अध्यात्म चेतना के प्रति लेखक के रूझान का धुंधला–सा संकेत भी देती है ।"[1]

इन्होंने आगे पुनः लिखा है – "........ ऐसा लगता है कि "लेखक विरोधी शक्तियों के साथ संघर्ष करने में लथपथ है, पर इसके बाद क्रमशः वह हमें इन सबको ऊपर उठाकर और ऊँचे धरातल पर ले चलता है । लेखकीय चिन्ता के विषय कुछ और

सृजन के आयाम-(स· चन्द्रकान्त बांदिवडेकर)

1. गोविन्द मिश्र की कहानियों में ऊर्ध्वगामी चेतना – डॉ0 माधुरी छेड़ा. पृ· 222

होते जा रहे हैं । समकालीन यथार्थ, सामाजिक व राजनीतिक सत्ता की शक्तियाँ, इन सबसे अपने आपको ऊपर उठाते हुए इतिहास, धर्म, ईश्वर, व्यक्ति के भीतर उपस्थित शक्ति स्रोत, साहित्य और कला के संसार में पहुंच जाता है ।"[1] कथाकार मिश्र ने अपनी कहानियों के विषय की ओर संकेत करते हुए लिखा भी है – "लेखक हमेशा खुद को कष्ट झेलते पिसते दुःख सहते वर्ग के साथ ही पायेगा । यह उसकी नियति है, जैसे कि सत्य, न्याय, ईमानदारी का पक्षधर होने के अलावा कोई और चारा नहीं है ।"[2] लेखकों के यथार्थवादी दृष्टिकोण पर मिश्र ने स्वंय प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा है – "इधर यथार्थवादी की लकीर पर ही पर्दाफाशी लेखन की तूल दिए जाने लगा है, वह चाहे किसी विचारधारा के तहत हो या न हो, मैंने भी कुछ ऐसी कहानियाँ लिखीं लेकिन मुझे लगा कि अगर हम यथार्थवादी की लगाम खींचकर नहीं रखते तो लेखक नाराजगी और घृणा की अभिव्यक्ति मात्र होकर रह जायेगा"।[3]

गोविन्द मिश्र के चिन्तन में एक महत्वपूर्ण मुद्दा यातना–सम्बन्धी उनके विचारों को लेकर भी है । उनके अनुसार मनुष्य–जीवन के साथ कष्ट के जुड़े होने का सिलसिला अनवरत है । यदि एक प्रकार का कष्ट दूर भी हो जाये तो दूसरा कष्ट उत्पन्न हो जायेगा । कुछ कहानियों में अर्थवाद अर्थात् धन (रूपया पैसा) ही सब कुछ है । की समस्या विशदता के साथ उजागर हुई है ।

इसी प्रकार भिन्न–भिन्न कहानियों में कहानी संग्रहों में भिन्न–भिन्न समस्याएं प्रकट हुई हैं ।

"नये पुराने माँ–बाप" आधुनिक सभ्यता में व्यक्ति का निरन्तर अवमूल्यन

सृजन के आयाम –(स· चन्द्रकान्त)

1. गोविन्द मिश्र की कहानियों में ऊर्ध्वगामी चेतना – डॉ0 माधुरी छेड़ा पृ· 223
2. लेखकीय सोच – "धाँसू (कहानी संग्रह) गोविन्द मिश्र पृ0 7–8.
3. लेखन से समाज परिवर्तन – "मुझे घर ले चलो" संग्रह – पृ0 187.

और अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए किए गए प्रयत्नों की लगभग निश्चित पराजय किसी–न–किसी रूप में उभरी है । "जिहाद" कहानी से विशेष रूप में यह समस्या उभर कर आती है । विश्वविद्यालय के अपेक्षाकृत सुरक्षित वातावरण में अपने आदर्शवाद को पुष्ट करने के बाद "वह" इस विश्वास से सरकारी अधिकारी बना है कि घिनौने समाज की गन्दगी से समझौता न करके उसका समूल नाश करेगा, किन्तु शनैः शनैः जिहाद की आक्रमण के बुझने के साथ ही उसका आदर्शवाद भी स्वंय सूखने लगता है । "शुरूआत" और "चुगलखोर" दोनों ही संश्लिष्ट स्थितियों की कहानियाँ हैं और दो भिन्न परिस्थितियों में दो भिन्न वर्गों के बच्चों के महानगरीय मानव पुनः स्थापना की समस्या को बड़े अच्छे व बारीकी ढंग से चित्रित करती है । "दोस्त" अवमूल्यन" "सीधा .... दूर तक सीधा", "बाँध", "ढलान", तथा "घाव" ऐसी स्थितियों की कहानियाँ हैं जिनमें व्यक्ति का व्यक्ति से सम्बन्ध होता तो जा रहा है किन्तु इस सम्बन्ध की चाह में निरन्तर बढ़ती अयोग्यता मानो आज के आदमी की स्थिति बन गए हैं । "नये पुराने माँ–बाप" में एक उभरते हुए, सम्भवतः असफल प्रेम सम्बन्ध की छाया में एक बच्ची की सौतेली माँ के आने से उत्पन्न दर्द की कथावस्तु है । "रगड़खाती आत्म हत्याएँ" कहानी–संग्रह की कहानियों में समाज के पतन, मद्यपान, विलासिता, धोखा देना और धन के पीछे मनुष्य के भागने की प्रवृत्तियों से उत्पन्न समस्याओं से उभारा गया है । लगभग प्रत्येक कहानी का स्त्री या पुरूष पात्र प्रारम्भ में भटक जाता है और अन्त में सब कुछ खोकर निराश और दुःखी जीवन में लौट आता है। "उपेक्षित" कहानी में सीमा से अधिक शराब पी लेने से हुई दुर्दशा, "साजिश" कहानी में खून कल ओर साजिश का वातावरण, "हाजिरी" में खान प्रबन्धक द्वारा किए गये दुर्व्यवहार, छल–कपट और कीली–लोखा के असफल प्रेम, "जंग" टी0वी0 के मरीज की घुटन, "रोता और ख्वाब देखता मुन्ना" में गृहस्थी के पालन और जीवन से उदासी, "ठहराव की ईट" प्रीति श्रीवास्तव का बदलता वैधता जीवन में नौकरी के लिए एम0ए0 करने की उत्सुकता, "चिलमन और धुँआ", रश्मि के आगे निराशा के दिन", "याक्षिणी का पत्र–यक्ष के नाम" में

फिल्म जगत् की चकाचौंध और छल–कपट, "फर्क" में दो लड़कियों के भाग्य का अन्तर "मजबूरियों के बुत" में रत्ना की विवशता, "एक कटी–छंटी अंगड़ाई" में यात्रा के समय के कष्ट और "रगड़ खाती आत्महत्याएं" में "राजनीतिक समस्या सब समस्याएँ होती हैं ।

"अन्तःपुर" कहानियों में आज के आदमी की त्रासदी लगता है, एक अनिवार्य विडंबना से जुडी हुई है – अपने से अलग किसी दूसरे से अन्तरंगता स्थापित करने की अदमनीय इच्छा और ऐसी अन्तरंगता स्थापित करने तथा बनाये रखने की योग्यता का निरन्तर ह्रास यह विडम्बना शायद इसलिए अनिवार्य हो जाती है कि अन्तरंगता की इच्छा तो विशुद्ध रूप से नैसर्गिक है, जबकि इसके लिए आवश्यक योग्यता की सीमाएँ बाहर संसार की अनेक शक्तियों द्वारा न जाने कितने स्थूल और सूक्ष्म तरीकों से निर्धारित होती हैं । संग्रह की सात कहानियों में इस तत्व को विभिन्न परिस्थितियों के माध्यम से टटोला गया है । "गलत नम्बर" कहानी का हर नम्बर गलत है और अपरिचय में एक ठंडी और निर्मम उवासी है । "झपट्टा" इनके बीच में तैरती हुई कहानी है । "पड़ाव" के आठ–नौसाल के शान्त और मौन बच्चे पर उसके पिता की छाया कुछ विचित्र आततायी ढंग से मंडराती है । "घेरे" और "खंडित" कहानियों में बड़े वृद्धों की मृत्यु की प्रतीक्षा की जा रही है, पर जो निर्विकार होने का भाव देते हुए भी नये मानवीय सम्बन्धों की मरीचिका के लोभ से उबर नहीं पाते । अजीवीकरण अर्थ देने से बचे नैतिवाद को नकारते हुए एक दूसरे स्तर पर व्यक्ति की गरिमा और इच्छाशक्ति का उद्‌घोष है । "चीटियां और "अपाहिज" में लगता है, जैसे तत्कालीन साहित्यिक नारों की गूंज प्रतिध्वनित हो रही है और चलताऊ "जनवादी" कहानियाँ हैं । वास्तव में ये कहानियाँ न कुछ नकारती हैं, न कुछ स्थापित करती हैं ।

"कचकौंध" में तत्कालीन भारतीय जीवन वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक – के यथार्थ को एक वृद्धा ग्रामीण अध्यापक के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है । "अन्तःपुर" में लेखक ने राजनीतिक मसीहा का अभिनय किया है जिसमें वह विशेष

सफल नहीं हुआ है । उसमें तथाकथित राजनैतिक सैद्धान्तिक पक्षों की लड़ाई उजागर होती है । इस संग्रह की कहानियों में व्याप्त समस्याओं के विषय में समीक्षक श्री निर्मल वर्मा ने लिखा है – "मैं समझता हूँ कि इस संग्रह में ऐसी असंतोषजनक कहानियाँ वे ही कही जा सकती हैं जहाँ महानगर में इंडिविजुअल कांशसनेस के पात्र हैं । वे कहानियाँ मुझे ज्यादा प्रभावित नहीं कर पाती, लेकिन गोविन्द मिश्र ने जहाँ छोटे गाँव, कस्बे के टिपिकल करैक्टर्स कोलिया है और उकने जरिये हमारी राजनीतिक और सामाजिक विडम्बनाओं को उद्‌घाटित करने की कोशिश की है, वहाँ वह ज्यादा सफल रहे हैं ।[1]

"धाँसू" कहानी संग्रह की कहानियों में मानव–सम्बन्धों की अपेक्षा व्यक्ति और सिथतियों के सम्बन्ध उभरकर आते हैं जो समाज में यत्र–तत्र फैले दिखाई देते हैं । इसप्रकार की टकराहट स्थितियों में होती है, उनसे समाज में व्याप्त विकृतियाँ बार–बार उभरकर आती हैं जो विशेषकर भ्रष्टाचार, बेईमानी और इनमें त्रस्त आम आदमी की विशेषताओं को उभारते हैं ..... यहाँ तक कि विशुद्ध राजनीतिक क्षेत्र में कार्य कर रहे अपेक्षाकृत ईमानदार आदमी की विवशता भी है । "जनतंत्र" "बहुधन्धीय" और "धाँसू" कहानियों में भारतीय जीवन के हर क्षेत्र में उपस्थित उन बिचौलियों को लेकर लिखी गयी हैं जो सत्ता और सामाजिक अन्याय, अनाचार और उत्पीड़न के बीच व्यवस्थात्मक स्थायित्व का पोषण करते हैं ।

"खुद के खिलाफ" संग्रह की कहानियों में अधिकांश कहानियाँ जीवन मूल्यों के टूटने के दर्द से सराबोर हैं । इनमें "खुद के खिलाफ" की विमला "शापग्रस्त" का आदमी और रीता, "निरस्त" का बूढ़ा बाप, "गिद्ध" की लड़की, "हमदर्दी" का घायल नवयुवक, "कहानी नहीं" .... का गाइड "जंग की माँ और बेटी–सभी पात्र जीवन मूल्यों के टूटने की व्यथा से उत्पीड़ित हैं । इसके साथ ही भ्रष्ट व्यवस्था को बे–पर्दा करना भी

---

1. गोविन्द मिश्र – सृजन के आयाम (अन्तःपुर की कहानियाँ) पृ0 256.

लेखक का उद्देश्य रहा होगा । विमला प्रेम की असफलता में अपने पतन की स्थिति में पहुंच जाती है, "शापग्रस्त" का नायक लंदन में अपनी पत्नी और पुत्र को खोकर टूटता गया है । "हमदर्दी" कहानी बेकार नौजवान की स्थिति का चित्रण करते हुए समाज के समक्ष एक प्रश्न छोड़ती है – "अपने पैरों पर खड़े होने की सुविधा चाहिए ..... दे सकते हो क्या ? और प्रशासनिक व्यवस्था की भ्रष्टता पर भी सीधा आक्षेप है – कि "आवश्यक कार्यवाही" का अर्थ होता है "कोई कार्यवाही नहीं । डॉ0 प्रभाकर श्रोत्रिय ने "खुद के खिलाफ" कहानी संग्रह को "अतीत का हस्तक्षेप" कहा है । इसका दूसरा पक्ष भी है – "खुद के खिलाफ" की कहानियाँ ज्यादातर अवसाद से घिरी हैं एवं पीढ़ियों के द्वन्द्व से ग्रस्त है डॉ0 श्रोत्रिय कहते हैं – ...... आधुनिकता के जिस रूप को बुद्धिजीवी, मध्य या उच्च वर्ग ने अपनाया है, वह खंडित है और सार्थक मानवीय मूल्यों को छिन्न–भिन्न करता है ।"[1]

"खाक इतिहास" की कहानियों में बीसवीसदी की मनुष्यता के साथ जो खतरे अपरिहार्य रूप से लगे हुए हैं, उन खतरों और उनसे जुडने हुए ज्यादा से ज्यादा प्रश्नों को पाठकों के समक्ष उपस्थित कर देने में अपने पूर्वाग्रहों को बाधा न बनने देने की दुर्लभ तटस्थता दिखलायी पड़ती है । "संन्ध्यानाद", "आवाज खुलती हुई" "उल्कापात" "मुझे घर ले चलो" और "फॉस" नितांत मानवीय संवेदनाओं को टकटकाती और उन्हें व्यावहारिक स्तर पर परिभाषित करती हैं । "आल्हखड" और "खाक इतिहास" कहानियाँ सीधे–साधे इतिहास रास्ते पर घुमाती हैं । युद्ध, मनुष्य पर ढाये जाने वाले अत्याचार, बलिदानों का व्यर्थ हो जाना और मोहभंग इनकी समस्या है "सड़ाँध" और "उल्कापात" आत्मसंघर्ष के रूझान पर टिकी कहानियाँ हैं । "आने वाली सुबह" में जातिगत घटकों को तोड़कर मानवता मात्र के लिए अन्तर्विरोधों को स्पष्ट किया गया है ।" वरणांजलि" अन्धविश्वास की तरफ जाती एक

---

1. "खुद के खिलाफ – अतीत का हस्तक्षेप (निबन्ध स) डॉ0 प्रभातकर श्रोत्रिय पृ. 267

तरतीबबार जीवन दृष्टि ही है । "फॉस" कहानी के नौजवान चोर आर्थिक विपन्नता और चोरी की आदत की मजबूरी के वाबजूद देहाती मौजी (भाभी, पल्टू की माँ) के निश्छल प्रेम समक्ष निरस्त होकर स्वंय अपनी ही जेब कटवा जाते हैं । इस कहानी संग्रह की कहानियों पर अपनी टिप्पणी में डॉ0 पुष्पपाल सिंह ने लिखा है – "इन सभी कहानियों की एक अन्तर्धारा (अंडर करेंट) है, वह है महानगरीय जीवन से ऊबा व्यक्ति । प्रायः प्रत्येक कहानी में गोविन्द मिश्र इसकी अभिव्यक्ति का अवसर निकाल लेते हैं । * * * * * इस प्रकार ये कहानियाँ कहीं हमें हमारे भरे–पूरे जीवन के खालीपन का भी एहसास शिद्दत से दे जाती है ।[1] "पगला बाबा" संकलन की प्रत्येक कहानी वस्तुगत यथार्थ का एक ऐसा अन्तः विषयी बिम्ब है जो रचना की बुनावट से धीरे–धीरे उभर लेता हुआ भावना–संस्कार में सजीव हो उठता है । पात्र–घटना और परिवेश को पीछे छोड़कर नायक–नायिका की संवेदना मात्र हाथ आती हैं । सभी कहानियाँ हृदय के रस में डूबी होने के साथ वैयक्तिक जीवन के सार से युक्त हैं, क्योंकि वे सुहृदयता में मानवीय आदर्श प्रस्तुत करती हैं । आधुनिक कालीन महिमा मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों को निरन्तर लुप्त होते हुए दिखाने में ही अपनी कला का चरमोत्कर्ष मानने वाले कहानीकारों की कृतियों से "पगला बाबा" की कहानियाँ भिन्न एवं विशिष्ट सी प्रतीत होती है ।

"एक बूँद उलझी" मर्मान्तक पीड़ा की कहानी है जिसमें योग्य सावधानी बरतने वाला इन्स्पेक्टर पाश्चाताप भोगता है और मृत्यु को प्राप्त हो जाता है । "पगला बाबा" अनाथों, निराश्रितों के शवदाह का कार्य करने लगा । यहां एक साथ हिन्दूमत की पारंपरिक आस्था और उसमें निहित व्यर्थवाद के प्रति निषेध, आक्रोश रहित विरोध की कहानी है । "अर्द्धवृत्त" में सपत्नी के आगमन पर पारिवारिक कलह, "प्रतिमोह" में बम्बई की झोपड़ पट्टी के जीवन के यथार्थ गाथा है । "मायकल लोबो" में शराबी की दुर्दशा एक समस्या है।

---

1. सृजन के आयाम – स· चन्द्रकांत बांदिवडेकर – पृ· 279

"सुनंदो की खोली" में कितनी ही भरी जवानियाँ "खोली" के कुंठापूर्ण वातावरण से ग्रस्त और पराश्रित हो तिल–तिल घुटकर मिट जाती है । "गुरूजी" कहानी में नौकरी की तलाश में की जाने वाली दौड़–धूप, कोशिश, फिर भी असफलता का उल्लेख है । "आदेश" कहानी स्थानान्तरण पर लिपिक द्वारा किए गए छलकपट चापलूसी और परेशानी की समस्या उजागर करती है । अर्थ–ओझल कहानी में समाज और परिवार की गलतफहमी तथा अनुचित मूलयांकन की उपेक्षा से उत्पन्न समस्या को रंग दिया गया है ।

इस प्रकार बहु–आयामी दृष्टिकोण रखने वाले गोविन्द मिश्र ने अपनी कहानियों में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सत्ता सम्पन्न उच्च वर्ग के व्यवहारों को भी अपना विषय बनाया है जो समाज में व्याप्त बेईमानी, भ्रष्टाचार, अनाचार, शारीरिक–व्यापार, बेरोजगारों की दशा, झोपड़पट्टी वालों की दुर्दशा आदि को अपनी सशक्त लेखनी से उभारने का प्रयास किया है ।

"आसमान कितना नीला" संकलन सामाजिक परिवेश में गहराई तक स्तर–स्तर फैली कुत्साओं–कुंठाओं, अन्तर्विरोधों और ह्रासात्मक प्रवृत्तियों को व्यक्त करता है । "आसमान कितनी नीला" एक खंडित राग की कहानी हे, जहाँ प्रश्न उठता है कि "क्या नई–नई चीजों के आगे हार्दिकता, स्नेह और मूल्यवत्ता के पीछे नहीं छूट जायेगी ? "निष्कासित" में एक भ्रष्ट कर्मचारी और रिश्वतखोरी की महिला दिखाई गई है । "राम संजीवन की माँ" जीवन के गौण प्रश्नों पर भड़कती कलह–द्वेषादि प्रवृत्तियों पर पारस्परिकता की अजेयता स्थापित करती हैं । "धुंधलका" अंधी अध्यात्मिकता, पाखंड और निर्जीव कर्मकांड पर एक टिप्पणी है । "छवि" एक दंशपूर्ण कटाक्ष है जहाँ हरिजन वर्ग में भी तपन सिन्हा उच्च वर्ग के संस्कार और सौन्दर्य देखना चाहता है । "यों ही खत्म" रूढ़िग्रस्त समाज के असह्य अन्याय–अतिचारों का ब्यौरा है, जहाँ प्रताड़ित नारी बहुविध क्रूरताओं के वाबजूद अपने पति की मृत्यु का हल्के से भी स्पर्श नहीं कर सकती । काल खण्ड और अवरूद्ध

स्वतंत्रता संग्राम की दु:खपूर्ण परिणति है । "आक्रामाला में एक गँवई दम्पत्ति की त्रासदी का उल्लेख है ।

इस प्रकार इन कहानियों में गहरी करूणा, संवेदना की सघनता और व्यापक मानवीय सोच की अन्तदृष्टि लक्षित होती है ।

देशकाल और समाज चित्रण :

मिश्र जी की कहानियों में सामान्य जनता की विषम परिस्थितियों और दु:ख दर्द की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है । पात्र वैविध्य, मनोवैज्ञानिक चरित्र–चित्रण, स्वाभाविकता, यथार्थवाद और व्यवहारिक मुहावरेदार भाषा–शैली की दृष्टि से उनकी कहानियाँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधियाँ हैं ।

सामयिक सामाजिक समस्याओं की पृष्ठभूमि में यथार्थ जीवन का अंकन और जीवन की विषमताओं का अंकन मिश्र जी के कहानी साहित्य की प्रमुख विशेषतांए हैं । समाज का कोई वर्ग ऐसा नहीं बचा जिस पर उन्होंने न लिखा हो । देशकाल – वातावरण (समाज चित्रण) का मिश्र जी ने अपनी कहानियों में सशक्त चित्रण किया है । उन्होंने भौतिक, प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के सुन्दर चित्र खींचे हैं । तत्कालीन वातावरण का सशक्त और सूक्ष्म अंकन भी उनकी कहानियों में दिखाई देता है ।

गोविन्द मिश्र ने अपनी कहानियों में भारत भूमि के अर्न्तगत विशाल भारत का मानचित्र उभारा है । एक ओर तो अपनी जन्मभूमि बुन्देलखण्ड उसमें बाँदा, मौंडों, इलाहाबाद, फतेहपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, हमीरपुर आदि स्थानों का चित्र अंकित करते हुए हरिद्वार, अण्डमान–निकोबार द्वीप समूह बिहार और बम्बई दिल्ली तक के महान नगरीय जीवन को चित्रत किया है वहीं दूसरी ओर कथाकार ने विदेश यात्रायें भी की हैं इसलिए लन्दन (इग्लैंड) अमेरिका, जापान आदि देशों का भी परिचय प्राप्त होता है ।

प्रत्यवरोध कहानी में हरिद्वार और यहाँ लगने वाले मेले का चित्रण है तो आल्हखंड में बाँदा (उ0प्र0) का स्मरण करते हुए अंडमान–निकोबार द्वीप समूह, राजधानी पोर्टब्लेयर के अतिरिक्त अंग्रेजों और जापानियों के व्यवहार में अन्तर को दर्शाया है । "हाजिरी" कहानी में बिहार की खानों का चित्र है तो "खुद के खिलाफ" में दिल्ली महानगर का, "अपाहिज" में बम्बई के फ्लेटों का सुनन्दों की खोली" में भी बम्बई महानगरीय जीवन का पगला बाबा में बनारस की भूमि का दिग्दर्शन कराया गया है । इसी प्रकार अन्य स्थलों का भी चित्रण मिलता है । "खाक इतिहास" में मारिया लुडविख की तलाश में घूमती हुई चेकोस्लवालिया की प्रसिद्ध पर्वत श्रृंखला "ताभी" वगैरह की यात्रा करती है । "मुझे घर ले चलो" का गनेसी आधुनिक कम्पनीवाद और यूनियन बाजी का शिकार होता है ।

गोविन्द मिश्र की कहानियों में तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब प्रतिबिम्बित हो रहा है समाज में जहाँ एक ओर अच्छा वातावरण देखने को मिलता है वहीं दूसरी ओर दूषित वातावरण का भी अभाव नहीं है । जिस समाज में ओवरसियर, सरकारी अधिकारी और अधिकारी (स्त्री) रामेश्वर राय जैसे ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ लोगों का वर्चस्व है वहीं भ्रष्ट रजिन्दर, स्त्री (पत्नी) का शरीर बेचने वाले विमला के पति, खान का मैनेजर, बस ड्राइवर और कन्डक्टर (चालक और परिचालक) जैसे समाज को कलंकित करने वाले व्यक्ति भी हैं । एक ओर पगला बाबा, पार्वती मौसी, बप्पा पं0 दीनदयाल जैसे श्रेष्ठ मनुष्य है तो दूसरी ओर नत्थूसिंह, दहिजार या दुबे जैसे समाज को दूषित करने वाले निन्दनीय पात्र भी हैं ।

इस प्रकार एक ओर तो समाज सत्यता, ईमानदारी, कर्तव्य–परायणता, देश भक्ति का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है तो दूसरी ओर भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, विलासिता का नंगा चित्र भी प्रस्तुत हो रहा है अतः सामाजिक परिस्थितियाँ स्वंय अपने में ही विपरीत दृष्टिगत होती हैं ।

सामाजिक चित्रण की भाँति ही राजनीतिक प्रतिबिम्ब झलकता हुआ दिखाई दे रहा है । धाँसू, जनतंत्र, अन्तःपुर, "गोबरगनेश" कहानियाँ स्पष्टतः तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति को अंकित करती हैं धाँसू कहानी में साफ–साफ दिखाई देता है कि मंच पर हाबी होने के लिए हर समय तैयार और प्रभावशाली रहना चाहिए । "गोबरगनेश" कहानी के अनुसार चुनाव जीतने के लिए हर हथकंडा अपनाना चाहिए और काफी रूपया भी वोट खरीदने के लिए व्यय कर देने चाहिए । राजनीति कहती है कि हवा के रूख के अनुसार बदलते रहना चाहिए ।

सामाजिक विषमता की भाँति ही आर्थिक विषमता भी इन कहानियों में दिखाई देती हैं रूपये पैसे (धन) को कापफी महत्व प्रदान किया गया है । एक ओर तो लोखा कीली जैसे खान मजदूर हैं विधवा प्रीति श्रीवास्तव, लिफ्टमैंन गनेसी है, भूख से तड़पता बेरोजगार है, सुनन्दो जैसी खोलियों में रहकर अभावपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले निरीज निर्धन लोग हैं तो दूसरी ओर दिल्ली और बम्बई में फ्लैटों के मालिक हैं, खान फैक्टरी और कम्पनियों के मालिक हैं विदेशों में रहकर जीवन व्यतीत करने वाले लोग हैं तो साथ ही नत्थूसिंह जैसे कामी, विमला और उसके पति जैसे लोभी लालची, जो अवैद्य तरीके से धन कमाकर फरीदाबाद में फैक्टरी लगाना चाहते हैं । राजनीतिक मंचों, मंत्रियों को स्वागत समारोहों में व्यर्थ धन व्यय करने वाले व्यक्ति यहाँ विद्यमान हैं । "अव्यवस्थित", "बदरंग" जैसी कहानियों में क्लब समारोहों में नग्न नृत्य देखने वाले शराब पीने वाले व्यक्तित्व भी दिखाई देते हैं ।

इस प्रकार मिश्र जी की कहानियों में देश काल के अनुरूप ही समाज चित्रण के दर्शन होते हैं ।

भाषा शैली :

भाषा :

गोविन्द मिश्र की कथा–सृष्टि पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि कहानियों में उनकी भाषा के विविध रूप सहजता से आ गए हैं । भाषा–प्रवाह में एक ओर तो नगरीय परिवेश में उच्चवर्गीय जीवन की भीतरी पर्तों को अनावृत करने वाली भाषा का सहज रूप है, जो दूसरी ओर कस्बाई लोगों की रोमांचित करने वाली वन्य जीवन शैली का चुभता अंकन सहज ही अनुभव किया जा सकता है । प्रथम दो कहानी संग्रहों की भाषा कुछ अंग्रेजीपन लिए हुए हैं । आधे हिन्दी और आधे उर्दू भाषा के शब्दों का मिश्रण भी इनकी भाषा के चलताऊ-पन को व्यक्त करता है । पुनः भाषा में कुछ सुधार सा होने लगा है, तथापि कम ही है, फाँस जैसी कहानी की भाषा में हमारे ग्रामीण जीवन की सौंधी–सौंधी गंध और बुंदेली आंचलिकता का मोहक रंग अपनी धूप–छाँही आभा के साथ झिलमिलाता है, तो दूसरी ओर "पगला बाबा" में बनारसी (पूर्वी हिन्दी या अवधी) का ठाट है, "कचकौंध" कहानी की भाषा में आज के नगरीय जीवन पद्धति के फलक पर पुरानी पीढ़ी के देहाती जीवन के मानदण्डों को मटियामेंट होते देखने उत्पन्न पीड़ा का मूर्तिमत चित्रण प्राप्त होता है। "धाँसू" कहानी की व्यंग्यपूर्ण भाषा के अन्तर्गत आज के रंगे सियार नेता के चरित्र की बुनावट को रेशे–रेशे अधेड़कर रख दिया है । "वरणांजलि" की भाषा में नियति के कठोर देश से उत्पन्न तीखी चुभन, पीड़ा और करूणा की प्रांजल धारा सहृद्य पाठक को प्रभावित कर रही है । मिश्र जी भाषा की विभिन्न छवियाँ विभिन्न कहानी–संग्रहों में विद्यमान है ।[1] सुविधा की दृष्टि से इनकी भाषा को निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है –

---

1. गोविन्द मिश्र – सृजन के आयाम (गोविन्द मिश्र की भाषा – डॉ0 केशव प्रथमवीर के निबन्ध के आधार पर) पृ0 33.

1. सहज–सरल, भाषा
2. साहित्यिक भाषा
3. देशी (आंचलिक) भाषा,
4. मिश्रित भाषा,
5. अलंकृत भाषा और
6. मुहावरेदार भाषा ।

सहज–सरल भाषा :

गोविन्द मिश्र ने उपन्यासों की भाँति ही अपनी कहानियों में सहज–सरल भाषा का प्रयोग किया है । इस भाषा में प्रयुक्त शब्दावली और वाक्य रचना इतनी सहज एवं सरल है कि पाठक भाव को सरलता से समझ लेता है । कुछ उदाहरण –

"लोखा इन आवालों से अच्छी तरह परिचित हैं । दिन ये जब वह भी कुदाली लिए जिन्दगी को पसीने की बूँदों की शराब पिलाता रहता था । खुद भी तो एक नशे में रहता था वह । और न जाने कितनी धुंधली तस्वीरें उसके सामने फैलने सिमटने लगी ..... सिर दर्द से आकुल कीली डलिया लिये ऊपर जा रही है । गिरने लगती है तो वह उसे संभाल लेता है ।[1] ......

"नये पुराने माँ–बाप" से एक सरल एवं सहज बालिका की भाषा –

"बड़ा वो है गोपी – मैंने आज जरा उसे अपने छत पर चलने को कहा तो

---

1. हाजरी (रगड़ खाती आत्महत्यायें) गोविन्द मिश्र पृ0 29.

बोला लम्बी–चौड़ी छत बनायी है न तेरे बापू ने, पाजी कहीं का । आखिर क्या खराबी है मेरे छत में ? छोटी है, पर यहाँ से छकपक करती रेल दिखायी देती है – इस समय भी कोई रेल निकले तो कितना मजा आये । रेल को पास से देखने पर कैसा लगेगा । इतनी बड़ी क्यों बनाई भगवान से रेल–कितने सारे घर होते हैं उसमें ।[1] ....

इस उद्धरण से "ताई" कहानी की याद ताजा हो उठती है और इसी तरह "शुरूआत" कहानी से एक उदाहरण –

" .... मैं जानबूझकर उधर से निकला .... लड़की ने दूर से ही मुझे कुछ इस तरह देखा, जैसे बस देखने के लिए देख ले रही हो । उसकी आँखों में उत्सुकता, खुशी, क्रोध कुछ नहीं था । वह जल्दी ही अपने काम में लग गयी । वह जरूर मुझे देखकर दौड़ा इधर । आया .... "डैडी, देखिये कितने अच्छे हैं .... ।[2]

"डैडी – वह थोड़ी देर बाद उसी उत्साह से बोला – "कल शाम को उसने चाय पर बुलाया है अपने घर, उसका बर्थ डे है .... ।" इस भाषाई कथन में कितनी निश्छलता है ।[3]

"आल्हखंड" से एक उदाहरण –

"हम अंडमान के रौस द्वीप में थे । एक गोल–गोल बहुत ही छोटा–सा द्वीप, जहाँ से ज्यादा जमीन पुराने जमाने के किसी बंगले में देखने को मिल जाये । सामने पोर्टब्लेयर था, बीच में किसी बड़ी नदी की तरह पड़े समुद्र के पार । अंग्रेजों के जमाने

---

1. "नये पुराने माँ–बाप" गोविन्द मिश्र पृ0 152.
2. वही (शुरूआत) गोविन्द मिश्र पृ0 25.
3. नये पुराने माँ बाप (शुरूआत) गो0मि0 पृ0 25.

सबसे बड़े अधिकारी चीफ कमिश्नर, उसका पूरा तामझाम और सभी महत्वपूर्ण अंग्रेज यहीं रहते थे । अब यहाँ सिर्फ खण्डहर थे ।[1]

2. **साहित्यिक भाषा :**

मिश्र जी की कहानियों में यत्र–तत्र साहित्यिक भाषा के दर्शन होते हैं जहाँ शुद्ध एवं तत्सम शबदावली का प्रयोग हुआ है । दर्शनीय हैं कुछ उद्धरणीय स्थल –

"मृत्यु का वरण करने लोग काशी पहुंचते हैं ...... बाबा विश्वनाथ की नगरी, यहाँ प्राणांत हो, मणिकर्णिका घाट में दाह मिल जाए तो सीधी मुक्ति । आते समय भय कि कहीं मार्ग में ही पंछी न उड़ जाये, पहुंच गए तो दूसरा संकट कि प्राणांत नहीं हो रहा । ऐसी रूग्णावस्था में आए थे कि आज गए ..... कल गए ..... और यहाँ आकर देखा कि गाड़ी उल्टी दिशा में चल पड़ी ...."[2]

"अर्थ ओझल" कहानी में पंडित दीनदयाल की प्रशंसा –

".......... पंडित जी को कभी हम से कोई अपेक्षा नहीं थी । अपेक्षा थी तो मुझे .... कि मैं अब अपनी बारी आने पर दूसरों को उठाऊं । जानते हो, जब हममें से किसी का मनोबल गिरने लगता, हीन–भावना घेर लेती, हम दबने लगते तो पंडित जी किस–किस तरह हमें एकान्त में समझाते ।[3]

"प्रभामंडल" कहानी में बाबा जी का माहात्म्य देखिये –

---

1. खाक इतिहास (आल्हखंड) गो0मि0 पृ0 23.
2. पगला बाबा गोविन्द मिश्र पृ0 12.
3. वही (अर्थ ओझल) गो0मि0 पृ0 – 85.

"बाबा जी पर भक्तों की अपार श्रद्धा है । * * * किसी को बाबा ने शिव के तीसरे नेत्र के दर्शन कराये हैं, किसी को अमरनाथ के शिवलिंग के, तो किसी को शेषनाग के । बाबा सभी के सपनों में आते हैं और सभी को उनके चरण–चिन्ह भगवान के चरण–चिन्हों से मेल खाते नजर आते हैं । बाबा क्या करें .... भगवान को भक्त ही तो बनाते हैं ।"[1]

"वरणांजलि" कहानी की भाषा बहुत–कुछ अंशों में साहित्यिकता लिए हुए है –

"तुम चले गए, बाण की तरह । पीछे छूट गया मैं, अग्निशलाकाओं से घिरा, प्रतिपल जलते रहने की शापित । जब तुम्हें पानी से भय था तो मैं क्यों वही भय दूर करने में लगा हुआ था, जैसे कि एक उससे ही तुम निर्भीक, इसलिए पूर्ण मनुष्य बन जाने वाले थे ।[2]........

एक और स्थल – "मैं देख रहा हूँ, तुम्हारा उन्नत मस्तक, कपाल–शरीर के अनुपात से विशाल, केश पर उछले दो भौरे, अजंता की मूर्तियों पर आलिखित जैसे तुम्हारे दीर्घ विस्फारित चक्षु, छोटे बुद्ध जैसे बड़े–बड़े कान, तुम्हारी कृशकाया के स्थान पर स्वच्छ, सुन्दर एवं पुष्ट शरीर, तापों से परे, दिव्यलोक से प्रदीप्त ...... ।[3]

"धुँधलका" कहानी से "ब्राह्म -मुहूर्त में मंगला आरती से ठाकुर को जमाने से लेकर रात्रि उनके शयन तक अष्टयामी सेवा का अनुष्ठान ओढ़ रखा है रूक्मिणी ने । * * * * वर्षो के यही जीवन क्रम है ।[4]

देशी (आंचलिक) भाषा :

"लाल पीली जमीन" "हुजूर दरबार" और "धीर समीरे" उपन्यासों में प्रयुक्त

1. खुद के खिलाफ(प्रभामण्डल)गो0मिश्र पृ0 67.
2. खाक इतिहास (वरणांजलि) गोविन्द मिश्र पृ0 87.
3. वही, पृ0 90.
4. आसमान कितना नीला (धुँधलका) गोविन्द मिश्र पृ0 47.

आंचलिक भाषा के समान ही मिश्र जी ने कहानियों में भी कहीं बुन्देली, कहीं बनारसी, तो कहीं ग्रामीण–कस्बाई भाषा का सुन्दर और सफल प्रयोग किया है । यह भाषा–प्रयोग सहज स्वाभाविक बन पड़ा है । उदाहरणार्थ कुछ स्थल पर भाषा–प्रयोग दृष्टव्य है – "अरे छिदुआ .... हम ठहरे बनारस के राजा । तोहरी ई कोठरी में समदुबे का रे ? उ देख हमारा रथ खड़ा हो" बाबा ने अपना कमजोर हाथ बाहर ठिलियां की तरह उठाया, "ए ही पर गंगा मैया के पास ले जा । हम निकल जाई त ई रथ के रग्घं के ढाल के नीचे जोन छुटका चबूतरा हो न ...... उहैं छोड़ दिहे ...... उन्हें हमारा महदारी ई हमारे हाथ में थमौ ले रहे ली ।"[1]

लड़के सुसरे दोनों निखद्धी हैं ...... दोपहर तक साते रहेंगे मड़ई है भुनसारे उठकर पूजा वन्दना करना है कुछ चला फिरी । देखो तो वह ठाकुर का लड़का दरोगा हो गया, पर मजाल है, जो तीन घंटे से कम पूजा में लग जोय । क्या विधि–विधान से स्नान ध्यान करता है कि पड़ोसियों को भी आत्मा सुखी हो जाये – कभी नहाये बिना कौर नहीं देता । और हमारे हैं बिना मुंह हाथ धोये बिस्तर पर ही चाय, जग गये तो एक घंटे चाय और अखबार पर ही पड़े रहेंगे । कोई आचार विचार नहीं । एक ही प्लेट में मलेच्छियों के साथ भी खा लेंगे । मड़ई को यह नहीं लगता कि दूसरे की लार भी खाद्य में लग रही है । ऐसा खाना दूसरे की लार चाटना है । आत्मीयता ऐसे ही तो जता सकते हैं बेचारे ।"[2]

बिना हिचकचाये वह मक्खन के थोकड़े के थोकड़े प्रधानमंत्री के मुंह पर पोत रहा था ..... जैसे वहाँ चेहरा नहीं, दीवार का कोई हिस्सा था जिस पर छपाई की जा रही थी । वह जानता था – चापलूसी बारीक नहीं, मोटी मोटी और एक दमयोक, के

---

1. पगला बाबा गोविन्द मिश्र पृ0 16.
2. मेरी प्रिय कहानियाँ (कचकौंध) गोविन्द मिश्र पृ0 24.

भाव होनी चाहिये .... उसके मुंह से प्रशस्ति वाक्य एकलव्य के बाणों की तरह सर्र–सर्र निकल रहे थे ।[1]

अरे .... तब तो तुम साचउँ के भैया लगत । पहले बता देते, अब देखो हम आयें तुमाई जिज्जी और तुम भुज्जी–भुज्जी लगॉम । पल्टू देखौ बै को आय बैठे तुमाये मम्मॉं ।[2] "......... किन्तु सचेतन की पकड़ तनिक शिथिल हुई नहीं कि भीतर कुछ बहने लगता है – लगातार रिसता हुआ कोई घाव कभी–कभी उठते, बैठते, बोलते हँसते हुए भी भीतर शून्य की एक भंवर आकार ग्रहण करती है, अक्रम ही एक निःश्वास बाहर आता है – हे राम । हम फिर वही पिटे–पिटे से निकल आते हैं .... जैसे धूल बुरक–बुरक कर खूब पीटा गया हो ।[3]

अलंकृत भाषा :

गोविन्द जी अप्रस्तुत विधानों का उपयोग करने में बहुत ही कुशल हैं । उनकी भाषा में "उदाहरणों, उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं अन्योक्तियों, प्रतीकों आदि की सृष्टि मानो अपने आप उतरती चली आती है । एक उदाहरण देखिये ।

"तुमने कभी किसी उखड़े हुए पेड़ को देखा है ? कुछ जड़े जमीन से एकदम अलग, कुल जोरे चिपकी हुई, एक–दम आदमी की नसें जैसी दिखती हैं वे । आखिरी दम तक जैसे वह दरख्त अपनी पूरी ताकत के साथ जमीन छोड़ने से इन्कार कर रहा हो । लुडविक यही था उन दिनों ।[4]

---

1. धॉंसू – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 120–121
2. खाक इतिहास (फांस) गोविन्द मिश्र पृ0 70.
3. खाक इतिहास (वरणांजलि) गोविन्द मिश्र पृ0 88 से 89.
4. खाक इतिहास गोविन्द मिश्र पृ0 98.

यहाँ उदाहरण और उपमा के माध्यम से मारिया का यह कथन अपने देश से जुड़े रहने के जद्धोजहद करते हुए लुडविक की स्थिति का जोरदार बिम्ब पाठकों के मन पर अपनी पूरी क्षमता के साथ उभरता है और लुडविक के पौरूष, प्रयास आत्मसम्मान, आकांक्षा, बेबसी आदि की एक गहरी छाप छोड़ जाता है । इसी प्रकार निम्नांकित वाक्यों में प्रतीकात्मक ढंग सें, गाँव के प्रधान से लेकर मुख्यमंत्री तक के भ्रष्टाचारों आचरण का वर्णन किया गया है, ... ये बड़ी हस्तियाँ चूहे बनकर घुसी हुई हैं और गेहूँ को कुतर रही है । उन्हें लगता है उन सबकी कारस्तानियाँ·एक हैं, जैसे एक गिरोह के डकैतों का लूटने का ढंग एक होता है । हर चीज के पीछे ससुर कोई षडयन्त्र या कोई न कोई व्यापार है । सबकी सब छोटी–मोटी पगडड़ियाँ हैं, जो दूर जाकर किसी बड़ी सड़क से मिलती है, वह सड़क सिर्फ भूल भूलैंयों की ओर जाती है । एक सूध कुर्सिया हैं, जैसे राजगिरि के रज्जु पथ में देखा था .... पीछे वाली इस कुर्सी को ढकेलती है और यह आगे धकियाती है ।

इसी प्रकार गोविन्द मिश्र कहीं–कहीं उपमाओं की ताजगी के लिए ऐसे ऐतिहासिक पौराणिक सन्दर्भ गर्भित वाक्यों का प्रयोग करते हैं कि उनका रस स्तरीय पाठक को ही प्राप्त हो सकता है सामान्य ज्ञान वाले पाठक की पहुंच वहाँ तक नहीं हो सकती जैसे –

"चुनाव के अधंड़ के फौरन बाद जैसे "चन्दरबरदाई के पद के लिए मारा मारी थी ।[1]

"उनके मुंह से प्रशस्ति वाकय एकलव्य के वाणों की तरह सर्र–सर्र निकल रहे थे ।[2]

"जैसे इस बार चक्रव्यूह में अभिमन्यु नहीं अर्जुन घुसा था" ।[3]

---

1. धाँसू – गोविन्द मिश्र पृ0 121.
2. वही, पृ0 121.
3. वही, पृ0 121.

ज्यादातर नंगे पैर, कुछ दांडी यात्रा शैली में एक बड़ी लाठी को टेककर चलते हुए।[1]

लोगों के सामने उनका (पगला बाबा) एक ही रूप–छड़ी–सा शरीर ....।[2]

"हर दिशा से शवयात्राएँ आ रही थी ...... एक के बाद एक ..... जैसे चारों तरफ से छोटी–छोटी जलधाराएं बड़ी धारा से मिलने बढ़ी चली आ रही हों ।[3]

"समुद्र के बीच ओइस्टर रॉक पर खड़ी वही पुरानी, जंग लगी–सी इमारत .... बाँध जैसी एक सजी–सँवरी दीवार जो समुद्र में थोड़ी दूर तक चली गयी है ।"[4]

"कुम्हलायी–सी चाँदनी"[5]

"तुम चले गये, वाण की तरह ।"[6]

सामान की रखवाली के लिए खड़ा किए रहते हैं महतारी को, जैसे खेत में बिजूका ।"[7]

"साँवले मुँह पर फैली दो कजराई आँखें–जैसे बादल के किसी गुच्छे की श्यामलता एक कोने में कुछ गहरा उठी हो ।"[8]

---

1. घाँसू – गोविन्द मिश्र पृ0 121.
2. पगला बाबा गोविन्द मिश्र पृ0 12.
3. पगला बाबा गोविन्द मिश्र पृ0 14.
4. पगला बाबा (सिर्फ इतनी रोशनी) गोविन्द मिश्र, पृ0 66.
5. खाक इतिहास (संड़ाध) गोविन्द मिश्र, पृ0 46.
6. वही (वरणांजलि) पृ0 87.
7. वही (सध्यानाद) पृ0 19.
8. रगड़ खाती आत्महत्यायें (चौखटे) गोविन्द मिश्र पृ0 90.

"कोने में सामान इस तरह लगाने लगा जैसे कमरा नहीं, वह रेल का डिब्बा था ......।[1]

मिश्रित भाषा :

मिश्रित भाषा से तात्पर्य उस भाषा से है, जिसमें हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, तद्भव और देशी शब्दों का प्रयोग होता है, तो नितान्त शुद्ध या एक नहीं होती है । गोविन्द मिश्र की भाषा ऐसी ही खिचड़ी भाषा है जिसमें सभी तरह के शब्दों और वाक्यों का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है । अंग्रेजी भाषा के तो वाक्य पूरे–के–पूरे ही प्रयुक्त हो गए हैं । कतिपय उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं –

"......... शुरू के दिनों उनकी ताजगी जहाँ–तहाँ से खिली हुई दिखती थी । वे विक्षिप्त थे ..... जैसे बच्चे अपने वातावरण से निकाल किसी ओर जगह फेंक दिए गए हों । कॉलेज के गुनगुने सिमटाव के बाद अब फील्ड का बिखराव ही बिखराब था ..... कार्यालय वाली लम्बी–चौड़ी इमारत, अफ़सरों के छत्ते, क्लर्कों के गिरोह पर गिरोह, इधर से उधर जाते फ़ाइलों के बासी–बासी गट्ठर और गैलरीज में मैले पेन की तरह कहीं भी उतरती भीड़ ट्रेनिंग कॉलेज में सब उनसे मिलने आते थे, यहाँ उन्हें सबसे मिलने जाना था।[2]

इस अन्विति में तीनों ही भाषाओं के शब्द देखे जा सकते हैं – जैसे विक्षिप्त वातावरण, कार्यालय आदि हिन्दी के तत्सम, शुरू, ताजगी, जगह, इमारत, गिरोह आदि उर्दू और ट्रेनिंग कॉलेज, अफसर, क्लर्क, गैलरीज, मैलेपेन आदि आदि अंग्रेजी के शब्द हैं । ऐसे अनेक उदाहरण अनेक कहानियों में मिलते हैं, जिन्हें पढ़ने से लगता है, मिश्र जी ने हिन्दी भाषा में भी प्रचलित विदेशी भाषा के शब्दों को अपनाकर नया रूप दिया है । एक और उद्धरण –

---

1. धुँधलका (आसामान कितना नीला) – पृष्ठ 47
2. नये पुराने माँ बाप (जिहाद) – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ ।

"नेशनल स्पोर्ट्स क्लब में डिनर था, उस शाम हमारे ही ग्रुप का । सिर्फ एक बाहर का आदमी था । उनमें से तीन ने विभागीय परीक्षा पास की थी । हम तीन पहुंच चुके थे । बाकियों का इंतजार था, उसको भी ।[1]

कहीं-कहीं तो ठेठ अंग्रेजी के वाक्य ही प्रयुक्त कर डाले हैं –
"म्यूजिक तेजी पर था । .... उसे डार्लिंग, दिस इज मैडनिंग ...कम ऑन..."[2]

इसी कहानी में एक स्थल पर संवाद ही अंग्रेजी भाषा में चलता है –

"यू काण्ट डू विध हिम ..... कम टू मी ..... " उसने कहा ।
प्लीज गो टू मोर सीट....... प्लीज...." मिस ईरानी ने सख्त होकर कहा ।
"टर्न हिम आउट, इट्स माई इन्सल्ट[3]

इसी कहानी में एक और वाक्य –
"यू नेवर केयर्ड टु कम टु माई टेबिल इविन वन्स ......।[4]

बदरंग कहानी में भी कुछ ऐसे स्थल हैं –
"बण्डर फुल टाइम यार ..... दौलत कह रहा था ..... शी इज ग्रेट .... सैक्स, साला, सारे का सारा चूस जाती है, स्पर्म्स खाती है .... नाइस इवनिंग ।" और भी आगे .....

"कम औन डार्लिंग ..... वीड्रिंक देयर ... मैं उसके पास ....

---

1. नये पुराने माँ बाप – (जिहाद) – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 13
2. नये पुराने माँ बाप (अव्यवस्थित) गोविन्द मिश्र पृ0 26.
3. वही, गोविन्द मिश्र, पृ0 30.
4. वही, गोविन्द मिश्र, पृ0 32.

"नीना डियर..... चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ ...... कम अप .... और भी ...."आई लाइक यू...... यह घड़ी सोने की है न ...... कहाँ खरीदी?"[1]

"एक सड़क दो तस्वीरें" कहानी से –

"बीमेंस हॉस्टल का मुंह चूमती हुई पी0सी0ब0 रोड, रोड से थोड़ा–सा हटकर एक छोटा क्वार्टर, क्वार्टर का चबूतरा झाड़ती हुई कोई अधेड़ ।[2]......

"अपुन की स्टाइल में कोई फर्क नहीं पड़ने का, कल याआज वहां या यहाँ । देख लोएयर कंडीशनर चालू है, क्या ? ये लोग यह न सोचें कि मेरे बापजान के यहां आये हैं या यह छोटा सा कस्बा है, तो इन्हें कोई तकलीफ होगी । * * * * ये ... हर मैजेस्टी दी क्वीन ऑफ माई हार्ट .... इनसे मैंने कहा, "डार्लिंग, तुम्हें ऐसे रखूंगा कि क्या साला कोई आई0ए0एस0 .... ऐश करो ......।[3]

(...... पहली अलबत्ता ज्यादा साफ न थी ..... कौर रंगनाथन .... दो माह बाद रिटायरमेंट ..... प्रधानमंत्री का ऐक्टेंशन ..... जान की नाथ, प्रधानमंत्री का खासुलखास .... रंगनाथन क्या ....[4]

और – "डौट लुक डाउन अपॉन मी फादर । आप मुझे निकम्मा समझते हैं ।[5]"

अन्यत्र "एंड नाउ, में आई हैव द ऑनर ऑफ बींग इंट्रोडयूस्ड टु द ग्रेट पर्सनाल्टीज हियर ......।[6]

---

1. नये पुराने माँ बाप (बदरंग) – पृष्ठ 44–45
2. रगड़खाती आत्महत्यायें (एक सड़क दो तस्वीरें) पृ0 39.
3. पगला बाबा (एक बूँद उलझी) पृ0 3.
4. धाँसू (बहुधन्धीय) पृ0 33.
5. वही (झूला) गोविन्द मिश्र, पृ0 48.
6. खुद के खिलाफ (कहानी नहीं) – पृष्ठ 80

और – "कहाँ" यूनिवर्सिटी, कहाँ कब्रें..... और कहाँ अशर्फिया .... समय अक्सर कैसे–कैसे मजाक करता है।"[1]

"निष्कासित" कहानी में अधिकारी रामेश्वर राय का कथन –

"गलती ...... यह सिर्फ गलती है ? तुम्हारे पास इतने रूपये ..... और तुम अपने ही अफसर को घूस देने चले आये .... यह कितना सीरियल है । आप जनाब गिरफ्तार होंगे और जेल जायेंगे । * * * * * लिखो, अगर गिरफ्तारी, इन्क्वायरी, बदनामी से बचना चाहते हो .... "[2]

"खाने को चला जाये । दिस यंग मैन मस्ट बी हंग्री"

मुहावरेदार भाषा :

गोविन्द मिश्र की भाषा में एक दर्शक की तटस्थता ही नहीं, बल्कि सक्रियता का अहसास सतत दिखायी देता है । जहाँ उनकी भाषा में आँचलिक (ग्रामीण) परिवेश में प्रचलित शब्दों का प्रयोग दृष्टिगत होता है, वहीं लोक प्रचलित, मुहावरे और कहावतें भी भाषा एवं कथ्य को सशक्त बनाती है । ऐसी मुहावरे दार और कहावतें युक्त भाषा के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

"सतरह वर्ष तिनकों की तरह उड़ गए हवा में[3] "यहां" हवा में तिनके की तरह उड़ जाना" एक मुहावरा है जिसका अर्थ समय व्यतीत होने से है ।"

"अरे पैसे का रंग ही कुछ और है ।"[4] (वही) एक कहावत है ।

---

1. खुद के खिलाफ (कहानी नहीं) गोविन्द मिश्र, पृ0 85.
2. आसमान कितना नीला (निष्कासित) गोविन्द मिश्र पृ0 27.
3. रगड़खाती आत्महत्यायें (हाजिरी) गोविन्द मिश्र, पृ0 31.
4. वही, गोविन्द मिश्र, पृ0 33.

"इतने किए कराये पर फिर से पानी नहीं फेरना था"[1]

वह आटे की तरह जब मन आया गूँथा करती है ।"[2]

उसके माँ–बाप के आगे नाक रगड़ते हैं ।[3]

किस मनहूस से पाला पड़ा है ।"[4]

"शायद अब घर–बसाने की फिराक में हो ।"[5]

"समय बड़ा बलवान है ...... वही अर्जुन वही बान"[6]

"उन्हें न घर का रखा, न घाट का"[7]

"तुम चले गये, बाण की तरह ।[8]

"कुछ कन्नी काट जाते हैं .....[9]

"गोटी फँसी हुई थी", "मैं तो जानवरों से भी गए–गुजरे हैं",

"घर का कुत्ता क्या करेगा ? खाना भी न मिले तो सेवा करने से बाज न आयेगा?"[10].

---

1. रगड़ खाती आत्महत्यायें (कुत्ते) गोविन्द मिश्र, पृ078.
2. वही, पृ0 78.
3. वही, (चौखटे) पृ0 90.
4. वही, (खण्डर की प्यास) पृ0 93.
5. खाक इतिहास (संध्यानाद) पृ0 16.
6. वही, पृ0 20.
7. वही, पृ0 20
8. वही, (वरणांजलि), पृ0 87
9. धाँसू (बहुधन्धीय) गोविन्द मिश्र पृ0 29
10. वही (प्रत्यावराधे) गोविन्द मिश्र पृ0 73

"मुझे दूध की मक्खी की तरह बाहर निकाल फेंका ....[1]

"हवा अपने खिलाफ थी ।" "क्या नौ सिखिए जैसी बात करते हो?

"लालच बाजी मार ले गया"[2]

"किसका मतबल राजनीति में सब कुछ हाथ धो देना होता ।"[3]

"भगवान कुछ न कुछ करेंगे ।" "भगवान की मर्जी ...।"[4]

"सिर्फ आदमी को गुस्सा पीना आना चाहिए ।" ठेकेदार बाहर से ढीला बना रहा, पर अन्दर वह एकदम राख हो गया था ।"[5ए]

"दिनेश ने कढ़ाई खूब चाटी होगी .....।"[5]

"कब कौन बेलगाड़ी कर्ण का रथ हो जाए, नहीं पता"[6]

"नउनियाँ औरन के पैर धोये, अपने धाते लजाय ।"[7]

"जैसे उदयी वैसे भान–न उनकें चुंदई न उनके कान ।[8]

"आन न जाने पाये ।[9]

"पैसे की दुनियाँ में बड़ी अहमियत है । सब उसी को पूजते हैं[10]

---

1. ~~वही~~ घास, (गोबरगनेसा) गोविन्द मिश्र, पृ0 75
2. वही, पृ0 77-78
3. वही, पृ0 85
4. पगला बाबा (गुरूजी) गोविन्द मिश्र, पृ0 62
5. नये पुराने माँ–बाप (~~आँकड़े~~ दिलचस्पी) गोविन्द मिश्र, पृ0 104

5ए वही, पृ. 64

6. मेरी प्रिय कहानियाँ "कचकौध" ले0 गोविन्द मिश्र, पृ0 15.
7. वही, पृ0 17.
8. वही, पृ0 25.
9. वही, पृ0 25
10. खुद के खिलाफ – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 41

"तुम आदमी लोग कितने चोंचले बाज होते हों ।"[1]

"वह बिचक गयी, जैसे ऊपर छिपकली आ गिरी हो ।"[2]

"जिसके पैर न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई ।"[3]

"नकेल खींचकर रखना पड़ेगा..... ।", "लाठी के डर से बंदरिया रहेगी भी और नाचौ भी.... ।" "मुझे खाने को आ गया, चाटकर ही दम लेगा ।"

"सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता" ।, "जब भैंसिया पल्हानी तो पड़वे आयी मनानी" । "गुन ना थराई हराजमादी कहाई ।", "जो होती तो धोती" – "किसे-किसे दोष देते फिरोगे । दोष तो समय का है ।"[4]

"गढे मुर्दे उखाड़ने लगते हैं ।"[5]

"तुम्हारे लिए लार टपका रहे हैं ।"[6]

"विधि हु न नारि हृदय गति जानी – सकल कपट अध अवगुन खानी"

*   *   *   *

"सोचिउ पुनिपति वंचक नारी – कुटिल कलहप्रिय इच्छा चारी ।"

"स्त्रीणां पवित्रं परमं पतिरेको विशिष्यते ।"

"नारि सदा जड़ अज्ञ", आदि (गोरू के आगे तो सानी फिर भी रख दी जाती है ।" "एक तो करेला, ऊपर से नीम चढ़ा ।"[7]

इस विवरण से ज्ञात होता है कि मिश्र को मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग भाषा को सशक्त आकर्षक और प्रभावशाली बनाने का अच्छा अभ्यास था ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ (खुद के खिलाफ) – पृष्ठ 43
2. शापग्रस्त – पृष्ठ 50
4. वही – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 34-43
5. वही (गिद्ध) – पृष्ठ 46
6. वही (किस कीमत पर) – पृष्ठ 72
7. वही (ज्वालामुखी) – पृष्ठ 12
3. वही (निरस्त) – पृ. 33

शैली योजना :

उपन्यासों में प्रयुक्त शैली की भाँति ही गोविन्द मिश्र ने अपनी कहानियों में भी विभिन्न प्रकार की शैलियों को अपनाया है । कहीं तो इनकी शैली भावात्मक हो गयी है, तो कहीं वर्णनों में ही लग जाते हैं, कहीं व्यंग्य करने लगते हैं तो कहीं सूक्तियों का प्रयोग । इस प्रकार इनकी कहानियों में प्रतिबिम्बित शैली योजना की निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :–

1. भावात्मक शैली
2. वर्णनात्मक शैली
3. सूक्तिपरक शैली
4. व्यंग्यपूर्ण शैली
5. अंलकारिक शैली
6. आँचलिक शैली

1. **भावात्मक शैली :**

मिश्र जी की कहानियों में यत्र–तत्र ऐसे प्रसंग एवं स्थल देखे जा सकते हैं, जहाँ वे भावजगत में डूबते दृष्टिगत होते हैं । ऐसे प्रसंगों व स्थलों पर इनकी शैली भावात्मक हो गयी है । वाक्य छोटे–छोटे किन्तु सारगमिति बन पड़े हैं दृष्टव्य है कुछ उद्धरण –

"मुझे ताज्जुब यों ज्यादा था कि उसे फूलों से कभी कोई खास लगाव नहीं रहा था और न ही हम कभी वैसी कोई चीज विकसित करने का मौका ही दे सके थे ।[1] लड़की

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ (शुरुआत) - ले. गो. मिश्र - पृ. 101

के चेहरे पर कुछ नहीं था, सिर्फ एक अकेलापन, उदासी .... उदासी भी नहीं, बाहरी दुनिया के लिये एक खास किस्म की निरीहता, सूखापन । सात साल के बच्चे के चेहरे पर वे बाते अजीब थीं ।"

और भी – "स्थिति फिर उसके हाथ में आ गयी थी लौट फिरकर यह फिर आत्मविश्वास से भर उठा था । सोचा कि आर्डर को नाटकीयता से फाड़कर एक हँसी हँसे, इस तरह कि वह समझ जाये कि आखिर अक्ल से भी कुछ मिली है कुछ[1]....... पर इसके पहले उसे तैयार कर लेना इसे ज्यादा सभ्य तरीका लगा । 2 1

अन्यत्र – "पर यह बात सही थी कि वह अपनी अपरिपक्वता हर समय जाहिर ही करती रहती थी, जिससे मुझे खासी कोफ्त होती थी । इस तरह वह अपनी असली उम्र छिपाने की कोशिश करती है या कि औरतें चाहें जितनी पढ़ लिख जायें, अधकचरी ही होती हैं ... मैं ठीकसे सोच न पाया था ।"[2]

और भी – "बेकसी के दो छोरों में अनमनी बँधी सी यह सड़क टूटे स्वप्नों के सूखे फूल अपने दामन से लगाये दीखती है, इस पर नाचती परछाईयाँ दिल का पोर तोड़ती सी हैं । इसके बाँये किनारे मुस्काराते दिखते हैं, गुलाब के फूल और दाँयें किनारे नींद में डूबा है राख का एक ढेर–एक छोर पर अल्हड़ जिन्दगी की मुस्कान और दूसरे पर समय झुर्रियाँ, इस पार परियाँ और उस पार हड्डियाँ ।"[3]

अन्यत्र – "बिन्दुओं के उलझाव में मेरी सड़क की नस–नस टूट गयी है । उसके टूटे टुकड़ों में मैं कोई बिन्दु टटोल रहा हूँ । शैशव की आँखें सड़क की आखिरी

---

1. नये पुराने माँ–बाप (दोस्त) गोविन्द मिश्र, पृ0 37
2. वही, (सीधा दूर तक सीधा) गोविन्द मिश्र, पृ0 90
3. रगड़ खाती आत्महत्यायें (एक सड़क दो तस्वीरें) गोविन्द मिश्र, पृ0 36.

दूरी तक फैल फूट चुकी हैं, शायद उसे होश नहीं कि उसका व्यक्ति पिघल कर इसी दूरी में गुम हो गया है ।"[1]

और भी – "प्रेम वह है जो हमारे बीच था या यह जो अब है डूबने का सुख या कि जलने की यातना । हम जिस व्यापारी पीढ़ी के हैं, वह सिर्फ सुख चाहती ...लाभ। यातना की छाया पड़ी नहीं कि प्रेम जलने का सुख है ..... तभी तो इस तरह जलने के दरम्यानि भी एक मिठास मेरे इर्द गिर्द बार–बार तैरती रहती है ..... ।"[2]

एक अन्य स्थल पर – "जीप गुजर गयी है, एक चिकनी–चिकनी सी ताजगी छलक–छलक कर मेरे मुंह पर बिखर गयी है और मेरा चेहरा जैसे इस ताजगी में जकड़ कर रह गया है – सुडोर सा नाक नक्श, काली चमड़ी से तराशे हुये – जैसी लहलहाते समुन्दर में खड़े बड़े–बड़े नुकीले जहाज, अधबन्द और अध खुले होठों से झलकते सफेद दाँत – काली चमड़ी में और भी चमकते .... सब कुछ चिकना–चिकना फिसलता सा मेरा जी नहीं संभल पा रहा है ..... बासी–बासी से इस माहौल में ताजगी का एक फुव्वारा रह–रहकर फूट पड़ता है । उसकी बूँद मेरे मन में खरोंच उबलती है ..... * * * * फिर आज क्यों ये खरोंचें .... ।"[3]

इस उद्धहरण में पूरा अनुच्छेद एक ही वाक्य हो निर्मित है, इस प्रकार कहीं कहीं इस शैली में लम्बे–लम्बे वाकय भी प्रयुक्त हुये हैं ।

---

1. रगड़ खाती आत्महत्यायें, पृ0 109.
2. खुद के खिलाफ (अलग अलग समय) गोविन्द मिश्र, पृ0 – 107
3. रगड़ खाती आत्महत्यायें (फर्क) गोविन्द मिश्र, पृ0 83.

2. वर्णनात्मक शैली :

किसी घटना, स्थल अथवा वातावरण का जहाँ वर्णन करना होता है या अपने कथा की स्पष्ट करना होता है, वहाँ इस शैली के दर्शन होते हैं । गोविन्द मिश्र ने भी यत्र–तत्र इस शैली का आश्रय किया है, कुछ उद्धहरणीय प्रंसग यहाँ प्रस्तुत है –

(1) "वे जाड़े की तरफ सरकते हुये दिन थे । दफ्तरों के बंद होते ही अंधेरा तेंजी से गिरना शुरू हो जाता है । आदमी औरतों के गिरोह सड़क पार कर ओवरकोटी टपाटप चाले से ट्यूब या बसों की तरफ लपकते । ट्यूब स्टेशनों पर चढ़ती उतरती चीटियों जैसी कतारें । जिन्दगी जो दिन भर दफ्तरों में ढँकी मुँदी रहती, वह जैसे बाँध के फूटते ही सड़कों पर एकाएक ही मारी मारी फिरने लगती ..... * * * * जब तक कि दूसरी सुबह नहीं हो जाती और वे दफ्तरी चोलों को ओढ़ फिर नहीं निकलने देते ।"[1]

मेला के दृश्य का वर्णन –

(2) रेलगाड़ी से उतरते ही ऐसा लगा, जेसे वे रंगों के बीच उतर आये ही । चारों तरफ रंग ही रंग फैले थे, ज्यादातर पीले, गेरूए और उनके आसपास के हर दूसरे यात्री की पोशाक इन्ही रंगों में से थी, जहाँ–तहाँ बड़े–बड़े पोस्टर भी इन्हीं रंगों में दीवार पर तिलक से खिचें हुये थे । सामने लहरें मारता हुआ उत्साही जनसमूह था ...... उत्साह जिससे मेला बनता है । चारों तरफ उनके स्वागत का आलम था, एक तरफ शहर की वैष्णवी सभा स्वागत के बोल लगातार बोले जा रही थी, दूसरी तरफ नगरपालिका की तरफ से यात्रियों को बड़े ही नम्र स्वर से हिदायतें दी जा रही थी – "कृपया बॉयी तरफ चलें * * * * चीजों से बचें और गन्दगी न फैलाएं ..... ।"[2]

---

1. खुद के खिलाफ (शाप ग्रस्त) गोविन्द मिश्र, पृ0 46.
2. धाँसू (प्रत्यावरोध) गोविन्द मिश्र, पृ0 --58

(3) और भी – "झील खूबसूरत थी ...... हरी पहाड़ी जैसे अपनी गोद में साफ पानी का एक भरा कटोरा लिये बैठी थी । आर–पार फैले हरेपन में एक पीली सी त्रिभुजाकर इमारत घाव की तरह उछली हुयी थी । ऊपर चोटी के इर्द–गिर्द बर्फ का छिड़काव था । ज्यों ज्यों हम केबिलकार से ऊपर बढ़ते गये, वह कम होता चला गया । चोटी पर कुछ भी नहीं था ।"[1]

1942 की घटना का वर्णन –

(4) "अंग्रेजों भारत छोड़ो ! भारत माता की ..... जय ! इन्कलाव जिन्दाबाद । महात्मा गाँधी की ..... जय ! करो..... या मरो ! बंदे मातरम् ! सन् 1942 छोटे–छोटे कस्बे की गुजाँयमान ! प्रभातफेरियाँ, मीटिंगें, जुलूस, गिरफ्तारियाँ ! यहाँ तक कि बच्चों ने भी एक नया खेल सीख लिया था । जहाँ कहीं लाल बन्दर (माने अंग्रेज) दिखायी दें .... आदमी या औरत, अफसर या साधारण आदमी अकेले या झुंड में ...... बच्चे जल्दी से बोलते "क्विट इण्डिया" और भागकर किसी गली में छिप जाते । वहाँ से वे फिट चिढ़ाते रहते........ "क्विट इण्डिया" ...... "क्विट । धूल से लिपटे रंग धंड़ग गरीब बच्चे । वे क्विट का मतलब भी नहीं जानते थे । लेकिन उसका भी असर था .... अंग्रेंजी का हर कदम पर विरोध कर बच्चे भी अपनी भूमिका निभा रहे थे ।"[2]

3. <u>सूक्तिपरक शैली</u> :

सूक्ति का अर्थ है सुन्दर उक्ति अर्थात् सामिप्राय श्रेष्ठ कथन जिसमें स्वल्प कथन के द्वारा बड़ी महत्वपूर्ण सार्थक बात व्यक्त की जाती है । अथवा सूक्ति गागर में सागर

---

1. खाक इतिहास गोविन्द मिश्र, पृ0 96–97.
2. आसमान कितना नीला (काल्हखंड) गोविन्द मिश्र, पृ0 15.

भरने जैसा उपक्रम है, जिसके द्वारा संक्षेप में ही उपदेशपत्क या सन्देशपरक तत्व दूसरे लोगों के समक्ष प्रकट कर दिया जाता है । हिन्दी और संस्कृत साहित्य में सुक्ति परख शैली का प्रचुर उपयोग हुआ है । मिश्र जी ने भी इस शैली का अपनी कहानियों में उपयोग किया है ।

उद्धदरण – "बूढ़े एकदम गिद्ध होते हैं"[1] तात्पर्य है कि वृद्धजनों का दृष्टिपैनी और तेज होती है क्योंकि उन्हें अपने लम्बे जीवन का अनुभव होता है, वे दूरदर्शी हो जाते हैं । इसीलिये परिवार के वृद्ध ने बिना पति को साथ लिये पत्नी को अकेले ही किसी अन्य पुरूष के साथ बाहर जाने की आज्ञा नहीं दी ।

2. यह गाड़ी ऐसे ही चलती जाये .... कहीं न रूके – और एक बे–मकसद ऐसे ही चलते जायें ..... वहाँ तक जहाँ समय को भी थकान आने लगे ।[2]

यहाँ कहानीकार जीवन को एक गाड़ी की संज्ञा प्रदान करता है । जिस प्रकार बिना रूके गाड़ी चलती जाती है, वैसे ही जीवन भी निरन्तर गतिशील रहता है । जब यह गतिमान यही रहता है तो यह नष्ट हो जाता है । इसके साथ ही निरूद्देश्य जीवन का कोई अर्थ नहीं होता । जीवन का कोई न कोई लक्ष्य होना चाहिये । समय की गति ही अबाध है । वह निर्बाध गति से निरन्तर चलता रहता है । जब समय भी थकान अनुभव करने लगे तो समझो जीवन का लक्ष्य पूरा हो गया और हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो गये ।

कोई अपने पाँव कुल्हाड़ी थोड़े ही मारती है ।[3]

यद्यपि यह एक मुहावरा है, तथापि इस प्रंसग में एक सूक्ति परक वाक्य भी है।

---

1. रगड़ खाती आत्महत्यायें (उपेक्षित) पृ0 16.
2. रगड़ खाती आत्महत्यायें (साजिश) गो0मि0, पृ0 24.
3. वही, (हाजिरी) पृ0 34.

मनुष्य जब स्वंय ही मनोभावना को छिपा लेता है और अपने गुण, अवगुण या दोष को अपने विश्वासपात्र को भी नहीं बताता तो उसे पग–पग पर संकट पर संकट आ घेरते हैं और ऐसे व्यक्ति के लिये यह कहावत बन जाता है कि उसने तो अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मार ली है । यहाँ कीली अपने प्रिय लोखा को अपने मन की सारी बातें नहीं बता देना चाहती है, इसीलिए वह कहती है कोई अपने पाँव कुल्हाड़ी थोड़े ही मारनी है ।

"अरे पैसे का रंग ही कुछ और है"[1]

संसार में रूपया, धन–दौलत का अलग ही और विचित्र प्रभाव देखा जाता है । कहा भी है "सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयुन्ति" (अर्थात् सभी गुण स्वर्ण में ही विद्यमान रहते हैं) सारा संसार पैसे (भौतिकवाद–अर्थवाद) के पीछे भाग रहा है । इसीलिए कीली भी खान मैनेजर के साथ भाग गयी ।

"एक छोर पर अल्हड़ जिन्दगी की मुस्कान और दूसरे पर समय की झुर्रियाँ, इस पार परियाँ और उस पार हड्डियाँ[2]

इस सूक्ति में जीवन के सुख और दुख की ओर संकेत किया गया है । सुख और दुख, सम्पन्नता और निर्धनता जीवन के दो सिरे हैं, जिसके जीवन में सुख है, वहाँ जवानी में मुस्काराहट है, आनन्द है और जहाँ दुख ह, वहाँ अन्धकार है । एक जीवन एक सड़क की तरह बताया गया है, सड़क के एक ओर सुंदर आलीशान भव्य भवन हैं, जहाँ ऐशोआराम का जीवन व्यतीत हो रहा है, जबकि दूसरी ओर निर्धनता, अभाव और दैत्य मुंह बाये खड़े हैं । सुखमय जीवन ही परियों का देश है और अभावग्रस्त जीवन में हड्डियों ही शेष दिखायी देती हैं । तुलसीदास जी ने "बाल्मीकि रामायण के "बाल काण्ड" में लिखा है – "जड़ चेतन गुन–दोषमय, विश्व कीन्ह करता ।"

---

1. रगड़ खाती आत्महत्यायें (हाजरी) पृ0 33.
2. वही, (एक सड़क दो तस्वीरें)पृ0 36.

"लड़की की जिन्दगी बन्धनों की रस्सी से कसी रहती है"[1]

"एक में उठती आँधी का जोश है, दूसरी में समुन्दर के किनारे डूबती शाम की संजीदगी है"[2]

"आज का आदमी बिल्कुल मुन्ना की तरह रोता है और बिल्कुल उसी तरह ख्वाब देखता है"[3]

इस सूक्ति में आदमी की तुलना अबोध बच्चे से की गयी है । अबोध बालक जैसे जब चाहा रो लिया और जब चाहा हँसने लगा और अनेकोनेक सपने संजोता रहता है । वही ही मनुष्य भी कल्पना एवं स्वपनों के संसार में डूबता उतरता रहता है । जब भी थोड़ा सा संकट आया कि रोने लगा और जब थोड़ा सा सुखद समय आया तो अनेक स्वप्न सँजाने लगता है और अनेक योजनाएं बनाने में लग जाता है, कहा भी है – "अनागतं यः कुरूते स शोभते – स सोच्यते यो न करोत्यानागतम् ।" (रोता और ख्वाब देखता मुन्ना) ।

"और फिर वह भीड़ में खो गयी थी" – नये चेहरों के झाग में पुरानी बँद की तरह ....।[4]

.... "तो क्या बुरा है अगर मैं ख्यालों के एक पिंड को भी अपना देवता मान भावों के फूल उस पर चढ़ाती रहूँ और इसी बहाने जीवन कुछ सार्थक समझूँ ।"[5]

---

1. वही, (एक सड़क दो तस्वीरें) पृ0 36.
2. वही, पृ0 37.
3. वही (रोता और ख्वाब देखता मुन्ना) पृ0 46.
4. रगड़ खाती आत्महत्यायें (ठहराव की ईट) पृ0 55.
5. वही, (यक्षिणी का पत्र यक्ष के नाम) पृ0 73.

"लेकिन यह क्या कि गलती तो किसी और की और दिक किया और लोगों को ही[1]–

अपराध कोई करता है सजा किसी और को अक्सर ऐसा देखा गया है ।[1]

"प्रगतिशीलता आखिर क्या है, तरक्की का दूसरा नाम है ।" (अपाहिज)2

.... मतलब, असली अमृत पहले वे पियेंगे, देवताओं और असुरों में भी तो अमृत के लिये छीना झपटी मची थी, समझे? (प्रत्यावरोध)[3]

इस सूक्ति में पैराणिक अद्धरण के माध्यम, से कुंभ पर्व के अवसर पर सन्त–महात्माओं के अखाड़ों और सर्वप्रथम गंगा स्नान पर व्यंग्य है ।

"जिंदगी कभी–कभी टंगड़ी ऐसे ही मारती है– जो सोचा भी नहीं जा सकता वह भक्क से सामने आ जाता है (खुद के खिलाफ)[4]

मनुष्य सपने और कल्पनायें बहुत करता परन्तु जीवन में कुछ ऐसा ही हमेशा नहीं हो पाता और मनुष्य इस पर इतना अवाक रह जाता है ।

"प्यार जैसी चीज सभ्यता के इस टुकड़े का बस का रोग नहीं ।" (खुद के खिलाफ)5

"वे घोड़े पर चढ़कर बैठेंगे और उसे अपने–अपने ढंग से हाँकेंगे – साम, दाम, दण्ड, भेद – हर नीति का इस्तेमाल करेंगे ।[6] (निरस्त)

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ (कचकौंध)गो0मि0, पृ0 21.
2. अन्त:पुर (अपाहिज) गो0मि0 पृ0 – 97
3. धाँसू (प्रत्यवरोध) गो0मि0 पृ0 – 62
4. मेरी प्रिय कहानियाँ (खुद के खिलाफ) पृ0 40.
5. वही, पृ0 44.
6. खुद के खिलाफ (निरस्त) – पृष्ठ 34

ऐसे धर्म की स्थापना जो लोगों को अलग करने की बजाय उन्हें एकता के सूत्र में बाँधे – अपने देश के भी काम आये । (प्रभामण्डल) [1]

""समय बड़ा बलवान – वही अर्जुन वही बान"[2]

महाभारत की कथा से समय की महत्ता, उसके बदलते रूप को बताया गया है, जिस अर्जुन ने अपने दम पर महाभारत का युद्ध जीता वही नपुंसक बन गया और गोपियों के साथ भीलों द्वारा लूट लिया गया ।

"कल के सुख के लिये, आज तकलीफ उठानी होगी"[3]

भविष्य सुखमय हो तो वर्तमान में संघर्ष और कष्ट उठाने पड़ेंगे ।

"अपना काम करने से कोई छोटा नहीं हो जाता"[4]

"कहते हैं, आत्मा के अपने मोह होते हैं, इसलिये बहुधा[5] वह उसी आत्मीयता के घेरे में पुनः शरीर धारण करता है ।

"ईमानदारी का भी एक अपना अहँकार होता है .... [6]

"खादी और टोपी के नीचे धोखा छिपा होता है.... भ्रष्टाचार है ।"[7]

इस प्रकार गोविन्द मिश्र ने अपनी कहानियों में यथास्थान प्रंसगानुसार अनेक सूक्तिपरक वाक्यों का उपयोग किया है ।

---

1. खुद के खिलाफ (प्रभामंडल) गोविन्द मिश्र, पृ0 — 65
2. खाक इतिहास (संध्यानाद) गोविन्द मिश्र, पृ0 20.
3. वही, (मुझे घर ले चलो) गोविन्द मिश्र, पृ0 36.
4. वही, (उल्कापात) गोविन्द मिश्र, पृ0 81.
5. वही, (वरणाँजलि) गोविन्द मिश्र, पृ0 92.
6. आसमान कितना नीला (निष्कासित) पृ0 30.
7. वही, (अवरूद्ध) पृ0 98.

4. <u>**व्यंग्यपूर्ण शैली :**</u>

कभी–कभी किसी बात को सीधे–साधे न कहकर ऐसे ढंग से प्रस्तुत किया जाये कि समझने वाला समझ भी जाये और समझकर अपने किए पर शर्मिंदा हो । इस कथन शैली को व्यग्यात्मक शैली कहते हैं । गोविन्द मिश्र जी ने इस शैली का अपनी कहानियों के यथास्थान, प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया है – कुछ उद्धरण नीचे प्रस्तुत हैं –

–अरे हलांलियो ! आदमी भूखों मरता है और तुम ऐसी बरबादी करते हो ।"[1]

इस स्थल पर कहानी में भोजपुरी समाज के सम्मेलन पर व्यंग्य है, जहाँ प्रधानमंत्री के आगमन–भाषण स्वागत के अवसर पर चाय पानी के नाम पर तमाम (वाद्य सामग्री बची और फेंक दी गयी, जबकि अनेक गरीब और दीनहीन लोग भूखों मर रहे हैं, उनके लिए कुछ नहीं ।

<u>**"भगवान का दिया है, तो उलीचो खूब"[2]**</u>

वृद्ध अध्यापक अपने पुत्रों के अपव्यय से दुखी हो ये वाक्य कहते हैं ।

<u>**कहानी "अपाहिज" में –**</u>

"उधर चारपाई पर पड़े–पड़े वे सोच रहे थे कि प्रजातंत्र कब तक जिन्दो रह पायेगा ।"[3]

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ (कचकौंध) गो0मि0 पृ0 22.
2. वही, पृ0 23.
3. अन्तःपुर (अपाहिज) गोविन्द मिश्र, पृ0 – 66

यह व्यग्य राजनीति और राजनीतिक लोगों पर है, जब एक बड़े नेता एक अपाहिज रोगी को लात मारकर चारपाई से नीचे गिरा देता है । नेता जितना चाहे मौज मस्ती करे, लूटे और भाषण में उसी जनता की स्तुति करें जिसे लात मारकर नीचे गिराया है तो क्या यही प्रजातंत्र यानी प्रजा का राज्य है, जहाँ प्रजा गिरकर भी किसे शिकायत करें।

कहानी अन्त:पुर में –

"उनके जमाने में पार्टी में शरीफ लोग हुआ करते थे, तहजीब थी, कायदे थे .... अब तो बगावती फायरब्रॉड है ..... ।"[1]

राजनीति में आधुसे स्वार्थी, लालची तत्वों पर एक व्यग्य है ।

कहानी "खुद के खिलाफ" में :

विमला का कथन – "पैसे की दुनिया में बड़ी अहमियत है ।"[2]

ससदाचार, चरित्र, नैतिकता का कोई मूल्य नहीं है सिर्फ पैसा मूल्यवान है भले ही अनैतिक कार्यों द्वारा कमाया गया हो सामाजिक व्यवस्था और सोच पर व्यग्यं है ।

कहानी "अवरूद्ध" से – "खादी और टोपी के नीचे धोखा छिपा होता है ।"[3]

महात्मा गाँधी ने स्वदेशी आन्दोलन के बीच अंग्रेजों का विरोध करने हेतु खद्दर पहनने और भारतीयता की पहचान हेतु टोपी धारण करने की प्रथा चलाई, जिसमें सादगी, देशभक्ति एवं स्वाभिमान की भावना प्रमुख थी परन्तु आज उस खादी और टोपी को हम सभी गलत कार्यों की ठेकेदारी का लायसेन्स नेता प्राप्त कर लेता है ।

---

1. अन्त:पुर (अन्त:पुर) गोविन्द मिश्र, पृ0 — 102
2. मेरी प्रिय कहानियाँ (खुद के खिलाफ) गोविन्द मिश्र, पृ0 41.
3. आसमान कितना नीला (अवरूद्ध) गोविन्द मिश्र, पृ0 98.

5. **आंलकारिक शैली :**

अलंकृत भाषा की भाँति ही गोविन्द मिश्र ने आलंककारिक शैली को अपनाकर अपनी कहानियों में अलंकारों का भी समुचित प्रयोग किया है । उन्होंने उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक जैसे अलंकारों का ही अधिक प्रयोग हुआ है । कतिपय अलंकृत उद्धरण दृष्टव्य है "हाजिरी" कहानी में खान काम करने वाला एक मजदूर जो काला है, का चित्रण देखिये –

"...... पेमेंट के दिन कड़वे तेल से नहाकर कोयले की तरह चमकने वाला इंसान ...... * * * * पर यही इंसान शाम को जाके ठर्रा की बूँदे छलकायेगा जैसे अभी पसीने की बूँदें छलका रहा है ।"[1]

यहाँ पर काले मजदूर की कोयले से और शराब की की बूँदों की पसीने की बूँदों से तुलना की गयी है । "उपमा" अलंकार का सुंदर प्रयोग है ।

"...... लड़की की जिन्दगी बन्धनों की रस्सी से कसी रहती है ।"[2] बन्धनों का सादृश्य रस्सी से है अतः "रूपक" अलंकार प्रयुक्त हुआ है ।

"लहराती हुयी दो तस्वीरें सिमटकर एक में गुथ जाती हैं, जैसे पानी में हिलती परछाई के कई रूप पानी के थम जाने से फिर एक हो गये हों ।"[3]

यहाँ विशेष के द्वारा सामान्य का समर्थन किए जाने से अर्थान्तरन्यास अलंकार का प्रयोग देखा जा सकता है ।

"हवा के माफिक मुलायम और हर क्षण बदलने वाला बनना .... "[4]

---

1. रगड़ खाती आत्महत्यायें (हाजरी) गोविन्द मिश्र, पृ0 30.
2. वही, (एक सड़क दो तस्वीरें) पृ0 36.
3. वही, पृ0 40.
4. वही, पृ0 --

यहाँ लुप्तोपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है क्योंकि राजनीति में हवा की समानता होनी चाहिए ।

"कोठी बस्ती से अलग शहर के छोर पर थी ...... एक ऊँची पहाड़ी पर मुकुट की तरह जड़ी हुयी ।"[1]

"कच्ची सड़क फाटक के बाहर, साँप जैसी करवटे लेती हुयी ।"

पोते–पोती के साथ भीतर सोयेगी, जैसे बिल्ली अपने बच्चों को लेकर पड़ी हो .....।"[2]

"सामान की रखवाली के लिए खड़ा किए रहते हैं, महतारी को जैसे खेत में बिजूका ।"[3]

"पानी लेने के लिए वह उतर कर नीचे आ जाती है आँगन में, कुम्हलायी सी चाँदनी – कैद कैद ।[4]

"तुम चले गये, बाण की तरह ।"[4]

"माँ लकड़ी की तरह सख्त वहीं की वहीं बैठी रह गयी ।"

"कैसा है यह आदमी का जात । * * * * आदमी को दीखते ही गुर्राने लगेगा कुत्ता का माफक .... ।"[6]

"हर दिशा से शवयात्राएँ आ रही थी ..... जैसे चारों तरफ से छोटी–छोटी जलधाराएँ बड़ी धारा से मिलने बढ़ी चली आ रही है ।"[7]

---

1. खुद के खिलाफ (प्रभामंडल) गोविन्द मिश्र, पृ0 63
2. खाक इतिहास (संध्यानाद) गोविन्द मिश्र, पृ0 14.
3. वही, पृ0 19.
4. खाक इतिहास (संड़ाध) गोविन्द मिश्र, पृ0 46.
5. खाक इतिहास (वरणांजलि) गोविन्द मिश्र, पृ0 87.
6. पगला बाबा (प्रतिमोह) गोविन्द मिश्र, पृ0 29.
7. पगला बाबा, गोविन्द मिश्र, पृ0 14.

"लोबो तो सोता हुआ भी जैसे घोड़े पर सवार रहता ।"[1]

"और ईस्टर राक पर खड़ी वही पुरानी, जंग लगी सी इमारत ।"[2]

इस प्रकार अनेक स्थलों पर अंलकारिक शैली का प्रयोग देखा जा सकता है ।

6. **आँचलिक शैली :**

गोविन्द मिश्र ऐसे आधुनिक कथाकार हैं जो आँचलिकता की ओर आकृष्ट होकर लिखने वालों में गिने जा सकते हैं । नगरीय साहित्यिक खड़ी बोली भाषा–शैली के साथ–साथ मिश्र जी ने ग्रामीण–डेढ़ देहाती और आँचलिक भाषा शैली को भी अपनी कहानियों में स्थान दिया है । इनकी कहानियों में अधिकतर बुन्देलखण्डी भाषा और शैली के दर्शन तो होते ही हैं यत्र–तत्र बनारसी हिन्दी और मराठी शैली भी देखी जा सकती है । "फाँस", "कचकौंध", "सन्ध्यानाद", "मुझे घर ले चलो", "नये पुराने माँ–बाप", "प्रतिमोह", "सुनन्दो की खोली", जैसी कहानियाँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं । इन कहानियों में जो आंचलिक शैली प्रतिबिम्बित होती हैं, उसके कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं –

"कुठरिया अलग चूती है ...... छबैया ने बस नये–नये खपरें धर दिये हैं जहाँ वहाँ । खाड़ू थोड़ा घनी धरते, तब कहीं धार बनती । उन्हें कहाँ की पड़ी है ... वह ससुर ठाकुर जिसका घर है, जब उसे फिकर नहीं, उसे तो बस दिन भर चाय और तम्बाकू । * * * * टिपर–टिपर से आफत में जान है । कंडे, लकड़ियाँ चाहे जिस कोने सकोर ले जाओ, गीली जो जायेगी । शीत की वजह से जमीन नीचे से भी फफुआँदि हो आयी है ।"[3]

---

1. पगला बाबा (माइकल लोबो) गोविन्द मिश्र, पृ0 37.
2. पगला बाबा (सिर्फ इतनी रोशनी) गोविन्द मिश्र, पृ0 66.
3. मेरी प्रिय कहानियाँ (कचकौंध) गोविन्द मिश्र, पृ0 16.

एक अन्य स्थल पर –

"सारे कागज पत्तर बाँधे वे लखनऊ में तीन दिनोंसे पड़े हैं धर्मशाला में पनफत्तु ठोकतें हैं, खाते हैं । आज जाकर रामदीन एम0एल0ए0 से बात हुयी । ससुर बड़ा ढीला मड़ई निकला, यह तो चुनाव में तो क्या–क्या हँकारी मारता था यह करा दूंगा वह करा दूंगा ।"[1]

"फॉस कहानी में देखिये –

"भौजी गुर्सी कहाँ है, थोड़ा ताप लेते । बहुत जाड़ा है । तुम बता भर दो । हम उठा लेगें और सुलगा लेगें ।"

"खटिया के पासई धरीं । उतई कंडा धरे । आगी खुद या कै देखों, नई तौ इते ले आव, एक दो अंगराहम धर दैवी ।[2]

आगे भी –

"तौ का भई, अब हम कऊँ के कऊँ जा बसै पै कहैबी तौ बिरौरा केई, ... जिज्जी कहाँ हमें और हम ढ़ाडी परसै देत सो नोने दोऊ जनै जैं लेओ, सासरे में भैया खाँ खवावें कौ सुख रोज–रोज मिलत का ..... ।"[3]

"सन्ध्यानाद" कहानी में देखिये –

"और जहाँ से वह रिटायर हुआ तो खौखियाकर दौड़ने लगी, बेचारा भूल से चाय माँग बैठे तो – "बैठो तो पटाय कैं ; सब खाँ बनिहै तो मिल जैहे, काम न धंधा, दिन भर चाय ।[4]

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ (कचकौंध) गोविन्द मिश्र, पृ0 28.
2. खाक इतिहास (फॉस) गोविन्द मिश्र, पृ0 69.
3. वही, पृ0 71.
4. वही, (संध्यानाद) गोविन्द मिश्र, पृ0 14.

'लड़का – बहू का तेरे–तरे करती रहेगी ..... ।"[1]
और भी – कोठरिया से ही आवाज लगायी, "ओर री । आ, जरा पलका तौ कसवाले, देख तो कैसा गडढा हो गया है ।[2]

"नये पुराने माँ–बाप" कहानी में एक ग्रामीण बालिका की मनोदशा "रेल आती है और हमें देखकर रू जाती है, हम ऊपर चढ़ जाते हैं और फिर कू करके रेल चल पड़ती है ..... और रेल चली जाती है भागती – कितने सारे पहाड़ों नदियों को नाकती – फॉदती, कितनी बहादुर है रेल । मैं तो नारी और गोपेश के चबूतरों को भी नहीं नाक पाती । उस दिन कैसी गिरी थी – नाक से खून बहने लगा था ।"[3]

और भी – "आखिर इसमेंक्या था कि बापू मुझे डॉटने लगे – "टॉग तोड़ डॉलूगा जो अब वहाँ गयी ।" मेरी टॉगें टूट गयी तो मुझे भी उस लंगड़े की तरह सड़क पर घिसट कर चला और भीख मॉगना पड़ेगा ।"[4]

"पगला बाबा" कहानी में बनारसी शैली का अंकन दृष्टव्य है – "अरे छिदुआ, हम ठहरे बनारस के राजा । तोहरी ई कोठरी में समइबे का रे । उ देख हमारा रथ खड़ा हों" बाबा ने अपना कमजोर हाथ बाहर ढिली ढिलायी की ओर उठाया; ए ही पर गंगा मैया के पास ले जा । हम निकल जाईत ई रथ के रग्घू के टाल के नीचे जॉन घुटका चबूतरा हौ न ..... उहें छोड़ दि है ...... उहें हमार महतरोई हमारे साथ में थमौ ले रहली ....।"[5]

---

1. खाक इतिहास(संध्यानंद)गोविन्द मिश्र, पृ0 15.
2. वही, पृ0 16.
3. नये पुराने माँ बाप, (ढलान) गोविन्द मिश्र, पृ0 152
4. वही, गोविन्द मिश्र, पृ0 153
5. पगला बाबा, गोविन्द मिश्र, पृ0 16.

और "प्रतिमोह" कहानी में बम्बईया शैली की झलक देखी जा सकती है – ...अरे साला, तुम लोग इधरीच बंबई की तरफ ही काये कूँ मरता । घर है, पता मालुम? कितना रूपये मारकर लाया ..... अबे बोलने का न और छोकरे? .... "घर से जैसइच कोई आंयगा तेरे को जाना होयंगा, नई तो पुलिस को दे देंगा, क्या ? वो तुझे घर पहुचाएंगा और मारेंगा ।[1]

"किस्मत का बात कि ओइच दिन पारिक बनाने माँ मजूरी लग गया । ..... अपुन साफ बोलता । जिस घर में तू आया न, ओइच को जिन्दगी भर तरंसेंगा । यहाँ अख्खा उम्र ऐसइच बिल में पड़ा रहने का ...... ।"[2]

इस प्रकार मिश्र जी अपनी कहानियों में विविध भाषाओं और विभिन्न शैलियों को अपनाया है ।

ध्वन्यात्मकता :

काव्य अथवा साहित्य में ध्वन्यात्मकता का प्रयोग भी प्रभाव पूर्ण होता है । लेखक अपने कथन में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है जिनसे कोई ध्वनि सी निकलती प्रतीत होती है । श्री मिश्र ने भी अपनी कुछ कहानियों में ध्वन्यात्मक शब्दों का सुन्दर प्रयोग किया है । प्रस्तुत है कतिपय उद्धरण स्थल "हाजिरी" कहानी से –

"ठक ठक ठक खन ।

शायद कुदाली पत्थर से टकराई, क्योंकि जब कोयले के इर्द गिर्द की जमीन से टकराती है, तो "ठक" की आवाज होती है, खन की नहीं । और आगे – "अरे यह ठक ठक खन का संगीत समाप्त" ।[3]

---

1. पगला बाबा (प्रतिमोह) गोविन्द मिश्र, पृ0 32.
2. वही, पृ0 32.
3. रगड़ खाती आत्महत्यायें (हाजरी) पृ0 29–31.

कहानी "ठहराव की ईंट" –

"टिप टिप टिप .... कितनी देर से यही आवाज, जैसे ठहर गयी है ।[1]

अब से कुछ वर्षों पहले भाप इंजिन से रेलगाड़ियाँ चलती थी जो "सीटी" देते समय "कूँ" की आवाज करती थी और छक–छक करके चलती थी । ऐसी ही ध्वनि इन वाक्यों में ध्वनित हो रही है ।

"नये पुराने माँ बाप" –

"यहाँ से छकपक करती रेल दिखाई देती है –"
और फिर "कूँ" करके रेल चल पड़ती है ।"[2]

लघु शंका के लिये प्रयुक्त शब्दावली जो मनोरंजक और हास्यपरक भी है –

"सू सू आयी है .... "

"रूक नहीं सकते थोड़ी देर ?

"जोर से आ गयी है .... "

"वह बच्चा हो गया । बाथरूम खुलते ही[3].....

बिल्ली की आवाज के लिये –

"बिल्ली के रोने की आवाज रह–रह कर उठ पड़ती है .... माँ .... ओ, लगता है जैसे वैसा ही स्वर उसके भी मुंह से निकल रहा है, ... माँ .... ओ...... माँ ...... ।[4] और अन्यत्र कहानी "स्वरलहरी" सिर्फ ध्वनि की कहानी है –

– "उसके पास एक ही शब्द था –– आ –– आ और उसे निकाल भी वह करीब–करीब एक ही स्वर ..... आ .... आ... आ... आ ।[5]

---

1. रगड़ खाती आत्महत्यायें (ठहराव की ईट) पृ0 50.
2. नये पुराने माँ बाप – गोविन्द मिश्र, पृ0 152.
3. खुद के खिलाफ (शापग्रस्त) गोविन्द मिश्र, पृ0 25.
4. खाक इतिहास (संड़ाध) गोविन्द मिश्र, पृ0 52.
5. धाँसू (स्वरलहरी) गोविन्द मिश्र, पृ0 50.

उ द् दे श्य :

मिश्र जी की कहानियाँ सोद्देश्य कही जा सकती है । यद्यपि प्रायः अपने प्रत्येक कहानी संग्रह की भूमिका में उन्होंने अपने कहानी लेखक के विषय और उद्देश्य के बारे में कुछ न कुछ टीका टिप्पणी की है, कुछ प्रकाश डाला है, तथापि कुछ समीक्षकों ने भी इनकी कहानियों की समीक्षा की है इनके कहानी संग्रहों के उद्देश्य की ओर संकेत भी किया है । साहित्यिक रचना का वैसा ही उद्देश्य होता है जैसा कि जीवन प्राप्ति का उद्देश्य । जैसे निरूद्देश्य जीवन का कोई मूल्य नहीं होता, वैसे ही निरूद्देश्य रचना का कोई महत्व या मूल्य नहीं होता । कहानी के प्रमुख तत्वों में यह "उद्देश्य" भी एक प्रधान तत्व स्वीकार किया गया है । डॉ0 माधुरी छेड़ा ने अपने समीक्षात्मक निबन्ध गोविन्द मिश्र की कहानियां में उर्ध्वगामी चेतना" में इस ओर कुछ संकेत दिये हैं । उन्होंने लिखा है – "गोविन्द मिश्र की कथा चेतना प्रारम्भ में तत्कालीन स्थितियों के प्रति अपने समकालीन कथाकारों के समान ही विद्रोह न नकार की मुद्रा और यथा स्थितियों के चित्रण में उद्घाटित होती हैं, पर उनके दो कथा संकलनों – खाक इतिहास" और "पगला बाब" की कहानियाँ तर्क व विचार प्रेरित भूमिकाओं का अतिक्रमण करती हुयी विद्रोह व नकार की सतही भूमिका से ऊपर उठती हुयी व्यक्तित्व का विघटन करने वाली शक्तियों के विरूद्ध मानवीय उर्जा की स्थापना करती हुयी, उर्ध्वगामी चेतना के संवेदनात्मक बिंब में अपना रूपाकार ग्रहण करती है । ये कहानियाँ भारतीय दर्शन व अध्यात्म चेतना के प्रति लेखक के रूझान का धुंधला सा संकेत भी देती है ।"

आगे पुनः लिखा है – "गोविन्द मिश्र साहित्य को सामाजिक परिवर्तन के शास्त्र के रूप में स्वीकार नहीं कर पाते । हालाँकि "खाक इतिहास" संकलन में आयी कहानियों से पूर्व तक की कहानियों का प्रमुख स्वर निश्चित रूप से यथा स्थिति के उद्घाटन का ही रहा है पर अपनी विचार प्रक्रिया में लेखक समकालीन लेखन के प्रति गहरी चिन्ता व्यक्त

करता हुआ दिखाई देता है । "धाँसू" संकलन में अधिकांश कहानियाँ राजनीतिक चेतना के प्रभवान्तर्गत लिखी हैं, पर फिर भी सोचने की प्रक्रिया में साहित्यकार की प्रतिबद्धता के विषय में लेखक का कथन है – "लेखक हमेशा खुद को कष्ट झेलते, पिसते, दुख सहते वर्ग के सा। ही पायेगा । यह उसकी नियत है, जैसे कि सत्य न्याय, ईमानदारी का पक्षधर होने के अलावा कोई और चारा नहीं ।"[1]

मिश्र जी की कुछ कहानी संग्रहों में आक्रोश, विद्रोह और व्यंग्य का स्वर भी फूटा है । "खुद के खिलाफ" और "अपाहिज" कथा संकलनों में विरोध आक्रोश और व्यंग्य प्रकट हुये हैं । अपनी सोच में वे जिस पड़ाव पर हैं, वह उनकी रचना प्रक्रिया में ध्वनित नहीं हो पाया है । ये साहित्य में यथार्थवाद के चित्रण के छठाग्रह का समर्थन नहीं करते । यथार्थ की एकांगी धारणा एवं उसके तहत लेखक को एक ही लकीर पर चलाने की जिद को अस्वीकार करते हुये वे कहते हैं – "सामाजिक विसंगतियों का पर्दाफाश लेखक नहीं करेगा तो कौन करेगा ? पर मुझे यह जोर देकर कहने की जरूरत है कि जिन मूल्यों के लिए हम अतंतः उन विसंगतियों को उभार रहे हैं, उन मूल्यों की ओट न होने दें । गढ़े हुये प्रतिमानों के प्रचार से नये लेखक के लिए ऐसी स्थिति पैदा न करें कि वह अपनी तलाश ही छोड़ बैठे ।"[2]

इसके बाद गोविन्द मिश्र की लेखकीय चिंतन के विषय कुछ और बन गये । समकालीन यथार्थ, सामाजिक व राजनीतिक सत्ता की शक्तियाँ, इन सबसे अपने आपको ऊपर उठाते हुए लेखक इतिहास, धर्म, ईश्वर, व्यक्ति के भीतर उपस्थित शक्तिस्त्रोत, साहित्य और कला के संसार में पहुंच जाता है । साहित्य के सूक्ष्म लक्ष्य को स्वीकार करते हुये उन्होंने कहा है – "हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि साहित्य के कोई ठोस लक्ष्य नहीं हो सकते ...... लेकिन सूक्ष्म लक्ष्य भी कम अहम नहीं है, क्योंकि ये जीवन

---

1. गोविन्द मिश्र – सृजन के आयाम – डॉ0 वांदिवडेकर, पृ0 222.
2. समकालीन कथा साहित्य और आज का आदमी – "अपाहिज" कहानी संग्रह – गोविन्द मिश्र, पृ0 13–14.

करता हुआ दिखाई देता है । "धाँसू" संकलन में अधिकांश कहानियाँ राजनीतिक चेतना के प्रभवान्तर्गत लिखी हैं, पर फिर भी सोचने की प्रक्रिया में साहित्यकार की प्रतिबद्धता के विषय में लेखक का कथन है – "लेखक हमेशा खुद को कष्ट झेलते, पिसते, दुख सहते वर्ग के सा ही पायेगा । यह उसकी नियत है, जैसे कि सत्य न्याय, ईमानदारी का पक्षधर होने के अलावा कोई और चारा नहीं ।"[1]

मिश्र जी की कुछ कहानी संग्रहों में आक्रोश, विद्रोह और व्यंग्य का स्वर भी फूटा है । "खुद के खिलाफ" और "अपाहिज" कथा संकलनों में विरोध आक्रोश और व्यंग्य प्रकट हुये हैं । अपनी सोच में वे जिस पड़ाव पर हैं, वह उनकी रचना प्रक्रिया में ध्वनित नहीं हो पाया है । ये साहित्य में यथार्थवाद के चित्रण के छठाग्रह का समर्थन नहीं करते । यथार्थ की एकांगी धारणा एवं उसके तहत लेखक को एक ही लकीर पर चलाने की जिद को अस्वीकार करते हुये वे कहते हैं – "सामाजिक विसंगतियों का पर्दाफाश लेखक नहीं करेगा तो कौन करेगा ? पर मुझे यह जोर देकर कहने की जरूरत है कि जिन मूल्यों के लिए हम अतंतः उन विसंगतियों को उभार रहे हैं, उन मूल्यों की ओट न होने दें । गढ़े हुये प्रतिमानों के प्रचार से नये लेखक के लिए ऐसी स्थिति पैदा न करें कि वह अपनी तलाश ही छोड़ बैठे ।"[2]

इसके बाद गोविन्द मिश्र की लेखकीय चिंतन के विषय कुछ और बन गये । समकालीन यथार्थ, सामाजिक व राजनीतिक सत्ता की शक्तियाँ, इन सबसे अपने आपको ऊपर उठाते हुए लेखक इतिहास, धर्म, ईश्वर, व्यक्ति के भीतर उपस्थित शक्तिस्त्रोत, साहित्य और कला के संसार में पहुंच जाता है । साहित्य के सूक्ष्म लक्ष्य को स्वीकार करते हुये उन्होंने कहा है – "हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि साहित्य के कोई ठोस लक्ष्य नहीं हो सकते ...... लेकिन सूक्ष्म लक्ष्य भी कम अहम नहीं है, क्योंकि ये जीवन

---

1. गोविन्द मिश्र – सृजन के आयाम – डॉ0 वांदिवडेकर, पृ0 222.
2. समकालीन कथा साहित्य और आज का आदमी – "अपाहिज" कहानी संग्रह – गोविन्द मिश्र, पृ0 13–14.

को विस्तार देते हैं, उसे भौतिक स्तर तक ही सीमित नहीं रह जाने देतें ।"[1]

अपने बदलते दृष्टिकोण की ओर संकेत करते हुये वे कहते हैं – "इधर यथार्थवाद की लकीर पर ही पर्दाफाशी लेखक को तूल दिया जाने लगा है, वह चाहे किसी विचारधारा के तहत हो या न हो, मैंने कुछ ऐसी कहानियाँ लिखी, लेकिन फिर मुझे लगा कि अगर हम यथार्थवाद की लगाम खींचकर नहीं रखते तो लेखन नाराजगी और घृणा की अभिव्यक्ति मात्र होकर रह जायेगा ।[2]

साहित्य का लक्ष्य व्यक्ति को संकट की घड़ी में सहारा देना भी होना चाहिए । वे एक स्थल पर कहते दृष्टिगोचर होते हैं – "मुझे लगता है कि साहित्य का असली स्वर तात्कालिकता का नहीं, शाश्वतता का है और तुरंत समाज परिवर्तन के प्रलोभन में पड़कर साहित्य को अपनी यह विशिष्टता नहीं खोनी चाहिए ।"[3]

गोविन्द मिश्र लेखक की नैतिकता को उस ऋषि परम्परा, जहाँ वे राजाओंको भी समझाते थे, तक ले जाना चाहते हैं । इस स्थिति तक पहुंच जाने पर एक ओर उसकी नैतिकता रचनाओं में शक्ति बनकर उतरती है, तो दूसरी ओर उसका जीवन समाज व प्रकृति की सम्पत्ति बन जाता है । मिश्र जी अपने लेखन को यातनाओं के चित्रण तक सीमित रखना न चाहकर एक संभावनापूर्ण दिशाओं की ओर ले जाना चाहते हैं, क्योंकि इनके चिंतन का एक महत्वपूर्ण मुद्दा यातना सम्बन्धी विचारों को ले कर भी है । उन्होंने लिखा भी है "मेरा अपना लेखन भी "मैं" से शुरू हुआ, समाज तक उठा ..... और यहाँ भी इन दिनों की तकलीफों का अफसाना ..... कि कुछ समय पहले मुझे लगा क जो "तोड़ता" है, उसकी बजाय उसकी बात क्यों नहीं, जो "जोड़ता" है । मुझे बाहर के व्यक्ति से, समाज से प्रकृति से ..... और प्रेम, सौन्दर्या, आस्था जैसी चीजें मुझे फिर से मिल गयी । वे मुझे चिरन्तन महत्व की लगी । वहाँ पहुंचकर मुझे लगा कि लिखना तो दरअसल अब शुरू हुआ है ।"[4]

---

1. लेखक से समाज परिवर्तन – "मुझे घर ले चलो" (कहानी संग्रह)–गोविन्द मिश्र, पृ0 187.
2. वही, पृ0 187.
3. वही, पृ0 190
4. वही, पृ0 190.

इनके अनुसार मानव जीवन के साथ कष्ट के जुड़े होने का सिलसिला अनवरत है । इनके अधिकांश कहानी संग्रहों में जीवन के अन्धेरे पक्ष को मनुष्य के हताशा एवं विवशताओं को समकालीन राजनीति के भ्रष्ट तंत्र व उसके प्रति व्यक्ति के आक्रोश को, घृणा को अभिव्यक्त किया गया है । भौतिक सम्पन्नता की निरर्थकता को अनुभव करते हुये इनकी संवेदना जीवन के उच्चतम मूल्यों के प्रति आस्था, प्रकृति के साथ मनुष्य के प्रेम व आर्कषण की अभिव्यक्ति एवं संवाद, रिश्तों को अतिक्रमण करते हुये रिश्तों के चोलों के पीछे छिपे मनुष्य के चेहरे को प्रस्तुति, स्वेच्छा से वरण की हुयी लघुता में व्यक्ति के बड़प्पन, यातनाओं के वरण की स्वीकृति एवं प्रभु के प्रति संबोधन में अभिव्यक्त हुयी है । "एक बूँद उलझी" के इन्स्पेक्टर के शब्दों में अर्थवाद की निरर्थकता देखिये – .... "हाँ कुछ छिन गया, जो बचा, वह मना हो गया, तुम अच्छे रहे यार, ऐसे ही सीधे साधे रहना, ये कूदें–ऊँची, लम्बी .. कुछ नहीं मिलता है ।"[1]

सभ्यता की लम्बी यात्रा में, लगता है, मनुष्य के सभी मुख्य अंग घिस चुके हैं । धर्म, राष्ट्र, समाज इनसे सम्बन्धित संकल्पनाएं सारे मिथ अपनी गरिमा और वजन खो चुके हैं । इस यात्रा में व्यक्ति आज उस मोड़ पर खड़ा है जहाँ अपने "होने" का सत्य भी उसे नहीं भर पाता है । अपने अपंग व्यक्तित्व के लिए वह उपस्थित है । अपने समाज परिवार के समक्ष इस कमी को ऐश्वर्य के साधनों से भरना चाहता है, किन्तु जिन्दगी को जीत पाने के उसके सभी शस्त्र मोंथरे सिद्ध हुये हैं ।

गोविन्द मिश्र के प्रत्येक कहानी संग्रह और उसकी कहानी का अपना कोई न कोई उद्देश्य है । यह उद्देश्य को इस प्रकार व्यक्त एवं प्रस्तुत किया जा सकता है ।

---

1. "एक बूँद उलझी" (कहानी) – पगला बाबा (कहानी संग्रह) – गोविन्द मिश्र, पृ0 9.

"रगड़ खाती आत्महत्याएँ" :

कहानी संग्रह की कहानियाँ लेखक के जीवन के शुरू की कहानियाँ हैं । ये कहानियाँ कुछ भावुकतावश लिखी गयी हैं इसीलिए इनमें मानवीय पीड़ा सन्निहित है । लेखक के ही शब्दों में – "मेरे लेखकीय जीवन के शुरू के हिस्से की कहानियाँ हैं ये ।

* * * *

भावुकता का वह बोझ जो तब शायद थामे न थमता, पागल के प्रलाप की तरह वह बहा फिरता था, न निकलता तो पता नहीं क्या होता । तेज जुख़ाम की तरह निकली थी वह पीड़ा .... इधर उधर कहीं भी ।"[1]

और आगे भी – "वह रफ्तार कितनी तेज थी – पैशन बल–बल करके झरती चली जाती, अल्हछता क्राफ्ट की ऐसी तैसी करती हुयी कुछ भी लिखती चली जाती ... हर पात्र और स्थितियों में भावनाएँ ही भावनाएँ .... नंगी भावनाएँ, आदमी के दहाड़ मार कर रोने जैसी ।"[2]

इस कथन से ज्ञात होता है कि लेखक ने अपने चारों ओर के वातावरण में जो व्यथा, वेदना, पीड़ा, कराह, निराशा, उपेक्षा और पतन देखा उसे ही इस संग्रह की कहानियों में प्रस्तुत करना चाहा है । सुख के बाद दुख की परिणति कैसी विचित्र होती हे, इन कहानियों में है । किस प्रकार मनुष्य उपेक्षा और नशे के शिकार होकर जीवन को नष्ट कर देते हैं, इन कहानियों में है । 'मजबूरियों क्या–क्या फर्क ला देती है, कि इन्सान कुत्ता तक बन जाता हे और खंडहरों में प्यासा रहकर, कटी छँटी अगड़ाईयाँ लेता हुआ रगड़ खा–खा कर आत्महत्या तक कर लेता है । पता नहीं किस साजिश में हाजिर होकर जंग खाता हुआ रोता रहता और ख्वाब देखता रहता है, किन्तु उसे किसी माध्यम से सुख नहीं मिल पाता ।

---

1. रगड़ खाती आत्महत्याए – भूमि से – गो0मि0 पृ0 7.
2. वही, पृ0 8.

2. **नये पुराने माँ–बाप :**

स्थितियों का चित्रण मात्र वर्णन भी हो सकता है और विश्लेषण भी । गोविन्द मिश्र का प्रयत्न रहा है कि स्थितियों को तष्टस्थता पूर्वक उजागर किया जाये । प्रस्तुत कहानी संग्रह की भूमिका में मिश्र जी ने अपने उद्‌देश्य की ओर संकेत किया है – "अच्छा ही रहा कि मैं इस सबसे गुजर कर अपने और निहायत अपने – ढंग से यथार्थ को पकड़ने और उतारने की तरफ मुड़ गया । अब मुझे लगता है कि यथार्थ और सौन्दर्य साथ–साथ रह सकते हैं । आज साहित्यकार का सरोकार यथार्थ हुये वह सौन्दर्य भी नहीं जाना चाहिए तो जीवन में है साहित्य अगर जीवन का सामना कराये तो जीवन शक्ति भी तो दे ..... ।[1]

इस कथन से सारॉश निकलता है कि "नये पुराने माँ–बाप" कहानी संग्रह का उद्‌देश्य आज के संसार, समाज और मनुष्य को यथार्थ से परिचित कराना रहा है ।

3. **अन्तःपुर :**

कहानी संग्रह की मानसिकता युग से जुड़ी हुयी है । मनः स्थिति का सफल चित्रण तो लगभग सभी कहानियों में हुआ है, फिर भी शुद्ध सार्थक चित्रण की दृष्टि से "अपरिचय', "पड़ाव", "खंडित", और "झपट्टा" विशेष उल्लेखनीय हैं । "कचकौंध", "अपाहिज", और "अन्तःपुर" कहानियाँ क्रमशः ग्रामीण, सामाजिक और राजनीतिक वस्तुस्थिति को उजागर करती हे । "गलत नम्बर" और अपने ढंग की अनूठी कहानी है, हल्की, फुल्की मनोरंजक और प्रभावी बन पड़ी है ।

---

1. नये पुराने माँ–बाप – भूमिका – गो0मि0, पृ0

4. **घाँसू :**

कहानी संग्रह की अधिकांश कहानियाँ लेखन में एक नये दौर की घोतक हैं । अधिकतर कहानियों में मानवीय संबंधों से अधिक व्यक्ति और स्थितियों के सम्बन्ध उभरकर आते हैं, जो विशेषक बेईमानी और भ्रष्टाचार एवं इनसे त्रस्त आम आदमी की विवशता उभारते हैं । एक समीक्षक श्री सुधीरचन्द्र ने इस संग्रह की कहानियाँ को "मानवीय संम्बन्धों के अवमूल्यन की कहानियाँ" कहा है । इस संकलन की अधिकांश कहानियाँ राजनीतिक चेतना के प्रभाव के अन्तर्गत लिखी गयी है । वे कहते हैं – "थोड़ी सही यह हो सकता है कि यह जमाना वह रहा जब राजनीति दूसरी सभी चीजों पर रौंदती हुयी चढ़ बैठी थी ।" [1]

5. **"खुद के खिलाफ" :**

कहानी – संग्रह की कहानियाँ जीवन मूल्यों के टूटने के दर्द से सराबोर है और ज्यादातर पीढ़ियों के द्वंद की कहानियाँ हैं । वर्तमान में अतीत के, आधुनिक जीवन में फैशन और कृत्रिम आधुनिकता के हस्तक्षेप की कहानियाँ हैं, ये परिवार, पति–पत्नी के परस्पर शोषण और कही–कहीं व्यक्ति के रागात्मक अस्वीकारों की कहानियाँ हैं । इन कहानियों में घृष्टता या कुंठा को विध्यात्मक सिथति प्राप्त नहीं हैं, यहाँ इनका प्रतिरोध है, प्रतिकार है। अतीत का हस्तक्षेप है । कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर प्रभावित करती हुयी अपने समय और परिवेश पर जागरूक लेखकीय – प्रतिक्रियाएं हैं ।

6. **खाक इतिहास :**

कहानी – संकलन के उद्‌देश्य पर टिप्पणी करते हुये श्री चितरंजन मिश्र ने लिखा है – "गोविन्द मिश्र का रचना–संसार चेतन माननीय अस्तित्व के भीतर व्याप्त आस्था

---

1. घाँसू – गोविन्द मिश्र – पृष्ठ 257
2. वही – पृ. 6

में संचालित लेखक का रचना संसार है, जो किसी भी तथ्य को किसी भी सत्य को अन्तिम मानकर नहीं चलता । बीसवीं सदी की मनुष्यता के साथ जो खतरे अपरिहार्य रूप से लगे हुये है, उन खतरों और उनसे जुड़े हुये ज्यादा से ज्यादा प्रश्न पाठकों के सामने उपस्थित कर देने में अपने पूर्वाग्रहों को बाधा न बनने देने की दुलर्भ तटस्थता गोविन्द मिश्र के कहानी संग्रह "खाक इतिहास" की कहानियों में दिखायी देता है । लेखक की वैचारिक क्षमता और सर्वथा भिन्न अर्थ में उसकी प्रतिबद्धता ने सोच के नये आयामों को उद्घाटित किया है ।"[1]

इस कथन से यह अर्थ ध्वनित होता है कि इन सभी कहानियों की एक अर्न्तधारा है, वह है महानगरीय जीवन से ऊचा व्यक्ति और "खाक बनते इतिहास का ममत्व–बोध । प्रायः प्रत्येक कहानी में मिश्र जी इस अभिव्यक्ति का अवसर निकाल लेते हैं ।

7. **पगला बाबा** :

डॉ0 चन्द्रकांत वांदिवडेकर ने इस कहानी संग्रह के विषय में लिखा है – "अँधेरे की सुरंग में आलोक का पहली किरणों की खोज करने वाली, मानवीय गरिमा और गरमाहट से अभिभूत कराने वाली और परंपरा की चैतन्यमय ऊर्जा की, ये कहानियाँ हिन्दी में महत्वपूर्ण मानी जाती चाहिए ।"[2]

तथापि "पगला बाबा" कहानी संग्रह समग्रतः आधुनिक समाज पर अपने आप में पूरे समाज पर व्यंग्य है । व्यंग्य का तीखापन पूरी व्यवस्था के प्रति निन्दा–भावना को संवेद्य बनाता है । इसमें वैयक्तिक जीवन का सार है क्योंकि वे सहृद्यता में मानवीय आदर्श

---

1. "खाक इतिहास" मानवीय आस्था का संसार – चितरंजन मिश्र, गोविन्द मिश्र, सृजन के आयाम, पृ0 269.
2. गोविन्द मिश्र – सृजन के आयाम, पृ0 ~~269~~. 284

प्रस्तुत करती है । प्रायः प्रत्येक कहानी में किसी न किसी मूल्यात्मक आदर्श की ओर संकेत किया गया है । उन कहानियों का प्रभाव शिल्पगत भले ही हो, किन्तु कथ्य की रोशनी का अधिक है । यह रोशनी घृणा, आक्रोश, क्रोध, निराशा, उदासीनता, उपेक्षा, ईर्ष्या, लोभादि के गहन अन्धकार में प्रेम, स्नेह, त्याग, दया करूणा के रूप में प्रस्फुटित होती है । मूल्यों के प्रति मंद पड़ती आस्था इस रोशनी से ही पुष्ट होने लगती है ।

8. **आसमान कितना नीला :**

इस कहानी संग्रह से गोविन्द मिश्र का कहानीकार फिर से एक नई यात्रा पर निकल पड़ा है । इन कहानियों में जो सघन भावनात्मकता मिलती है, उसे सुधी समीक्षकोंने संवेदनात्मक ताप कहा है, यह ताप कहानी के अन्त तक पहुंचते-पहुंचते एक चीख में फटता है और एक प्रश्न के रूप में प्रकट हो जाता है । कितने ही निराश्रितों को आश्रय देने वाला यह अन्तन्त आसमान कितना नीला है । सब कुछ भला-बुरा, सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय इसके तले व्याप्त हैं, विस्तृत है । इस कहानी संग्रह का उद्देश्य इसी यथार्थता को सौन्दर्य के साथ व्यक्त करना है ।

इस प्रकार सारांश रूप में कहा जा सकता है कि गोविन्द मिश्र की कहानी-यात्रा लम्बी है, जिसमें उन्होंने गहन अनुभव किये हैं सबक सीखें है, विचित्र दृश्य देखे हैं, यथार्थता पर दृष्टिपात किया है, अनेक "त्रासदी देखी और झेली हैं, संवेदना व्यक्त की है, मानवीय मूल्यों की गिरावट महसूस की है, फिर भी उनके प्रति आस्था जागी है और उन्हीं मूल्यों की पुनः स्थापना हेतु पूर्ण प्रयास किया है ।

नि ष्क र्ष :

जो कहानीकार 26-27 वर्षों से अनवरत लिखते और छपते चले आ रहे हैं उन पर यदि दृष्टिपात किया जाये । तो उनमें सर्वश्री काशीनाथ सिंह, गिरिराज किशोर,

रमेश उपाध्याय, गोविन्द मिश्र और रवीन्द्र कालिया एक पंक्ति में दृष्टि आयेंगे । इनमें श्री मिश्र जीकी अधिकांश कहानियाँ किसी सैद्धान्तिक विचार की अपेक्षा अनुभव और संवेदना की धुरी पर टिकी हुई हैं ।

गोविन्द मिश्र की कहानियों का कथानक आधुनिक समाज की समकालीन परिस्थितियों, राजनीतिक प्रेरणाओं, मानवीय संवेदना और कुंठाओं, आर्थिक विपन्नता एवं त्रासदी से ग्रस्त मनुष्य के नैतिक पतन पर आधारित है तथापि कुछ चरित्र अच्छे भी बन पड़े हैं । इस प्रकार चारित्रिक दृष्टि से पात्रों को तीन श्रेणियों – उत्तम, मध्यम और अधम में रखा गया है और उनके चरित्रों की विवेचना की गयी है ।

अधिकांश कहानियाँ समस्या मूलक हैं जिनमें मानव जीवन की विभिन्न वेदनाओं को उभारा गया है । जीवन जीने की दुरंत समस्या आज समाज में घर बनाये हुए हैं, क्योंकि आज सर्वत्र समाज में स्वार्थपरता, छल–कपट, भ्रष्टाचार, असत्यपरता, रिश्वतखोरी, राजनीतिक स्वार्थान्धिता जैसी प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं ।

भाषा शैली की दृष्टि से गोविन्द मिश्र ने सरल सुबोध, आंचलिक, मिश्रित, मुहावरेदार भाषा और भावात्मक वर्णनात्मक सुक्तिपरक, और आंचलिक शैलियों का प्रयोग किया है ।

उद्‌देश्य की दृष्टि से कहा जा सकता है – "अनुभूति जब ऊंचे पर्वत से झरते प्रपात का – सा रूप लेती और हमें स्वंय में समोने लगती है, तब हम आत्मविह्वलता के उस महा ज्वर की चपेट में होते हैं, जहाँ सामान्य ज्यादा ठहर नहीं पाता और संत वापस नहीं लौटना चाहता । भावाकुलता से भाव समाधि तक की यह सर्राण सबसे पार नहीं होती । काव्य का उत्स संवेदना की इसी महासरणि में है जो कि जितना उतरिये उतनी ही अपार होती जाती है * * * * जहाँ तक अनुभूति का प्रवाह, वहाँ तक भाषा की

गति हो, तभी लेखक अनुभव के उस मुकाम तक पहुंचता है जहाँ भाषा को अनुभव से अलग करके देखना आदमी के शरीर से त्वचा को पृथक करना हो जाये ।"[1]

डॉ0 माधुरी छेड़ा ने लिखा है – "ऐसा लगता है कि गोविन्द मिश्र का लक्ष्य मनुष्य की उस संवेदना को पकड़ना और रेखांकित करना है जो प्रकृति ने मनुष्य को दी थी, पर जिसे आज के आदमी ने धुंधला डाला है ।"[2]

गोविन्द मिश्र की ये कहानियाँ भारतीय मानस बुनावट के उत्स पर पुनर्विचार के लिए प्रेरित करती हैं ।

! !
! ! !
! !

---

1. कहानी लिखने का सिद्धान्त और गोविन्द मिश्र की कहानियाँ – (शैलेष मटियानी) (गोविन्द मिश्र – सृजन के आयाम – पृ0 219–220)
2. गोविन्द मिश्र – सृजन के आयाम – पृ 229